CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri.

[illegible]
[illegible]

अरबी शिक्षा शास्त्रम्

विश्वाचार्योपनामा जगदीशाचार्यः

सम्वत् २०३१ सन् १९७४ ई०

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

बालार्क-वेद-मन्दिरस्य चतुर्थं पुष्पम्

बालार्कसंस्कृतानुसंधानाश्रमः (महसी) बहराइच

अरबी शिक्षा शास्त्रम्

सांख्य-योग-व्याकरणायुर्वेदाचार्येण
चित्राचार्य्योपनाम्ना जगदीशाचार्य्येण प्रणीतम्

प्रकाशिका
श्रीमती गायत्रीदेवी
अध्यक्षा
बालार्कसंस्कृतानुसंधानाश्रमः
बालार्क-वेद-मन्दिरम् (महसी) बहराइच, उ० प्र० भारत

सर्वेऽधिकाराः प्रकाशिकाधीनाः

प्रथमवारे १००० सम्वत् मास
मूल्यम् ५) सजि० ६) सन् माह

मुद्रक—
वाणी प्रेस,
चौपटियाँ रोड, लखनऊ-३

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

चित्राचार्योपनाम्ना जगदीशाचार्येण प्रणीतानि शास्त्राणि

बालार्क-वेद-मन्दिर-प्रकाशनानि

१. शिक्षा शास्त्रम्-नवीनान्वेषणयुतम्	४)	सजिल्द	५)
२. परमाणु दर्शनम्-(गायत्री भाष्यालंकृतम्)	५)	,,	६)
३. षट्कर्म शास्त्रम्-(आयुर्वेद परीक्षोपयोगि)	८)	,,	९)
४. अरबी शिक्षा शास्त्रम् परमगम्भीरान्वेषणपूर्णम्	५)	,,	६)
५. परमाणु दर्शनम्-सन्ध्यामनोरमानामक सूत्रार्थ भाष्यार्थयुक्त मूलसूत्रात्मक हिन्दी संस्करणम्	५)	,,	६)
६. पाथेयम्-सर्वेषां विशेषेण पर्यटकाणां कृते परमोपयोगि, परममधुरं सरसं धार्मिकं ऐतिहासिकं भौगोलिकं वाराणसीतो द्वारिकापर्यन्तं गमनागमन-मार्गागतप्रदेश-नगरवननदी-तीर्थ नरनारीस्वभाव-प्रथादि वर्णनयुतं श्रृंगारप्रधानं सहृदयानां रसिक-हृदयानां च परममनोविनोदकं मेघदूतसदृशं सरल-संस्कृतगीतिकाव्यम् हिन्दी-टीकोपेतम् ।	५)	,,	६)
७. चर्मच्छेद संस्कार: (खतना) (हिन्दी) क्रान्तिकारी गद्यप्रबन्ध:	१)	,,	
८. परमयोगदर्शन (हिन्दी) काव्य	१॥)	,,	१॥)
९. सन्मार्गदर्शनम् (सभाष्यहिन्दीटीका युक्तम्)	३)	,,	४)
१०. विश्वदर्शन (हिन्दी)	३)	,,	४)
११. सिद्धान्तरत्नदर्शनम् (सभाष्य हिन्दी टीकायुक्तम्	३)	,,	४)
१२. अरबीशिक्षा (इल्मतजवीद) समालोचन (हिन्दी-उर्दू)	३)	,,	४)

पुस्तक-प्राप्तिस्थान

श्रीमती गायत्री देवी

१— अध्यक्षा – बालार्क संस्कृतानुसन्धानाश्रम:
बालार्क वेद मन्दिरं महसी बाज़ार
बहराइच (उ० प्र०) भारत

२— श्रीरामलाल कपूर ट्रस्ट, सोनीपत, दिल्ली, अमृतसर, वाराणसी ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विषयानुक्रमणिका

क्र० सं०	अध्यायनामानि	पृष्ठ संख्या
१	अथारबी सामान्यविज्ञानीयः प्रथमोऽध्यायः	९
२	अथ लिपि विज्ञानीयो द्वितीयोऽध्यायः	११
३	अथारबी वर्णसमाम्नाय विज्ञानीयस्तृतीयोऽध्यायः	११
४	अथारबी-मख़ारिजविज्ञानीयश्चतुर्थोऽध्यायः	१४
५	अथ सिफ़ातसामन्य विज्ञानीयः पञ्चमोऽध्यायः	१५
६	,, सिफ़ातलाज़मिया-ज़ातिया-मुमय्यज़ामुक़व्विमा विज्ञानीयः षष्ठोऽध्यायः	१६
७	,, सिफ़ातमुहस्सिना-मुजीना-मुहलिया-आजिया- विज्ञानीयः सप्तमोऽध्यायः	१९
८	,, ध्वनिशक्ति (क़ूवत) विज्ञानीयोऽष्टमोऽध्यायः	२१
९	,, अक्षरसमाम्नायवर्णक्रमालोचनाविज्ञानीयो नवमोऽध्यायः	
१०	,, मख़रजविमर्शविज्ञानीयो दशमोऽध्यायः	
११	,, मिथ्यावर्णकल्पना विज्ञानीय एकादशोऽध्यायः	
१२	,, अवशिष्टविज्ञानीयो द्वादशोऽध्यायः	
१३	,, अरबीवर्णमालाशिक्षांशप्रत्याख्यान विज्ञानीयस्त्रयोदशोऽध्यायः	
१४	,, सिफ़ातप्रत्याख्यान विज्ञानीयश्चतुर्दशोऽध्यायः	
१५	,, अरबीवर्णलिप्युच्चारणप्रत्याख्यानक्रान्ति विज्ञानीयो पञ्चदशोऽध्यायः	
१६	,, अरबी शिक्षाविदज्ञान विज्ञानीयःषोडशोऽध्यायः	
१७	,, अरबीनामकरणरहस्यविज्ञानीयो नामा सप्तदशोऽध्यायः	
१८	,, अरबमिथ्याधारणानिराकरणविज्ञानीयो नामा अष्टदशोऽध्यायः	
१९	,, अरबी विशेषताविज्ञानीयो नामा एकोनविंशोऽध्यायः	
२०	,, अखिल भूमण्डले कलाम्पाक क़ुरानशरीफ़स्याशुद्धपाठो भवतीति समुद्घोष विज्ञानीयो विंशोऽध्यायः	
२१	,, अरबी इल्मतजवीद (शिक्षा) गभीरत्रुटि-विज्ञानीय एकविंशोऽध्यायः	
२२	,, अरबी इल्म-तजवीदादिसमीक्षा विज्ञानीयो द्वाविंशोऽध्यायः	

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्राक्कथनम्

प्रायो दृश्यते यत्संस्कृतविदोऽवगच्छन्ति यत् संस्कृते एव शिक्षाशास्त्रं वर्तते नान्यभाषासु । अतएव तेषां कृते तुलनात्मकाध्ययनार्थमेव मया परिश्रमेण, अरबी शिक्षाशास्त्रमधीत्य संस्कृत-माध्यमेनात्र प्रकाशितमरबी शिक्षाशास्त्रम् । अरबी विद्वान्सोऽप्यवगच्छन्ति यदरबीभाषायामेव शिक्षाशास्त्रम् वर्तते, तथा चारबी-विद्वान्स एव विद्यामेतां जानन्ति सम्यक् । किन्तु तच्छास्त्रमधीत्य विज्ञातं मया यत्तेऽग्रगण्यंमन्या महति तमसि निमज्जिताः बह्वस्त्रुटयस्तत्र सन्ति । तेषां चात्रारबी-शिक्षाविदां चक्षुरुन्मीलनायैव मयाऽत्र ग्रन्थे ताः प्रदर्शिताः येन ते स्वशास्त्रे परिवर्तन कुर्वन्तु, न तु परच्छिद्रान्वेषणं मे कार्यम् । उक्तञ्च स्वाध्यायं कुर्वन्तं मां प्रति तदाचार्येण मौलवीनाम्ना साश्चर्य (किं संस्कृतेऽपि विद्यैषा वर्तते?) मयोक्तं न केवलं वर्तते, अपितु वेदाङ्गेषु प्रथमाङ्गमिति कृत्वा सर्वप्राचीना विद्यैषेति । तदोक्तं तेन "सत्यमेव श्रुतमपि यत्संस्कृतं मातास्ति अरबी भाषायाः" । अतएव सौहार्दान्मया तन्न्यूनतापाकरणायैव प्रदर्शितास्त्रुटयः । सन्ति च बह्व्यो विशेषता अपि तास्तु संस्कृतवाग्विलासिभिरापि ज्ञेया एव । नतु कूपमण्डूकवदेव स्थात व्यभिति । अरबीभाषाया अपि त्रुटयो निर्दिष्टाः किन्तु तत्र न मे कष्टम् भाषाया अशाश्वतत्वात् । किन्तु शाश्वतानां शब्दपरमाणूनां वर्णानां तच्शाश्वतीनां ध्वनीनाञ्च विषये मतभेदेन न भवितव्यम् । भाषासु तु वैचित्र्यं भवितुंशक्यते किन्तु वर्णेषु नानात्वमवैज्ञानिकम् । यथा सतिज़ेकारे ज़्वाद ज़ाल ज़ो इति कल्पिताः । तथैव तत्तदुच्चारणभेदोऽपि अवैज्ञानिक एव । देश भेदात्कालभेदात्तु उच्चारणभेदो भवत्येव किन्तु वर्णभेदो न भवति । यद्यपि शब्दानामपि परमाणुत्वाद्वर्णा अपि असंख्या एव । मानवेषुतु न शताधिकवर्णा उपलब्धा भूमण्डले तथापि समुपलब्धेषू वर्णेषु पूर्वोक्तप्रकारेण भेदेन न भवितव्यम् अनुबन्धभेदाद्वर्णभेदस्त्वस्त्येवेति मन्तुं मानयितुं नाहं प्रस्तुतोऽस्मि यथा क को के इत्येतेषु एक एव ककारो न भिन्नस्तथैव तो वा ते जे वा ज़ो व ज़ाल वा ज़्वाद एक एव सीन व स्वाद व से एक एव । प्रदुष्टोच्चारणत्वाद्देशकालवशाद्भेदो लक्ष्यते मन्यते क्रियते वा तदेतत्सर्वमेवासाम्प्रतमेवेतिशम् ।

इति

विद्वच्चरणरेणुः 'जगदीशः'
भूतपूर्व प्रधानाचार्यः, सार्वभौम संस्कृत महाविद्यालयः झांसी
सम्प्रति— चिकित्साधिकारी प्रभारी प्राथमिक स्वास्थ्य केन्द्र सिद्धौर (बाराबंकी)

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

प्रकाशिका
श्रीमती गायत्रीदेवी —अध्यक्षा
संस्कृतानुसन्धानाश्रमः
बालार्क वेद मन्दिरम् (महसी) बहराइच

इदमरबीशिक्षाशास्त्रमपि प्रकाश्य अहं किञ्चिदेव कृतकृत्याऽस्मि–गायत्रीदेवी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

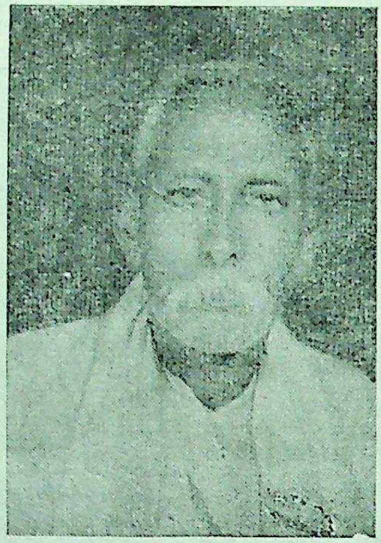

इदं शास्त्रं मया दृष्टमपूर्वार्थप्रदर्शकम्। वैज्ञानिकं क्रमं प्रमाणीकृत्य सम्प्रदायोऽत्र खण्डितः। बहवस्तर्कभेदाश्च स्वोपज्ञाः सम्प्रदर्शिताः। अन्धानुकरणत्यागे स्वोत्साहश्चारुदर्शितः। तदिदं परिपश्यन्तु नीरक्षीरविवेकिनो हंसा इव बुधोत्तंसा युक्तायुक्तविभागशः।

२१-१०-६६ रघुनाथशर्मा

छाता, बलिया भूतपूर्व वेदान्तविभागाध्यक्षः सं०वि०वि०वाराणसी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इज़हारे राय जनाब मौलवी मुहम्मद हनीफ़ साहब फ़ैज़ाबादी

मुकर्रम मुअज़्ज़म जनाब डाक्टर जगदीशप्रसाद साहब ने एक ख़ुश्क मज़मून फ़ने तजवीद पर बहुत मेहनत और अर्क़रेज़ी के बाद कुछ मवाद जमा फ़र्मा कर अरबी फ़नतजवीद पर इज़हारे राय फ़रमाया है। आपका माख़ज़ अरबी तजवीद (फ़वायद मक्किया) और जमालुल् क़ुरान है जो उर्दू ज़बान में इब्तिदाई छोटी-छोटी किताबें हैं। क़दरे मैं भी उन ज़हमतों से वाक़िफ़ हूँ जो आपको तालीफ़ के वक़्त पेश आती रहीं। कभी-कभी मुझसे भी इस्तफ़सारात करते रहे। मैं भला क्या आपकी तशफ़्फ़ी करता जबकि मैं ख़ुद इस फ़न से बेबहरा और नाआश्ना महेज़ हूँ।

डाक्टर साहब मौसूफ़ संस्कृत के फ़ाज़िल और ग्रेजुएट भी हैं। इन्शा अल्लाह हिन्दी और उर्दू और संस्कृत ज़बान के शायर भी हैं। नेज़ आपने संस्कृत और अरबी इल्म तजवीद में गहरी तहक़ीक़ात फ़रमाई और क़दीम क़वायद तजवीद पर तनक़ीदें करके उलमाए संस्कृत और अरबी दोनों को बाख़बर किया है। और जदीद इस्लाहात फ़रमाकर क़द्रदान हज़रात के सामने पेश किया है। जिस पर उलमाए माहरीन फ़न तजवीद संस्कृत ने आपकी ख़ुशफ़हमी को बहुत सराहा।

आप इस वक़्त ब सिलसिले मुलाज़मत गवर्नमेन्ट अस्पताल प्रायमरी हेल्थ सेन्टर सिद्धौर ज़िला बाराबंकी के इन्चार्ज हैं। वतन ख़ास आपका ज़िला बहराइच क़स्बा महसी बाज़ार ख़ास है। बहुत ही इल्मदोस्त हैं। ज़बान अरबी सीखने की ख़्वाहिश दिल में रखते हैं। फ़ी ज़माना ऐसे गुमशुदाफ़न में इमहनाक़ और शबोरोज़ मशग़ूलियत आप ही का हिस्सा है। जैलानतबा और जिद्दततराज़ी तो मज़मूने किताब से ज़ाहिर है। अल्बत्ता आप अपने ख़यालात और राय पर यक़ीनी अक़ीदा रखते हैं। हाँ दयानत और वेतअस्सुबी भी आपका फितरीं जज़्बा और अमली सनीदा है। ज़बान अरबी के उसूल से और क़वायद से आप बहुत मुत्तस्सिर हैं। आप का ख़याल है कि अरबी ज़बान दुनिया की तमाम जबानों पर आला मर्तबा रखती है लेकिन संस्कृत के बाद; (मेरे ख़याल में यह बात अरबी ज़बान से पूरी वाक़िफ़ीयत न होने की वजह से है)। यह चीज़ नहीं है कि मजनू लैला को अपनी ही निगाह से देखना चाहता है बल्कि आपने अपनी ख़ास सिफ़्त मज़हबी क़ौमी लसानी तअस्सुबात से न्यूट्रल होकर आलिमाना तब्सरह और तहक़ीक़ या तनक़ीद फ़रमायी है। मुजौविदीन लसान अरबिया हरगिज़ यह ख़याल न फ़रमाएँ कि ख़ुदा नख़्वास्ता इन तन्क़ीदात से अमानत मज़हब या एहतक़ार उलमा मक़सूद है। लसानी तन्क़ीदात में हर अहले इल्म मुख़्तार होता है कि अहले लसान के सामने लसानी कमज़ोरियाँ रखकर इस्लाहात अहले ज़बान से हासिल करे।

किताब पढ़नेवाले को धोखा हो सकता है कि अरबी तजवीद पर तनक़ीद करने में मुसन्निफ़ किताब हद से दरगुज़रे, लबोलहज़ा सख़्त, तर्ज़ो तकल्लुम में शिद्दत। इसकी वजह ख़ास यह है कि आपने जो मालूमात उलमाए फ़न तजवीद अरबिया से बतौर तहक़ीक़ हासिल करना चाहा, अपने को ग़ालिबन नाकाम और महरूम पाया, इस ग़ुस्से ने आपको तैश में डाल दिया। दारुल् उलूम देवबन्द, मज़ाहिरुल् उलूम सहारनपुर,

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

नदवतुल् उलमा लखनऊ, जियाउल उलूम जौनपुर वग़ैरह से जो बज़रिये डाक इस्तफ़सारात किये कहीं से कुछ जवाबात मिले और कहीं से बिल्कुल महरूमी रही। जहाँ से एक बार जवाब मिले भी उन पर दुबारा जो सवालात आपने पेश किये उनके जवाबात दोबारह वहाँ से भी नहीं मिले। मजबूर होकर इन्हीं मवाद पर मुनहसिर रहे जो फ़राहम थे। और अपने फ़हम व दानिश पर एतमाद करके काम में मशग़ूल हुए जैसा कि शिकायाते मज़्कूरह रिसालए हाज़ा से ज़ाहिर है। फ़ने तजवीद अरबिया में एक अज़ीम किताब बज़बान संस्कृत आप ने तालीफ़ फ़रमाई इसका मुख़्तसर खुलासा करके बज़बान हिन्दी और उर्दू में भी उलमाए उलूम अर्बिया की ख़िदमत में पेश फ़रमाया ताकि उलमाए मुकराम हज़रात ख़ास तवज्जुह फ़रमा कर मवल्लिफ़ को तसहीह इग़लात से ममनून फ़रमाएँ और मज़ीद इस्लाहात का मौक़ा रहमत फ़रमाएँ। अगर बेतवज्जही से काम लिया गया तो मवल्लिफ़ नेज़ दूसरे फ़न तजवीद से दिलचस्पी रखनेवाले हज़रत तनक़ीदात को बिल्कुल सही और अटल तसव्वर करके गलतफ़हमी में मुब्तिला होंगे, उसकी ज़ुम्मेदारी अहले इल्म लसाने अरबिया पर होगी। फ़क़त—

बन्दये नाचीज़ मुहम्मद हनीफ़ साकिन बरही आदिलपुर (टाँडा) फ़ैज़ाबाद।

समर्पणम्

सम्प्राप्तानि प्रखरमतिना येन शब्दार्थसिन्धोः
ज्ञानज्योतींष्यमरयशसा दिव्यरत्नानि तानि
ग्रन्थस्तस्मै परमविदुषे चापि यौधिष्ठिराय
कृत्वास्माभिः सरलगुरवे श्रद्धयोत्सृज्यतेऽयम् ॥

तच्चरणधूलिः

—जगदीशः

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अरबी शिक्षाशास्त्रम्

अथारबी सामान्यविज्ञानीयः प्रथमोऽध्यायः

१ तत्रारबीशिक्षाशास्त्रपारिभाषिकशब्दा यथावश्यकता लिख्यन्ते ।

२ तत्र हर्फ़ वर्णवाचकः शब्दः, बहुवचने हरूफ़ इति ।

३ ख़ारिज, निःसारितः निःसृतो वार्थः ।

४ मख़रज वर्णस्थानमिति चार्थो यतो वर्णाः निःसृता निःसारिता वा श्रूयन्ते । तद्बहुवचनत्वे मख़ारिज इति रूपम् ।

५ सिफ़त, विशेषतार्थः प्रयत्नवाचकः, बहुवचने सिफ़ात इति ।

६ क़ुरान इस्लामधर्मग्रन्थो मुहम्मदाख्यतद्धर्मप्रवर्तकमुखोच्चरितवाक्यसंग्रहः ।

७ स्थानप्रयत्नाभ्यां, (मख़ारिज सिफ़ाताभ्यां) शुद्ध क़ुरानपाठकाः उच्चारयितारः क़ुर्राः प्रसिद्धाः । एकवचने क़ारी इति ।

८ तत्र क़ुर्रानां मते चतुर्दश मख़ारिज वर्णानां भवन्ति ।

९ सैबविया मते तु षोडश मख़ारिज भवन्ति ।

१० ख़लीलमहाशयमते तु सप्तदश भवन्ति ।

११ तत्र पूर्वं खलु मख़ारिजवर्णनाद्वर्णोच्चारणसहयोग्यवयवानां ज्ञानमावश्यकमरबीशिक्षानुसारेण ।

१२ तत्र दन्तानां प्रमुखतास्तीति दन्तवर्णनं पूर्वं क्रियते उर्दूपद्यपंक्तिभिस्तद्यथा ।

है तादाद दाँतों की कुल तीस और दो
सनाया हैं चार और रुबाई है दो दो ॥
हैं अयनाव चार और बाक़ी रहे बीस
कि कहते हैं क़ुर्रा भी इज़रास इन्हीं को ॥
ज़वाहिक़ हैं चार और तवाहिन हैं बारह
नवाजिद भी हैं इनके बाज़ू में दो दो ॥

तदेतदायुर्वेदकश्यपसहितायां कौमारभृत्ये विस्तरेणोक्तम् । न चायं विषयः शिक्षाशास्त्रस्य कः कण्ठः, किं तालु, किं दन्ताः, के के च नामध्येयाः, किमोष्ठमित्यादिकं सर्वं खल्वायुर्वेदाधिकरणविषयत्त्वात्तत्रैव वर्णितम् । सर्वविदितत्वान्नात्र वर्ण्यन्ते ।

१३ तत्र सन्मुखस्थाश्चत्वारो, द्वौ तूपरितनौ द्वावधस्तनौ सनाया नामधेयाः । तत्रोपरितनौ सनाया उलिया, अधस्तनौ सनाया सिफ़ली इति ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१४ ऐषां पार्श्वे एकैकं कृत्वा चत्वारो रुबाई नामधेया इत्यष्टौ।

१५ ततः पार्श्वे अयनाबनामधेयाश्चत्वारः शूलाख्याः शूलवत्वात् इति द्वादश।

१६ ततो विंशतिदन्ताः अज़रासनामधेयाः।

१७ तेष्वपि अयनाबपार्श्वस्थाश्चत्वारो ज़वाहिकाख्याः।

१८ ततस्त्रयस्त्रयः कृत्वा द्वादश तवाहिनाख्याः

१९ ततश्चत्वारो नवाजिदाख्याः। इति दन्ताः द्वित्रिंशत् तत्र विंशति दन्ताः इज़रासाख्याः वृहद्दन्ताः। तत्रापि तवाहिनाख्या द्वादश-वृहत्तरा एव। शेषाः लघुदन्ताः। तद्यथा चित्रम्। सनाय उलिया २ सनाय सिफ़ली २ रुबाई ४ अयनाब ४ ज़वाहिक़ ४ तवाहिन १२ नवाजिद ४ = ३२ द्वित्रिंशद्दन्ताः।

दन्तानां चित्रम्

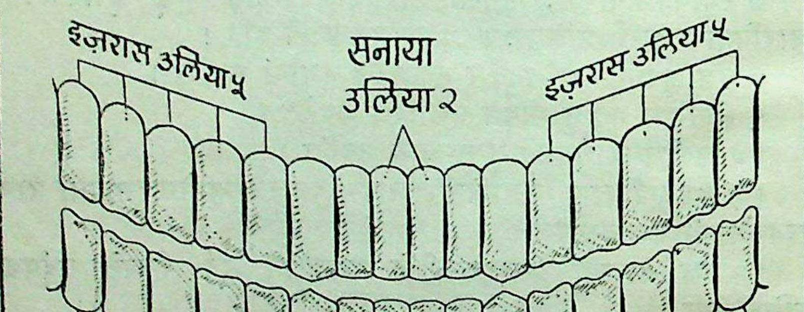

२० ज़बान जिह्वेति चार्थः।

२१ तदेव प्रमुखसाधनमुच्चारणे करणत्वात्तस्माद् भाषा ज़बान इत्युच्चते।

॥ इति अरबीशिक्षाशास्त्रे अरबीसामान्यविज्ञानीयः प्रथमोऽध्यायः ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ लिपिविज्ञानीयो द्वितीयोऽध्यायः

१ तत्र संस्कृत वर्णलिपिवन्नास्याः लिपिः ।

२ संस्कृतलिपिस्तु वामतो दक्षिणमभिधावति प्रतिकूलादनुकूलमभि । तथैव च सर्वलिपयो भूमण्डलस्य ।

३ किन्तु अरबीवर्णलिपिस्तु दक्षिणतो वाममभिधावति । असव्यात्सव्यमभि । अनुकूलात्प्रतिकूलमभि । तथैव फ़ारसी भाषालिपिरपि । तयोरेवानुकरणमुर्दूभाषालिपिरपि तद्यथा—

अरब	नबी	रसूल	ख़ुदा	जहाँ
عرب	نبی	رسول	خدا	جہاں

४ तत्र नानारूपात्मके जगति त्विदमपि भाषानानात्वं लिपिनानात्वं तदीयवैचित्र्यमपि खलु मानवमनोरञ्जनहेतुरित्यादरणीयमेवैतत् । सर्वञ्चैतन्मानवमस्तिष्कविकास एव ।

५ सन्ति चान्यत्रापि विशेषताः । न ताः प्रति नेत्रनिमीलनं युक्तम् । तत्रापि पादन्यासो वाग्विलासिनां स्यादेव ।

६ भूयान् हि लाभो भवति महद्यशः प्राप्तिश्च ।

॥ इति श्रीजगदीशाचार्य–विरचिते अरबीशिक्षाशास्त्रे
लिपिविज्ञानीयो द्वितीयोऽध्यायः ॥

अथ संक्षिप्त मूल अरबीशिक्षाभागः

अथारबी वर्णसमाम्नायविज्ञानीयस्तृतीयोऽध्यायः

तत्र सव्यलिपित्वाद्दक्षिणतः पठनीयम् ।

२ तेष्वपि तदादिध्वनिरेव वर्णस्तद्यथा अलिफ़ इत्यत्र अ, बे इत्यत्र ब एव वर्णो ज्ञेयः ।

३ स एषोऽक्षर समाम्नायः । दक्षिणतो वामं पठनीयः ।

ज़	द	ख़	ह्	ज	स	त	ब	अ
ذ	د	خ	ح	ج	ث	ت	ب	ا
ज़ाल	दाल	ख़े	हे	जीम	से	ते	बे	अलिफ़

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज़	तो	ज़	स	श	स	ज़	र
ظ	ط	ض	ص	ش	س	ز	ر
ज़ो	तो	ज़्वाद	स्वाद	शीन	सीन	ज़े	रे
न	म	ल	क	क़	फ़	ग़	अ़
ن	م	ل	ک	ق	ف	غ	ع
नून	मीम	लाम	काफ़	क़ाफ़	फ़े	ग़ैन	ऐ़न

य	अ	ह	व
ے ی	ء	ھ ہ	و
ये	हम्ज़ः	दुचश्मी हे, हे	वाव

४ केचित्, लाम अलिफ़ ला इत्यपि पठन्ति। स न पठितव्यः। लाम अलिफ़योः पृथग्निर्देशात्। दुचश्मी हे अपि, न लघु हे इत्यस्माद्भिन्नः। तस्मान्न तस्य तयोर्वा मख़ारिज (स्थान प्रयत्न) सिफ़ातेषु वर्णनम्। केवले स्वरूपे द्वे। तथैव येऽपि एक एव स्वरूपमात्रे द्वे।

५ तत्र अलिफ़ बे ते से जीम ह़े ख़े दाल ज़ाल रे ज़े सीन शीन स्वाद ज्वा़द तो ज़ो ऐ़न ग़ैन फ़े क़ाफ़ काफ़ लाम मीम नून वाव हे हम्ज़ः ये—इत्यरबी वर्णसमाम्नायः सानुबन्धो ज्ञेयः।

६ तत्रादिध्वनिः स्वरो वा व्यञ्जनवर्णो ज्ञेयः शेषा अनुबन्धास्तेषामग्रहणम्। ह़कारादिष्वकार उच्चारणार्थ इतिवेदवैतेऽपि चानुबन्धा ज्ञेयाः।

७ तत्र वर्णभेदार्थमेवानुबन्धाः तद्यथा से सीन स्वाद परस्परं भिन्ना एव सकाराः

८ ज़ाल ज़े ज्वा़द ज़ो तथैव भिन्नाः।

९ ते तो च तथैव

१० अलिफ़ हम्ज़ः च तथैवेत्यरबीविदां तदाचार्याणाञ्च मतम्।

११ तत्र—

झ़	ग	च	प
ژ	گ	چ	پ
झ़े	गाफ़	चे	पे

इति चत्वारो वर्णाः फ़ारसीभाषायामधिकाः।

११ तथा, च—

ड़	ड	ट
ڑ	ڈ	ٹ
ड़े	डाल	टे

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इति त्रीण्यक्षराणि तु उर्दू भाषाक्षरसमाम्नायेऽधिकानि पठितानि। न चैतेऽरबीवर्णसमाम्नाये सप्तवर्णाः सन्ति। अरब देशे तथा उच्चारणाभावात्। न तद्देशीयास्तानुच्चारयितुं शक्ताः।

१२ नहि सर्वे वर्णाः सर्वदेशेषूपलभ्यन्ते

१३ देशभेदादुच्चारणशक्तिभेदो भवत्येव

१४ तत्र त्रयो हरकताः भवन्ति फ़तहह-कसरह-ज़म्मह-नामकाः मूल-स्वर अ इ उ निर्वृत्यर्थम्। ते च हरकताः ज़बर ज़ेर पेशाख्याः क्रमशः अलिफ़ ज़बर अ, अलिफ़ ज़ेर इ, अलिफ़ पेश उ, इति तथैव बे ज़बर ब, बे ज़ेर बि, बे पेश बु इति तथैव सर्वत्र स्वर निर्वाहः तद्यथा अस اَس इस اِس उस اُس।

१५ तथा च बे ज़बर अलिफ़ बा, ते ज़बर अलिफ़ ता इति दीर्घाकारस्य निर्वाहः।

१६ तथा बे ज़ेर ये बी بِی, ते ज़ेर ये ती تِی इति दीर्घस्य ईकारस्य निर्वाहः।

१७ अलिफ़ पेश वाव-ऊ इति तद्यथा اُو तथाच अलिफ़ ज़बर बड़ी ये = ऐ اَے अलिफ़ ज़ेर बड़ी ये ए اِے।

१८ तथा अलिफ़ ज़बर वाव = औ اَو अलिफ़ वाव ऊर्ध्वमुख पेश ओ اُو इति।

१९ तत्र उच्चैः ज़बर चिह्नं اَ, नीचैः ज़ेर اِ उच्चैर्मण्डलवत्पेशो यथा اُ इति हरकतस्थानानि विज्ञेयानि।

२० ते क़सर तवस्सुत तूलाख्यभेदयुक्ताः ह्रस्वदीर्घप्लुता इति। ते चाष्टचत्वारिंशद्भेदयुक्ताः भवन्ति।

२१ अनुस्वारस्य त्वन्त्येन गुन्नाख्यनकारेण, विसर्गस्य हकारेण निर्वाहो यथा जहाँ, आसमाँ सूरेः।

२२ ते, ज़बर ज़ेर पेशाख्याः हर्कताः अरबीभाषायां क्रमशः फ़तहह कसरह ज़म्मह इत्युच्यन्ते।

॥ इति श्रीजगदीशाचार्य-विरचिते अरबीशिक्षाशास्त्रे
अरबीवर्णसमाम्नायविज्ञानीयस्तृतीयोऽध्यायः॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ अरबी-मख़ारिजविज्ञानीयश्चतुर्थोऽध्यायः

१ तत्र प्रथम मख़रज—अक़्सा हलक़ अलिफ़ ا हम्ज़ः ء हे ه एषां त्रयाणां वर्णानाम

२ वस्त हलक़ ऐन, हे ع ح एतयोः द्वयोः

३ अदना हलक़ ग़ैन, ख़े غ خ ,, ,,

४ अक़्सा ज़बान+तालु क़ाफ़ ق अस्यैव

५ अक़्सा ज़बान+तालु किञ्चिदग्रतः काफ़ ک अस्यैव

६ वस्ते ज़बान+तालु जीम ج शीन ش ये ی एतेषाम्

७ हाफ़िये ज़बान+इज़्रासे उलियामूल ज़्वाद ض अस्य

८ तरफ़े ज़बान+दन्त मूल लाम ل नून ن रे ر एषाम्।

९ नोके ज़बान+सनाया उलियामूल तो ط दाल د ते ت एषाम्

१० नोके ज़बान+सनाया—उलियातट ज़ो ظ ज़ाल ذ से ث एषाम्

११ नोके ज़बान+सनाया सिफ़लीतट+सनाया उलिया स्वाद ص ज़े ز सीन س—एषाम्

१२ अदना लब+सनाया उलिया तट फ़े ف अस्यैव

१३ अक़्सा व अदवालब बे ب मीम م वाव و एषाम्

१४ ख़ैशूम नून गुन्ना ںٓ अनुस्वारस्य इति

१५ सैबवियानां मते यो मख़रज लाम इत्यस्य तत एव किञ्चिदग्रे मुखमभि नून इत्यस्य तत एव किञ्चिदग्रे मुखमभि रे इत्यस्येति द्वावपराविति षोडश मख़ारिज़ (स्थानानि)

१६ ख़लील मते तु वाव याय एतौ यदा मदौभवतः तदैतयोः मख़रज जौफ़ (स्वस्थानान्तरिक्षं) भवति (अन्तःस्थत्वमिति।)

१ आदि कण्ठः	१ अक़्सा हलक़	ا ء ه
२ मध्य कण्ठः	२ वस्त हलक़	ع ح
३ कण्ठान्तम्	३ अदना हलक़	غ خ
४ जिह्वामूल+तालु	४ अक्सा ज़बान+तालु	ق
५ किञ्चिदग्रे,,+ ,,	५ किंचिदग्रे ,, ,,	ک
६ जिह्वा मध्य+तालु	६ वस्ते ज़बान+तालु	ج ش ی
७ जिह्वामध्यतट+उपरितल-वृहत्तर दन्तमूलम्	७ हाफ़िये ज़बान+इज़्रास मूल (उलिया)	ض
८ जिह्वाग्र+दन्तमूलम्	८ तरफ़े ज़बान+दन्त मूल	ل ن ر

९ जिह्वाग्र + उच्च दन्त-द्वय मूलम्	९ नोके ज़बान + सनाया उलिया मूल	ط د ت
१० जिह्वाग्र + उच्चदन्त द्वय तटम्	१० नोके ज़बान + सनाया उलिया तट	ظ ذ ث
११ जिह्वाग्र + अधस्तनदन्त-द्वयतट + उच्चदन्त द्वयम्	११ नोके ज़बान + सनाया सिफ़ली-तट + सनाया उलिया	ص ز س
१२ अधरोष्ठ + उच्चदन्त-द्वय तटम्	१२ अदना लब + सनाया उलिया तट	ف
१३ उभयोष्ठम्	१३ अदना अक्सा लब	ب م و
१४ नासिका	१४ ख़ैशूम	ن غنه

अत्र मीम नूनयोः (م ن) नासिका चेति वक्तव्यम् । चास्त्वस्ववर्गस्थानमपि । अर्थात् नून न ن इत्यस्य दन्तः + नासिका मीम म م इत्यस्य ओष्ठं + नासिका ।

॥ इति श्रीजगदीशाचार्य-विरचिते अरबीशिक्षाशास्त्रे मख़रज विज्ञानीयश्चतुर्थोऽध्यायः ॥

अथ सिफ़ातसामन्यविज्ञानीयः पञ्चमोऽध्यायः

१ तत्र सिफ़त इत्यस्य विशेषतार्थः । तस्य बहुवचने सिफ़ात भवति रूपम् । प्रयत्ना इत्यर्थे ।

२ तत्र सिफ़ात द्विधाः सन्ति ।

(१) याभिर्विनोच्चारणेन स वर्ण एव न श्रूयते योऽभीष्टः । यथा ज़े इति शब्दो ज़ाल ज़ो ज़्वाद वा श्रूयेत, ते इति तो श्रूयेत, स्वाद, सीन इति श्रूयेत । यथातत्तत्सिफ़तश्चेदुच्चार्यते न स्रभो, न वान्यशब्दध्वनिः । तस्मादेताः सिफ़ात तत्तज्जातीयकत्वात् ज़ातिया, अनिवार्यत्त्वादर्थादावश्यकत्त्वाल्लाज़मिया, विभेदकत्त्वादन्यवर्णेभ्यो मुमैयज़ा, तस्मिंस्तस्मिन्नेवावस्थितत्त्वान्मुक़ौविमा इत्युच्चन्ते ।

३ तत्रैताः सिफ़ात सप्तदश भवन्ति ।

४ द्वितीय प्रकारकास्तु ताः याभिर्विनोच्चारणेन वर्णस्तु स एव किन्तु तेषां हुस्नो ज़ीनताख्यसौन्दर्यं न तथा भवति यथेष्टम् । ताः क्रमशः हुस्नो ज़ीनतोत्पादकत्त्वात् मोहस्सिना-मुज़ीना उच्यन्ते । तथा च कृत्रिमत्त्वादेव आर्ज़िया तथा मोहल्लिया नामधेया अलङ्कारकत्त्वाद् भवन्ति ।

॥ इति श्रीजगदीशाचार्य–विरचिते अरबीशिक्षाशास्त्रे सिफ़ात सामान्य विज्ञानीयः पञ्मोऽध्यायः ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ सिफ़ातलाज़मिया-ज़ातिया-मुमय्यज़ामुक़व्विमा विज्ञानीयः षष्ठोऽध्यायः

१ तत्रैताः क़ुर्रादीनां मते तु त्रयोदशैव भवन्ति।

२ ख़लील तथा अशरफ़अली मते सप्तदश इति।

३ क़ुर्रादीनां मते चत्वारि मिथुनानि अष्टाविति तथा पञ्चेति त्रयोदशैव।

४ ख़लील तथा अशरफ़अ़ली मते तु
पंञ्चमिथुनानि दश इति
तथा सप्तामिथुनानि--१७ सप्तदश इति

५ तद्यथावत्क्रमशो वर्ण्यते—

(१) हम्स-नीचैर्ध्वनिना साधारणध्वनिना वा स्वाभाविकतयोच्चारणं हम्स उच्यते। षा सिफ़त ते काफ़ सीन स्वाद ख़े शीन से हे ह़ फ़े एतेषां वर्णानां भवति— ت ك س ص خ ش ث ه ح ف

सैषा सिफ़त अघोष इति वक्तुं शक्यते हम्ससिफ़तत्वादेते वर्णाः महमूसा उच्यन्ते।

(२) जहर—महमूसाभ्योऽन्येषां सिफ़त जहर। ते च वर्णाः मजहूरा उच्यन्ते जहरवत्त्वाद्। जहर इत्यस्योच्चैरूच्चारणं किञ्चिदस्वाभाविकतयेत्यर्थः हम्सस्य प्रतिद्वन्द्वीतिज्ञेयम्। सैषा, घोष इति वक्तुं शक्यते।

(३) रख़ूवत् = सततंध्वनिनिःसरणमित्यर्थः सैषा श्वासप्रयत्नो वक्तुं शक्यते। सैषा सिफ़त तु से ह़ ख़ ज़ाल रे ज़े सीन शीन स्वाद ज़्वाद ज़ो ग़ैन फ़े वाव हे हम्ज़ः ये एतेषु वर्णेष्वेव वर्तते

ث ح خ ذ ر ز س ش ص ض ظ غ ف و ه ء ى

(४) शिद्दत रख़ूवत् सिफ़तस्य प्रतिद्वन्दीति ज्ञेयम्। तस्माच्छेषाणां रख़ूः सिफ़तवद्व्यतिरिक्तानां शिद्दत सिफ़त ज्ञेया। येषामुच्चारणे सततंध्वनि निःसरणं न भवतीति ज्ञेयम्। अवरुद्ध्यते। सैषा सिफ़त नादो वक्तुं शक्यते वर्णास्तु शदीदा उच्यन्ते।

तथा च पञ्चवर्णा मुतवस्सित (मध्याः) उच्यन्ते तेऽपि शदीदा एव ज्ञेयाः तद्यथा लाम नू रे ऐन मीम (م ع ر ن ل) इति।

(५) इस्तफ़ाल-यदोच्चारणे जिह्वा तालवभि न उत्तिष्ठति। सैषा विवारप्रयत्नो वक्तुं शक्यते। वक्ष्यमाणप्रतिद्वन्द्वी इस्तआला सिफ़तवद्व्यतिरिक्तानामेव इस्तफ़ाल सिफ़त अस्ति वर्णाश्च मुस्तफ़िल उच्यन्ते।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(६) इस्तआला—इस्तफ़ालस्य प्रतिद्वन्द्वी। यदोच्चारणे जिह्वा-ताल्वभि उत्तिष्ठति तेन संवारता जायते। सैषा संवारो वक्तुं शक्यते वर्णाश्च मुस्तालियाख्याः भवन्ति ते च

खे स्वाद ज़्वाद ग़ैन तो ज़ो क़ाफ़

خ ص ض غ ط ظ ق

(७) इन्फ़ताह—यदोच्चारणे जिह्वा तालु न स्पृशति सामीप्यमात्रं सेवते। सैषा तु ईषत्स्पृष्टोऽन्तः प्रयत्नो वक्तुं शक्यते। वर्णाश्च मुन्फ़ते-हाख्याः। वक्ष्यमाणप्रतिद्वन्द्वीसिफ़त इत्तबाक़वद्भयो व्यतिरिक्तानां वर्णानामियं सिफ़त ज्ञेया।

(८) इत्तबाक़—यदोच्चारणे जिह्वातालुस्पृशति। सैषा स्पृष्टोऽन्तः-प्रयत्नो वक्तुं शक्यते वर्णाश्च मुत्तबिक़ाख्याः।

स्वाद ज़्वाद तो ज़ो एषां सिफ़त इत्तबाक़ भवति

ص ض ط ظ

शेषाणां तु पूर्वोक्ता इन्फ़ताह सिफ़त ज्ञेया।

(९) अज़लाक़—ख़लीलादिमते त्वियमपि सिफ़त वर्तते। यदोच्चारणेन सारल्येन च वर्णाः शीघ्रतया निःसरन्ति न काठिन्येन्। सैषा अल्पप्राण-प्रयत्नो वक्तुं शक्यते। वर्णाश्च मुज़्लक़ाख्याः। ते च

फ़े रे लाम मीम नून बे सन्ति

ف ر ل م ن ب

(१०) इस्मात—यदोच्चारणे काठिन्यं विलम्बश्च सैषा महाप्राण-प्रयत्नो वक्तुं शक्यते। वर्णाश्च मुसम्मताख्याः। अज़लाक़ सिफ़द्वद्भ्यो व्यतिरिक्तानां वर्णानामियं ज्ञेया।

इति दश सिफ़ात मुतज़ादा उच्यन्ते प्रतिद्वद्विन इत्यर्थः। ज़िद इत्यस्य विरुद्ध इत्यर्थस्तस्मादेव परस्परविरुद्धत्वादेव ते मुतज़ादा उच्यन्ते। अत्र ख़लील अशरफ़अली मतं साध्वेव अज़लाक़ अस्मातौ भवत एव इदानीं सप्ताप्रतिद्वंद्विनोऽमिथुना उच्यन्ते।

(१) क़लक़ला—यदोच्चारणेन स्थाने चलत्वं जायते यश्च संस्कृते काकलिकत्वेन प्रसिद्धो दोषो मन्यते सैषा सिफ़त क़ाफ़ ق इत्येकस्यैव प्रधानतया। गौणत्वेन तु— तो ط बे ب जीम ج दाल د एषामपि।

(२) तकरार—यदोच्चारणेऽव्यवहिततया अनन्तवर्णध्वनिः। यथा अर्र्र्र्र्र्र्र् सैषा संस्कृते विकीर्णत्वमिति दोष एवोक्तोऽत्रापि चारबीविदो दोषमेव मन्यंते। अत आदिशन्ति यदस्मादात्मानं रक्षेत्। अर्थादिद-मुच्चारणं हेयमेव। सैषा रे ر वर्णे एव रकारे एवेत्यर्थः।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(३) इस्तताला–यदोच्चारणे महाविलम्बो जायते । सैषा ज्वाद ض इत्यस्यैव । अत्र लम्बायमान् ध्वनिरेव विशेषता तस्मादेव महा-विलम्बो जायते ।

(४) तफ़सी–सम्पूर्णास्ये ध्वनिविस्तारः सैषा शीन ش इत्यस्यैव ।

(५) सफ़ीर–वंशीवन्मृदुध्वनिरित्यर्थः सैषा–

स्वाद ص सीन س एतयोरेव–

ख़लीलादि मते च द्वेऽपरे

(६) लीन–अति नम्रोच्चारणमिति । सैषा–

ये ى वाव و एतयोरेव यदा तौ मदौ भवतः

(७) इन्हे़राफ़–रे ر लाम ل एतयोरुच्चारणवैचित्र्यमेवोच्यंते इन्हे़राफ़ इति ।

इत्येताः—सप्तदश सिफ़ात उक्ता वेदितव्याः ।

(८) ख़ैशूमियत–अनुनासिकत्वञ्च वक्तव्यं मकारनकारयोः ।

(७) तस्मादेकैकस्य वर्णस्य क़ुर्रा-मते तु पञ्च-पञ्च सिफ़ात भवन्ति । ख़लीलाशरफ़अली मेत तु षड् षड् सिफ़ात भवन्ति ।

(८) तत्र खलीलाशरफ़अली च युक्तावेव । यतोहि अल्पप्राणता महाप्राणता च भवत्येत्र । इन्फ़ताह इत्तबाक़ौ आभ्यन्तरत्वात पृथक् वक्तव्यौ ।

(९) तदग्रे चक्रे दर्शिताः––

तद्यथा चक्रम्–

१ हम्स	अघोषः	६ जहर	घोषः
२ रख़्ः	श्वासः	७ शिद्दत	नादः
३ इस्तफ़ाल	विवारः	८ इस्तआला	संवारः
४ अज़लाक़	अल्प प्राणः	९ अस्मात	महा प्राणः
५ इत्तबाक़	स्पृष्टम्	१० इन्फ़ताह	ईषस्पृष्टम्
११ क़ल्क़ला		कल दोषः	
१२ तकरार		विकीर्णत्वदोषः	
१३ तफ़सी		ध्वनि विस्तृतिः	
१४ सफ़ीर		मृदुध्वनिः	
१५ इस्तताला		ध्वनिविलम्बितत्वम्	

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१६ लीन	नम्रता
१७ इन्ह़िराफ़	जिह्वोष्ठ तटीयोच्चारणम्
१८ ख़ैशूमियत	अनुनासिकत्वम्

।। इति श्रीजगदीशाचार्य विरचिते सिफ़ात लाज़मिया ज़ातिया मुमय्यज़ा मक़ौविमा विज्ञानीयः षष्ठोऽध्यायः ।।

अथ सिफ़ात मुहस्सिना-मुज़ीना-मुहलिया-आज़िया-विज्ञानीयः सप्तमोऽध्यायः

१ तत्र खल्वष्टौ वर्णा एव भवन्ति येषु चैताः सिफ़ात भवन्ति तद्यथा

लाम रे मीम नून वाव ये अलिफ़ हम्ज़ः

२ तत्रासां वर्णनं शिक्षाशास्त्रे नोचितम् । किं कारणमित्युच्यते—उच्चारण-सम्बन्धाभावात् । तद्यथा अच् हल विसर्गसन्धिप्रकरणानां शिक्षाशास्त्रेण न कोऽपि सम्बन्धः । अपि तु व्याकरणशास्त्रेण सम्बन्धः । तथैवात्रापि उपर्युक्ताष्टवर्णानां स्वरसन्धिविषयकत्त्वादेव । उभयपदयोः सन्धौ वैकस्मिन्नेव पदेऽपि वर्णान्तर योगेन क्व क्व किं किं परिवर्तन-मादेशोवा भवति, तेषामेव सिफ़ात मोहस्सिनादीनि नामानि । तथापि प्रकरणवशात्ता अपि प्रत्यक्षरं वर्ण्यन्ते । स्वरेण वैदिक स्वर इवेति ज्ञेयम् ।

(१) (लामाधिकरणम्)

लकारात्पूर्वश्चेदकारो वा उकारः अर्थात् लकारात्पूर्ववर्त्यक्षरं ज़बर चिन्हयुक्तं वा पेशचिन्हयुक्तं तदा तौ ज़बर-पेशौ गम्भीरध्वनिना व्यज्येते उदात्तौ इत्यर्थः ।

(क) तद्यथा—अल्लाह—रफ़ाआतहूल्लाह-अत्र-लकारात्पूर्वौ अ उ इति उदात्तौ स्तः ।

(ख) यदि चेदिकारोऽर्थाज्ज़ेर पूर्वं तदा मन्दध्वनिना अनुदात्तेनो-च्चारयेत् तद्यथा बिस्मिल्लाह । अत्र लात्पूर्वः इकारोऽनुदात्तः

(२) (रेऽधिकरणम्)

(क) यदि रकारादनन्तरं ज़बर वा पेश तदा गम्भीरध्वनिना रकारः पठचते तद्यथा रब्बुक-रुबमा ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(ख) इकारश्चेदनन्तरं तदमन्दध्वनिनैव तद्यथा रिजाल इति—

(ग) तथैव रेफ़ात्पराश्चेद् हरूफ़ मुस्तालिया—

हे स्वाद ज्वाद तो ज़ो फ़े ग़ैन इत्येते
ح ص ض ط ظ ف غ

तदापि रकारो गम्भीर ध्वनिनैव पठ्यते ।

(३) (मीमाधिकरणम्)

(क) मकारो यदि अकारेण युक्तो मुशद्ददिति स्यात् तदा ग़ुन्ना कर्तव्य-मर्थात्स्पष्टानुनासिकत्वं कुर्यात इज़हारे ग़ुन्ना इति यथा लम्मा ।

(ख) यत्र मकारद्वयं तत्रैक मकार एवावशिष्यते सोऽपि सानुनासिकः (ग़ुन्ना) भविष्यति ।

(ग) यदा मात्परो बकारस्तदा ग़ुन्ना अख़फ़ा (गौणानुनासिकत्वम्) भविष्यति तद्यथा मंय्यगु सिम्बिल्लाह्-अम्बा ।

(घ) वकार फ़कारयोरपि परयो ग़ुन्ना अख़फ़ा स्याताम् । तदेतत् बौफ़ नियम उच्यते बवफ़ानाम् ।

(४) (नूनाधिकरणम्)

(क) तत्र ग़ुन्ना (अनुनासिकत्वं) विषये मकारवदेव नियमो ज्ञेयः—

(ख) नकारानन्तरं चेत्कण्ठ्याक्षराणि (हरूफ़ेहलक़ी) इति पराणि तदा नू, नकार एव न तु सानुनासिकः (ग़ुन्ना) इति स्यात् । यथा अनअम्त इति अथ चेदकण्ठ्याः हरूफ़े हलक़ी न स्युस्तदा ग़ुन्ना स्यान्नकारः । ते च षडक्षराणि पद्येनोक्तानि तद्यथा—

हर्फ़ हल्क़ी छै समझ ऐ नूरऐ़न ।
हम्ज़ः हे वो ह़ वो ख़े वो ऐ़नो ग़ैन ॥
ء ه ح خ ع غ

(ग) नकारात्पराश्चेन्मन य व र लास्तदा पर सवर्णो भवति तद्यथा संस्कृतेऽपि पाणिनिसूत्रम्-अनुस्वार ययिपरसवर्णः इति अनुस्वारस्य स्थाने ययि प्रत्याहारे परे पर सवर्णो भवतीति । अत्र तु नस्य स्थाने ते, म न य व र ला एवादेशा भवन्ति । तत्र मन यवाश्चत्वारो ग़ुन्ना (सानुनासिका) अपि भवन्ति तद्यथा-मिन्+लद=मिंल्लद । अत्र तु पाणिनि सूत्रं तोर्लिः वत् । मिन्+रबुक=मिर्रबुक इति निरनुनासिकः

(घ) नकारात्परो बकारश्चेन्मकारो भवति नस्य स्थाने । नू म

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

इति भवति तद्यथा मिन्+बद = मिम्बद (अत्र परसवर्णानुनासिकः पञ्चम एव ।

(५) (अलिफ़[1], हम्ज़ा[2], ये[3], वाव[4], अधिकरणम्)

(क) अलिफ़ ज़बर, ये ज़ेर, वाव पेश मदुच्यन्ते ह्रस्वस्वरा इति ।

(ख) अलिफ़ ये वाव अर्थात् अ इ उ एतेभ्यः परश्चेत् हम्ज़ः 'अ' एव तदा दीर्घा पठ्यन्ते ते आ ई ऊकाराः इति ।

तद्यथा पाणिनि सूत्रम् अकः सवर्णे दीर्घ इति किन्तु तेषां दीर्घत्वं प्लुतवंदेव भवति । मात्रात्रयवदिति । तदेते मद मुत्तसिल, मद वाजिब उच्येते अर्थात् संयुक्तह्रस्वौ उचित ह्रस्वौ द्वित्त्वादेवोच्येते ।

(ग) यदि चैतेभ्यः परं हरूफ़ साकिन स्यात्तदापि दीर्घीकृत्य प्लुतवदेव पठ्यते ।

ते मदलाज़िम-मदक़लमी-मुख़फ़्फ़फ़ उच्येते तद्यथा अअल्ऊन अत्र तु हम्ज़ा ततो अलिफ़ ततो लाम साकिन विद्यन्ते तस्मात्प्लुतवदुच्चार्यंते । तथैवाग्रेऽपि बहु वर्तते । उदाहरणार्थमेव लघु विज्ञापनमिदम् ।

(घ) तदेतेन विज्ञातं न शिक्षाशास्त्रविषयोऽयम् । सन्धिविषयोऽयम्

।। इति श्रीजगदीशाचार्य-विरचिते सिफ़ात मुहस्सिना मुज़ीनादि विज्ञानीयः सप्तमोध्यायः ।।

अथ ध्वनिशक्ति (क़ूवत) विज्ञानीयोऽष्टमोऽध्यायः

१ तत्र यावन्तोऽप्यरबीवर्णाः सन्ति ते पुनः द्विधा विभज्यन्ते उच्चारणानुसारेण तद्यथा—

(क) गम्भीरोच्चारणम्—तफ़ख़ीम

(ख) हीनोच्चारणम्—तरक़ीक़—इति द्विधाः

२ येषामुच्चारणं तफ़ख़ीमतया ते मुफ़क्ख़म वर्णा उच्यन्ते तद्यथा—

ह़	स्वाद	ज़्वाद	ग़ैन	क़ाफ़	तो	ज़ो
ح	ص	ض	غ	ق	ط	ظ

एते (पुर) गम्भीरध्वनिना पठ्यन्ते ।

३ शेषास्तु तरक़ीक़ (बारीक़) हीनध्वनियुक्ताः तस्मादेते मुरक़्क़क़ वर्णा उच्यन्ते ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

४ तथा च (क़ूवत) शक्त्यनुसारेणापि पञ्चधा विभक्ताः—

अक़वा क़वी मुतवस्सित ज़ईफ़ अज़ाफ़ इति।
१ २ ३ ४ ५

१ अक़वा—महाशक्तिसम्पाद्याः तो ज़ो ज़्वाद क़ाफ़
ط ظ ض ق

२ क़वी शक्तिसम्पाद्याः जीम दाल स्वाद ग़ैन रे बे
ج د ص غ ر ب

३ मुतवस्सित—सामान्यशक्तिसम्पाद्यास्तद्यथा

हम्ज़ः अलिफ़ ज़े ते ख़े ज़ाल ऐन क़ाफ़
ء ا ز ت خ ذ ع ق

४ ज़ईफ़—हीनशक्तिसम्पाद्याः सीन शीन लाम वाव ये
س ش ل و ى

५ अज़ाफ़—अतिहीनशक्तिसम्पाद्यस्तद्यथा

से हे ह़े फ़े मीम नून
ث ه ح ف م ن

अज़ाफेष्वपि फ़े ह़े एतौ द्वौ तु महाहीन-शक्ति-सम्पाद्यौ = (अज़ाफुल्हरूफ़) उच्येते

६ तत्र प्रत्येकारबीवर्णविषये विचार्यते—

(क) किमस्य मख़रज
(ख) किमस्य सिफ़ात
(ग) मुफ़ख़्ख़म वा मुरक़्क़क़
(घ) अक़वा वा क़वी वा मुतवस्सित वा ज़ईफ़ वा अज़ाफ़ अज़ाफुल्हरूफ़ वेति चतुर्धैव विजानीयात्।

७ एतदेव फ़न-तजवीद इल्म-तजवीद वोच्यते।

८ अस्यैव पूर्तिकरा विद्याः तिस्रोऽन्याः इल्मे अवक़ात-इल्मे क़राएत इल्मे रस्म चोच्यन्ते। न ता अत्राधिकृता इति।

॥ इति श्रीजगदीशाचार्य-विरचिते ध्वनि-शक्ति (क़ूवतादि) विज्ञानीयोऽष्टमोऽध्यायः॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ प्रतिवर्ण मख़रजसिफ़ातादिचक्रम्

क्रम संख्या	वर्ण	मख़रज (स्थान)	सिफ़ात (प्रयत्न)	आवाज़ (ध्वनि)	क़ूवत (शक्ति)
१	अलिफ़ ا अ	अक़्सा हलक़	जहर-रख़ू: इस्तफ़ाल इनफ़ताह-मद	मुफ़क्ख़म-मुरक़्क़क़	मुतवस्सित
२	बे ب ब	दोनो लब (सिफ़तैन)	जहर इस्तफ़ाल इन्फ़ताह-शिद्दत	मुरक़्क़क़	क़वी
३	ते ت त	नोके ज़बान + सनाया उलिया मूल	हम्स-शिद्दत इस्तफ़ाल-इन्फ़ताह	मुरक़्क़क़	मुतवस्सित
४	से ث स	नोके ज़बान + सनाया उलिया तट	हम्स रख़ू: इस्तफ़ाल इन्फ़ताह	मुरक़्क़क़	अज़ाफ़
५	जीम ج ज	वस्ते ज़बान + तालु	जहर-शिद्दत इस्तफ़ाल-इन्फ़ताह	मुरक़्क़क़	क़वी
६	हे ح ह़	वस्ते हलक़	हम्स-रख़ू इस्तफ़ाल-इन्फ़ताह	मुरक़्क़क़	अज़ाफ़ुल्हरूफ़
७	ख़े خ ख़	अदना हलक़	हम्स रख़ू इस्तफ़ाल इन्फ़ताह	मुफ़क्ख़म	मुतवस्सित
८	दाल د द	नोके ज़बान + सनाया उलिया मूल	जहर शिद्दत इस्तफ़ाल इन्फ़ताह	मुरक़्क़क़	क़वी
९	ज़ाल ذ ज़	नोके ज़बान + सनाया उलिया तट	जहर रख़ू: इन्फ़ताह	मुरक़्क़क़	मुतवस्सित
१०	रे ر र	तरफ़े ज़बान + दन्त मूल	जहरमुतवस्सुत इस्तफ़ाल इन्फ़ताह तकरार	मुफ़क्ख़म मुरक़्क़क़	क़वी
११	ज़े ز ज़	नोके ज़बान + सनाया उलिया तट + सनाया सिफ़ली तट	जहर रख़ू: इस्तफ़ाल सफ़ीर	मुरक़्क़क़	मुतवस्सित
१२	सीन س स	नोके ज़बान + सनाया उलिया तट + सनाया सिफ़ली तट	हम्स रख़ू: इन्फ़ताह सफ़ीर	मुरक़्क़क़	ज़ईफ़
१३	शीन ش श	वास्ते ज़बान + तालु	हम्स रख़ू: इस्तफ़ाल इन्फ़ताह तफ़सी	मुरक़्क़क़	ज़ईफ़
१४	स्वाद ص स	नोके ज़बान + सनाया तट ४	हम्स रख़ू: इस्तफ़ाल इत्तबाक़ सफ़ीर	मुफ़क्ख़म	क़वी

१५	ज़्वाद ض ज़	हाफ़ये ज़बान + इज़रासे उलियामूल	जहर रख़्: इस्तआला इत्तबाक़ इस्तताला	मुफ़क्ख़म	अक़्वा
१६	तो ط त	नोके ज़बान + सनाया उलिया मूल	जहर शिद्दत इस्तआला इत्तबाक़	मुफ़क्ख़म	अक़्वा
१७	ज़ो ظ ज़	नोके ज़बान + सनाया उलिया तट	जहर रख़्: इस्तआला इत्तबाक़	मुफ़क्ख़म	अक़्वा
१८	ऐन ع अ़	वस्ते हलक़	जहर मुतवस्सित इस्तफ़ाल इन्फ़ताह	मुरक़्क़क़	मुतवस्सित
१९	ग़ैन غ ग़	अदना हलक़	जहर रख़्: इस्तआला.इन्फ़ताह	मुफ़क्ख़म	क़वी
२०	फ़े ف फ़	अदना लब + सनाया उलिया तट	हम्स रख़्: इस्तफ़ाल इन्फ़ताह	मुरक़्क़क़	अज़्आफ़ुल्हरूफ़
२१	क़ाफ़ ق क़	अक़्सा ज़बान + तालु	जहर शिद्दत इस्तफ़ाल इन्फ़ताह	मुफ़क्ख़म	अक़्वा
२२	काफ़ ک क	अक़्सा ज़बान + तालु	हम्स शिद्दत इस्तफ़ाल इन्फ़ताह	मुरक़्क़क़	मुतवस्सित
२३	लाम ل ल	तरफ़े ज़बान + दन्तमूल	जहर मुतवस्सित इस्तफ़ाल इन्फ़ताह	मुफ़क्ख़म-मुरक़्क़क़	ज़ईफ़
२४	मीम م म	दोनों लब (सिफ़्तैन)	जहर मुतवस्सित इस्तफ़ाल इन्फ़ताह ग़ुन्ना	मुरक़्क़क़	अज़्आफ़
२५	नून ن न	तरफ़े ज़बान + दन्त मूल	जहर मुतवस्सित इस्तफ़ाल इन्फ़ताह ग़ुन्ना	मुरक़्क़क़	अज़्आफ़
२६	वाव و व	दोनो लब (सिफ़्तैन)	जहर रख़्: इस्ताफ़ाल इन्फ़ताह मद	मुरक़्क़क़	ज़ईफ़
२७	हे ه ह	अक़्सा हलक़	हम्स रख़्: इस्तफ़ाल इन्फ़ताह	मुरक़्क़क़	अज़्आफ़
२८	हम्ज़: ء अ	अक़्सा हलक़	जहर शिद्दत इस्तफ़ाल इन्फ़ताह	मुरक़्क़क़	मुतवस्सित
२९	ये ی य	वस्ते ज़बान + तालु	जहर रख़्: इस्तफ़ाल इन्फ़ताह मद	मुरक़्क़क़	ज़ईफ़
३०	अं ں ँ	ख़ैशूम	हम्स रख़्: इस्तफ़ाल इन्फ़ताह ग़ुन्ना	मुरक़्क़क़	ज़ईफ़

॥ इति संक्षिप्तमूलाऽरबी शिक्षा समाप्ता ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(अथारबीशिक्षासमालोचनाभागः)

अथाक्षरसमाम्नायवर्णक्रमालोचनाविज्ञानीयो नवमोऽध्यायः

१ तदत्र परिदृष्टं भवति यदरबीवर्णसमाम्नायोऽयं पूर्णतया अवैज्ञानिकः तत्र हेतवो यथा, नायं वर्णसमाम्नायो यथा मख़रजपौर्वापर्येण समाम्नीतो यत्पूर्वं काण्ठयास्ततस्तालव्यादयोः ।

२ नापि सिफ़ातपौर्वापर्येणैव ।

३ नापि मुफ़क्खम मुरक़्क़क़ानुसारेण ।

४ नापि अक़्वाक़्वीआदिक़ूवतानुसारेण ।

५ तत्र यथा मख़रजं क्रमस्तु स्यादयमेव—

अलिफ़ हम्ज़ा हे ऐन ह़े ग़ैन ख़े क़ाफ़ काफ़ जीम शीन ये ज़्वाद लाम नून रे तो दाल ते ज़ो ज़ाल से स्वाद ज़े सीन फ़े बे मीम वाव ।

ا ء ه ع ح غ خ ق ک ج ش ی

ض ل ن ر ط د ت ظ ذ ث ص ز س ف ب م و

६ आवाज़ानुसारेण क्रमस्तु मुरक़्क़क़पूर्वक एव यथा—

अलिफ़ बे ते से जीम ह़े दाल ज़ाल रे ज़े सीन शीन ऐन फ़े काफ़ लाम मीम नून वाव हे हम्ज़ा ये ख़े स्वाद ज़्वाद तो ज़ो ग़ैन क़ाफ़ ।

ا ب ت ث ج ح د ذ ر ز س ش ع ف ک

ل م ن و ه ء ی خ ص ض ط ظ غ ق

७ क़ूवतानुसारेण तु स्यादयं क्रमो यथा—

ज़्वाद क़ाफ़ तो ज़ो बे जीम दाल रे स्वाद ग़ैन अलिफ़ ते ख़े ज़ाल ज़े ऐन काफ़ अम्ज़ा सीन शीन लाम वाव ये से मीम नून हे फ़े ह़े ।

ض ق ط ظ ب ج د ر ص غ ا ت خ

ذ ز ع ک ء س ش ل و ی ث م ن ه ف ح

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

८ वर्णाकृत्यनुसारेण चेत्ते कथयेयुस्तदा आकृत्यनुसारेण तु—

अलिफ़ बे ते से फ़े ये काफ़ क़ाफ़ लाम नून जीम ह़े ख़े ऐ़न ग़ैन ये सीन शीन स्वाद ज़्वाद तो ज़ो मीम हे वाव दाल ज़ाल रे ज़े ह़म्ज़ा। इति क्रमः स्यात्।

ا ب ت ث ف ے ک ق ل ن ج ح خ ع غ ی س ش
ص ض ط ظ م ہ و د ذ ر ز ء

९ तथाच हरूफ़ ज़ायदानुसारेण चेदयं क्रमः स्यात् अनुबन्धदृष्टया तदा तु—अलिफ़ बे ते से फ़े ह़े ख़े रे ज़े हे ये तो ज़ो ऐ़न ग़ैन नून जीम मीम लाम काफ़ क़ाफ़ दाल ज़ाल वाव स्वाद ज़्वाद ह़म्ज़ेति।

ا ب ت ث ف ح خ ر ز ہ ی ط ظ ع غ ن ج م ل ک ق
د ذ و ص ض ء —

१० किन्त्वेतत्सर्वमेवासाम्प्रतम्। समुचितं त्विदमेव यत्संस्कृतवर्णमालेवारबीवर्णमालाऽपि मख़रजावाज़क़ूवतसिफ़ातानुसारेणैव स्यात् तद्यथा—मख़रज आवाज़ (तरक़ीक़-तफ़ख़ीम) तथा क़ूवतेति त्रयाणां दृष्टया तु

हे अलिफ़ ह़म्ज़ा—ऐ़न ह़े—ख़े ग़ैन—क़ाफ़—काफ़—शीन ये जीम—ज़्वाद—नून लाम रे—ते दाल तो—से ज़ाल ज़ो—सीन ज़े स्वाद—फ़े—मीम वाव बे।

ہ ا ء – ع ح – خ غ – ق – ک – ش ی ج – ض –
ن ل ر – ت د ط – ث ذ ظ – س ز ص – ف – م و ب –

११ सिफ़ातानुसारेण तु क्रमः सम्भव एव नास्ति यतो हि तदनुसारेण कृते क्रमेऽयं त्रयाणां दृष्टया क्रमोऽपि विच्छिन्नो भविष्यति।

१२ ये ये वर्णक्रमा अत्र मख़ारिजादिदृष्टया प्रदर्शिताः वस्तुतस्तेऽपि अशुद्धा एव। यतोहि वर्तमानारबीशिक्षाशास्त्रे मख़ारिजक़ूवतादिष्वपि गभीरत्रुटयः सन्त्येव। तेऽग्रेनिर्देक्ष्यन्ते।

१३ अवैज्ञानिकस्यैतस्यारबीवर्णसमाम्नायस्य मख़रजादिदृष्टया वैज्ञानिक्रमानुसारेण वर्णक्रमप्रदाने निरन्तरं पञ्चदिनानि व्यतीतानि।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

महान् श्रमश्च व्ययीभूतः। बुद्धिरपि उन्मादाक्रान्तेव सञ्जाता। तथापि बहुप्रयासे कृतेऽपि सिफ़ातेषु गभीरत्रुटिकारणात् तदनुसारेण वर्णक्रमो दातुं न शक्तः।

१४ चेदामूलसंशोधनं क्रियेतारबीशिक्षायां तदनन्तरमेव कृतः क्रमः संस्कृतवर्णसमाम्नायवर्णक्रमवद्वैज्ञानिको भवितुं शक्यते।

१५ तत्रसंशोधनं यथा न हि इत्तबाक़ सिफ़त ज़ो ज्वाद स्वाद (ظ ض ص) इत्येषां वर्णानाम्। अपितु क़ाफ़ काफ़ जीम ते तो दाल नून बे मीम (ق ك ج ت ط د ن ب م) एषामेव इत्तबाक़ वक्तव्या। ظ ض ص ज़ो ज्वाद स्वाद एषां तु इन्फ़ताह एव।

१६ वस्तुतस्तु सिफ़ात द्विधा विभाज्याः। अन्दरूनी बाहरी, तत्र जिह्वायाः ताल्वादिभिः सामीप्यं असामीप्यं वेत्यादि विषयिकाः अन्दरूनी शेषाः बाहरीति। तत्र इत्तबाक़ (स्पृष्टम्) इन्फ़ताह (ईषत्स्पृष्टम्) इस्तआला (ईषद्विवृतम) इस्तफ़ाल (विवृतमिति) इति चतस्रः पृथक् निर्देष्टव्याः। एताः सिफ़ातवर्णने प्रतिवर्णं पृथक् दर्शयितव्याः। अतः एतस्य वर्णस्य किं मख़रज, किं अन्दरूनी सिफ़त, किं वा बाहरी सिफ़ात, किं क़ूवत, तथा च मुफ़ख़्ख़म वा मुरक़्क़क़ इति पञ्चधा दर्शयितव्याः।

१७ बाहरी सिफ़ातेषु येषां वर्णानां रख़ूवत तेषामेव हम्स तथा च येषां शिद्दत तेषामेव जहर इति तथाच सहास्तित्वेऽपि रख़ूवतपूर्वकमेव हम्स, शिद्दतपूर्वकमेव जहर। न तु हम्स रख़ूवत, जहरशिद्दत इति।

१८ तथा च अज़लाक़ वा अस्मात इति द्रष्टव्या।

१९ क़लक़ला, तकरारौ तु दोषौ। अतः न ग्राह्यौ तफ़सी सफ़ीरौ तु शीन सीनयोः वर्णत्वमेव तेऽपि न ग्राह्ये।

२० यकारवकारयोः लीन इति नोचितं न हि व्यञ्जनवर्णो मद भवति कदापि, व्यञ्जनेषु दीर्घत्वाभावात्। दीर्घत्वप्राय एव मद उच्यते।

२१ इन्हेराफ़ तु वृथा कल्पिता। न काचिदत्र उच्चारणविचित्रता। वर्णत्वमेव।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२२ इदानीं यथा मख़रज सिफ़ात हरूफ़ तहज्जी प्रकाश्यते तत एव सर्वमेव ज्ञेयम् ।

अज़ाफ़ुलहरूफ़ मुरक़्क़क़

			शिद्दत जहर अज़लाक़	अक़वा मुफ़ख़्ख़म	शिद्दत जहर अज़लाक़ क़ल्क़ला	अक़वा मुफ़ख़्ख़म	रख़ूवत हम्स अज़लाक़	क़वी मुफ़ख़्ख़म
इस्तफ़ाल								آ إ أ ا ع
इस्तबाक़	हलक़	حلق	×	×	×	×	ق	ک
	तालु	تالو	×	×	ج	×	×	
	दन्दां	دندان	ن	×	د	×	ط	ت
	सिफ़तैन	سفتين	م	×	ب	×	×	

इन्फ़ताह	रख़ूवत हम्स अस्मात मुत-मुर½ मुफ़½	ف	× ×	خ
	शिद्दत जहर अज़लाक़, मुत-मुर½ मुफ़½	×	ز ذ ظ ض	غ
		شفتين	تالو	حلق
	शिद्दत जहर अज़लाक़ मुत-मुर½ मुफ़½	و	ر ل	ى
		شفتين	دندان	تالو
इस्तआला	रख़ूवत हम्स अस्मात ज़ईफ़ मुरक़्क़क़	ح ۴	ث س ص	ش
		حلق	دندان	تالو

حروف بخود — حروف صحيحه

२३ कथमपि स्वीकृते क़ल्क़ला सिफ़ते, जीम दाल बे इति त्रिष्वेव सा न तु तोक़योः ।

अत्र इस्तबाक़त्वात्ते मुफ़ख़्ख़माः क़वी च । तेष्वपि शदीदाः, अक़वा एव शक्तौ इन्फ़ताहत्वात्ते ख़ग़यादयोऽर्द्धमुफ़ख़्ख़मा, मुतवस्सिताश्चशक्तितः । इस्तआलात्वात्ते शादयो मुरक़्क़काः ज़ईफ़ च शक्तितः । इस्तफ़ालत्वात्ते हरकातदयः अज़ाफ़ुलहरूफ़ मुरक़्क़क़ाश्च । तथा च हरकताः हरूफ़ बख़ुद, शेषाः हरूफ़ सहीह इति ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२४ फ़ारसी भाषायां ग च प वर्णानां सत्त्वादरबीवर्ण-समाम्नायात्फ़ारसी-वर्णसमाम्नायः श्रेष्ठतरस्तद्यथा ।

×	×	گ	×	ک ق
×	×	ج	×	چ
ن	×	د	×	ط ت
م	×	ب	×	پ

शेषं पूर्ववत् ।

२५ भारतीयभाषासम्पर्कादुर्दूवर्णसमाम्नायोऽधिकः श्रेष्ठः । श्रेष्ठतम इति । तद्यथा—

×	×	گ	×	ک ق
×	×	ج	×	چ
×	×	ڈ	×	ٹ
ن	×	د	×	ط ت
م	×	ب	×	پ

२६ द्वितीय चतुर्थं वर्णनिर्वाहाय प्रथमतृतीयवर्णलिपिभिः सह ه हे इत्यस्य योगो ھ इति लिपिद्वारा प्रयासः साधुः तद्यथा ।

×	گھ	گ	کھ	ک ق
×	جھ	ج	چھ	چ
×	ڈھ	ڈ	ٹھ	ٹ
ن	دھ	د	تھ	ط ت
م	بھ	ب	پھ	پ

२७ तथापि पञ्चमवर्णास्तु कण्ठचतालव्यमूर्धन्याः लिपिभिरनिर्देश्या एव । अद्यावध्यपि-तल्लिप्यभावः ।

२८ अतएवारबीहरूफ़तहज्जी, फ़ारसी उर्दू हरूफ़तहज्जीभ्यां अवरा क्रमश्चावैज्ञानिकः । भाषास्वभावत्वात्तेऽनेकान् ग च प ट डादीन वर्णानुच्चारयितुमशक्ताः सन्तोऽपि ते स्वकीयां हरूफ़ तहज्जीं भाषां सर्वाभ्यः सुस्पष्टां ब्रुवन्ति सैषा जड़ता । भारतीयारबीविदुषां तु महतीजड़ता यज्जानन्तोऽपि ते तथैव मिथ्याधारणां पालयन्ति पोषयन्ति च । पुनरपि अरबीवर्णसमाम्नायः (हरूफ़ तहज्जी) तु मखरज सिफ़ातानुसारेण मत्क्रमे एवाध्यापकैरध्यापयेत । भाषादृष्टचा तु अरबी भाषायाः वैज्ञानिकत्वे न हानिः । तद्यथा निरौष्ठेण दशमेन राजकुमारेण दशकुमारचरिते वर्णिता अन्तिमा कथा निरौष्ठ्यवर्णा अर्थात् प फ ब भ म आदिरहिता उ ऊ

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ओ औ आदि स्वर रहिता च वैज्ञानिकी अस्त्येव । तथैव ग च प ट ड आदि वर्णरहिताऽपि अरबी भाषा वैज्ञानिकी । प्रकृतिप्रत्ययादिकल्पनया मनोरमव्याकृतिपद्धत्या संस्कृतवदेव वैज्ञानिकी । केवल इल्मतजवीद एव न साधुः अरबीवर्णसमाम्नायश्च अवैज्ञानिकः ।

२९ विज्ञातं खल्वन्वेषणैर्यदरबीवर्णमाला शिक्षाशास्त्रानुसारेण न निर्मिता, न चापि तदनुसारेण कर्तुं गभीरतया केनापि विचारितमेव । इस्लामधर्मस्य प्रारम्भे अन्यदेशीयानां शुद्धशुद्धक़ुरानपाठार्थमेव, अबजद, हव्वज़ ابجد هوز इत्यादि प्राचीनवर्णमालां विहाय समानस्वरूपवर्णानां संकलनमेकत्र कृत्वा नवीनैषा वर्णमाला कृता वर्णभेददर्शनायैव केवलम् । यदिदं ب बे इदं ت ते इति विन्दुचिन्है भेदः कृतः । अस्मिन् वर्णक्रमे शिक्षाशास्त्रस्य लेशमात्रमपि सम्बन्धो नास्ति । यदातु अरबीभाषातद्व्याकरणाध्ययनार्थं स्थानप्रयत्नानुसारं (मख़रज सिफ़ाता-) नुसारमेव वर्णक्रमः स्यात्, वर्णभेदज्ञानन्तु स्वयमेव भवति । किं पृथक् पृथक् पठनेऽपि ت ते ف फ़े इत्येतयोर्भेदज्ञानं न भवति ? तथैव و व د द विषयेऽपि किं भेदज्ञानं न भवति ? संस्कृतवर्णमालायामपि व ब योर्मध्ये ग म योर्मध्ये भेदज्ञानं स्वतोभवत्येत्र । अत एवारबीवर्णमालाया अपि क्रमः शिक्षानुसारेणैव स्यात्तेनैवोभयमपि सेत्स्यते । कोमलबुद्धि शिशूनां कृते तु किञ्चिदुपयोगी क्रमोऽयमवश्यमेव । किन्तु अन्तं यावन्नैषा वर्णमाला (हरूफ़ तहज्जी) उपयुक्ता । प्राचीना अबजद हव्वज़ आदि क्रमोऽपि न साधुः । शिक्षानुसारं तत्रापि क्रमाभावात् । अत एवारबीविद्वद्भिरवधेयं विचार्यञ्च गम्भीरतया तथा च य उपयोगी क्रमः स्यात् स एव ग्राह्यः । विश्वसिमि यन्मया कृतः क्रम एव तेभ्यो रोचिष्यते ।

॥ इति श्रीजगदीशाचार्यविरचिते अरबीशिक्षाशास्त्रे अक्षरसमाम्नाय-वर्णक्रमालोचनाविज्ञानीयो नवमोऽध्यायः ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ मख़रजविमर्श विज्ञानीयो दशमोऽध्यायः

१ तत्र अलिफ़ ا हम्ज़ा ء हे ه ह़ ح ऐन ع ग़ैन غ ख़े خ हलक़ी कण्ठ्याः ।

२ क़ाफ़ ق काफ़ ک जीम ج शीन ش ये ی तालवी तालव्याः ।

३ ज़्वाद ض अयं तु इज़रास उलियायी (वृहद्दन्तमूलीयः)

४ लाम ل नून ن रे ر दन्तमूलीयाः ।

५ तो ط दाल د ते ت सनाया उलिया मूलीयाः (सन्मुखस्थोर्ध्वदन्तद्वय मूलीयाः) ।

६ ज़ो ظ ज़ाल ذ से ث सनाया उलिया तटीयाः (सन्मुखस्थोद्ध्र्वदन्त द्वय तटीयाः) ।

७ स्वाद ص ज़े ز सीन س सनाया तटीयाः (सन्मुखस्थ दन्तचतुष्टय तटीयाः) ।

८ फ़े ف अयं तु अधरोष्ठ सन्मुखस्थोद्ध्र्व दन्तद्वयतटीयाः ।

९ वे ب मीम م वाव و उभयोष्ठ्याः ।

१० ग़ुन्ना ں ँ अयंतु ख़ैसूमवत् अनुनासिकः

अथ मख़रजतुलना विज्ञानीयश्चक्रः

वर्णाः		मखरज	स्थानम्	टिप्पणी
अलिफ़	अ			कण्ठचौ अहौ अ़ ह़ ग़
हम्ज़ाये	अ			ख़ तुसंस्कृते न गृह्यन्ते
लघु हे	ह			दोषवत्वात् अकुह-
महान् हे	ह़	हलक़	कण्ठः	विसर्जनीयाः कण्ठयाः ।
ऐन	अ़			तत्र अ ह ग ख
ग़ैन	ग़			:निर्दिष्टाः। कण्ठया-
ख़े	ख़			स्तत्रापि ।
क़ाफ़	क़	अक़्सा ज़बान + तालु	जिह्वयाः जिह्वा मूलीयाः	क़ तु दोषवानेव
काफ़	क		इत्येके इति पाणिनिः	तस्मात्संस्कृते न गृह्यते
जीम शीन ये ज श य		वस्ते ज़बान + तालु	तालव्याः	अत्र तु न भेदः

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ज़्वाद ज़	इज़रासे उलिया मूल		दोषत्वान्न गृहीतः
लाम नून रे ल न र	दन्तमूल	लनौ-दन्त्यौ र-रो दन्त-मूलमित्येकेषाम्	रेफस्य मूर्धाऽस्ति दन्त-मूलमपि केचित् इति पाणिनिः
तो दाल ते त द त	सनाया उलिया-मूलम्	दन्त्याः दन्तमूलस्तु तवर्गः इति पाणिनिः	न भेदः
ज़ो ज़ाल से	सनाया उलिया तटम्	सकारो दन्त्यः	दोषवत्वान्न गृहीताः
स्वाद ज़े सीन स ज़ स	सनाया चतुष्टय तटम्	स-दन्त्यः	दोषवत्वान्न गृहीतो ज़कारः,
फ़े फ़	अदना लब+सनाया उलिया तटम्	अधरोष्ठः+ऊर्ध्वदन्त-तटम्	दोषवत्वान्न गृहीतः
बे मीम वाव ब म व	ओष्ठौ (सिफ़तैन)	ब म व औष्ठचाः	न भेदो मस्य नासिका च
गुन्ना ँ अनुस्वारः, अनुनासिकः	ख़ैशूम्	नासिका	न भेदः

१ यस्तु ककारो जिह्वामूलीय उक्तः सोऽपि (कवर्गाविर्णानुस्वारंजिह्वा-मूलीयाः जिह्वचाः) इति चापिशलिपाणिनी च ब्रूत एकेषाम्। मतमिति।

२ रेफस्य दन्तमूलीयत्त्वञ्चोक्तं तद्यथा (रो दन्तमूलमित्येकेषामिति) इतिचापिशलिपाणिनी अपि ब्रूत एकेषांमतम्। स्थान सूत्र १४-१३।

३ तकार दकारयोस्तु दन्तमूलीयत्वमपि तद्यथा (दन्तमूलीयस्तुतवर्गः) इति पाणिनिः। स्थानप्रकरणे १४ सूत्रे।

४ तत्र जिह्वामूलन्तु कण्ठे भवतीति कण्ठ एवोक्तः दन्तमूलमपि दन्त एवेति दन्ता एवोक्तः।

॥ इति श्रीजदीशाचार्यविरिचते-अरबीशिक्षाशास्त्रे
मख़रज-विमर्श-विज्ञानीयनामा दशमोऽध्यायः ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ मिथ्यावर्णकल्पनाविज्ञानीय एकादशोऽध्यायः

१ संस्कृते अ़ क़ ख़ ग़ ज़ फ़ ह़ वर्णाः न गृहीता अक्षर समाम्नाये। दोषवत्वात्। एक एव हि वर्णः शुद्धः क़ वा क इति तथैव ख़ ग़ ज़ फ़ाः वा ख ग ज फा इति तत्र कलो नाम दोष एव तेषामिति ज्ञेयम् ऊष्म-त्वदोषोऽपि महाप्राणे निवृ त्तो भवति। तथापि देश भेदान्न विरुन्धे।

२ लेखन-पठन-पाठन-श्रवणादिषु न भ्रमो जायते तस्माद्ग्राह्याएव।

३ सौन्दर्योत्पादकाश्चैते भाषायाः। अतोऽपि ग्राह्याः

४ ज़ाल ज़्वाद ज़ो वृथैव पठिताः। उच्चारणे एषु भेदो न वैज्ञानिकः सर्वथा कृत्रिमः तथैव तो, से, स्वाद विषयेऽपि ज्ञेयम्।

५ यत्तु संस्कृते श ष साः पठिताः तत्र तु यश्चोष्मध्वनिः स चवर्गयोगे शकार एव टवर्गयोगे षकार एव तवर्गयोगे सकार एव स्वभावतो भवत्येवेति स्थान भेदाद्ध्वनि भेदोऽपि तद्यथा शीन सीनयोः। यैस्तु ते तो इति तत्र तु सर्वथानुचितः। एक एव तौ, सीन से स्वाद एक एव, ज़ाल ज़्वाद ज़ो ज़े एक एव।

६ ते तो-ज़ो ज़ालादौ सिफ़ातानुसारं भेदः क्रियते तदप्यवैज्ञानिकम्। संशयोस्त्वस्ति।

७ यस्तु ते तो इत्येतयोः तथा स्वाद सीनसेषु तथा च ज़ो ज़ालादिष्व-भेदः उक्तो मया, सः प्रतिपाद्यते। ते तो इत्येतयोः मख़रज-दृष्टचा न भेदः नोके ज़बान+सनाया उलियामूलमिति द्वयोरपि मख़रज। एतयोर्भेदस्तु सिफ़ात-दृष्टचा। क्रियते तद्यथा ते इत्यस्य–

ते ت इन्फ़ताह ह़म्स शिद्दत इस्तफ़ाल, इस्मात। मुतवस्सित मुरक्क़क़।
तो ط इत्तबाक़ जहर शिद्दत इस्तआला, इस्मात। अक़वा मुफ़ख़्ख़म।
अत्र ते इत्यस्यापि इत्तबाक़ एव सिफ़त वर्तते तथा चोभयोः ت ط इत्तबाक़, रख़्वत, ह़म्स, अज़लाक़। क़वी तफ़ख़ीम इति अतएव ते तो एक एव।

अरबी इलमतजवीदविद्भिः ते ت इत्यस्य इन्फ़ताह शिद्दत इस्तफ़ाल इस्मात। मुतवस्सित इत्यसाम्प्रतमेव इति तेषां सिफ़त निर्धारणे गभीर-त्रुटयः सन्ति। तथैव सीन स्वाद सेषु ज़ाल ज़ो ज़्वाद ज़ेषु च अभेद एव।

८ यस्तूच्यतेऽर्थभेदो भवति तत्तु भ्रम एव। एकस्य शब्दस्य बहवोऽर्था भनन्तीति कृत्वा तायर طائر स्थाने तायर تائر इत्यस्यापि पक्षी इत्यर्थो वक्तुं शक्यते। एतदुपलक्षणमात्रमेवोच्यते तथैव صدر वा سدر।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

صدرا वा سدرا एकेनैव शब्देनोभावप्यर्थौ ज्ञास्यन्ते तद्यथा एकस्य अजवज़ عجوز शब्दस्य ६२ अर्थाः भवन्ति। न काचिदपि बाधा। वृथावर्ण-कल्पनया तु वर्णमाला गौरवमेव।

९ तस्मात् ते तो इत्येतयोः, स्वाद सीन सेषु ज़ाल ज़े ज़ो ज़्वादेषु न भेदः एक एव त एक एव स एक एव ज इति।

॥ इति श्रीजदीशाचार्यविरचिते-अरबीशिक्षाशास्त्रे मिथ्यावर्णकल्पना-विज्ञानीया एकादशोऽध्यायः ॥

अवशिष्टविज्ञानीयो द्वादशोऽध्यायः

१ यच्चोक्तं मख़रज प्रकरणे वस्ते ज़बान+तालु, नोके ज़बान+दन्त-मूलादि तत्र तु जिह्वा (ज़बान) इति स्थानमेवार्थः। तत्र करणत्त्वा-ज्जिह्वायाः। अतएव भाषायाः नाम अरबी ज़बान (लसान) उर्दू ज़बान फ़ारसी ज़बानादि कृतम्। यतोहि ज़बानेन भाष्यते इत्यर्थः करणत्वमेवोक्तं भवति न तु स्थानत्वम्। तत्र भेदः कर्त्तव्यः।

२ अरबीविद्भिः स्वशास्त्रे संशोध्य करणत्वमेव वक्तव्यं ज़बानस्य।

३ यतुर्दूभाषायां क+ह = ख ग+ह = घ
च+ह = छ ज+ह = झ

इति प्रथम तृतीय वर्णाभ्यां सह हकारयोगेनैव द्वितीयचतुर्थाः महा प्राणप्रयत्नवन्तो वर्णाः निर्मीयन्ते तदयुक्तमेव। इत्थमेव चेत्स्यात् वाक्+हरिरित्यत्र वाखरिरेव स्यान्न तु वाग्हरि वाग्घरिर्वा। तदेतज्ज्ञापयति न हयोगेन खघादयः शब्दा विनिर्मिता भवन्ति। उर्दू भाषायामपि पृथक्पृथगेव लिख्यते तद्यथा–

کھانا	گھر	جھگڑا	چھ	आदि
खाना	घर	झगड़ा	छः इति	
कह	गह	जह	चह	

वस्तुतस्तु अरबी फ़ारसी भाषयोस्तु खघादयो द्वितीय चतुर्थ वर्ग्याक्षराणि न सन्ति। भारते तेषां निर्वाहस्तु कथं स्यादिति हयोगेनैव क्रियते तदुचितमेव। अनन्यमार्गत्त्वात् तदर्थमेव दुचश्मी हे ھ इति लिपिः कल्पिता उर्दूभाषायाम्। न स पृथक् वर्णः हे ہ इत्यस्मात् न तेन विचार्यं हिन्दी-

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भाषाविद्भिर्यत् हयोगेन खादयः सिद्धास्तस्माद् वृथैव पठिताः खघादयः समाम्नाये ।

४ वस्तुतस्तूर्दूभाषा न मौलिकी अरबी संस्कृतवदिति कृत्वा, न तत्रैता वर्णाः सन्ति । उर्दू भाषातु भारतीया हिन्दी नामधेया आर्यभाषैव, दिल्लीपति सम्राडकबरेण स्व सेनार्थमेव निश्चितैषा भाषा । तत्र लिपिस्तु अरबी फ़ारसी भाषायाः, वर्णास्तु फ़ारसी अरबी संस्कृतेति त्रिभाषायाः गृहीताः । उर्दू इत्यस्य सैन्यभाषार्थः । मिश्रितार्थत्वात् ।

५ फ़ इति वर्णस्तु ज्ञापयति न प+ह = फ़ भवति तथैव

ख़ वर्णोऽपि ज्ञापयत्येव न क़+ह = ख़ भवतीति । तस्मात् हयोगेन निर्वृत्तिरिति विचारोऽयुक्तः, अनन्यमार्गत्वादुर्दूलिपौ निर्वृत्तिः क्षम्या एव । पूर्वं संस्कृतभाषाया वर्णसमाम्नाये वर्गाणां द्वितीयचतुर्थाः वर्णाः ख छ ठ थ फाः घझढधभा इति नासन्न यतो हि आर्यपारिवारिकभाषासु ग्रीक लैटिनादिषु चैते वर्णाः नोपलभ्यन्ते, अद्यावध्यपि इति केषाञ्चिद्भ्रान्तानां मतं सर्वथा असाम्प्रतम् । अयुक्तमित्यर्थः । यतोहि आर्यपारिवारिकभाषास्वपि संस्कृतमेव प्राचीनतरम् । ततोऽपि वैदिकभाषा प्राचीनतमा । तस्मात् ग्रीकलैटिनादिभाषाणां वर्णसमाम्नायेभ्यः संस्कृतवर्णसमाम्नायः प्राचीनतरः । तत्रापि वैदिकवर्णसमाम्नायः प्राचीनतमः । न केवलं तेभ्य एवापितु भूमण्डलेऽस्मिन् सर्वतः प्राचीना ग्रन्थाः वेदाः तेष्वपि ऋग्वेद इति सर्वसम्मतं मतम् । अतः एव ग्रीकलैटिनादिवर्णसमाम्नायान् भाषाश्च दृष्ट्वा वैदिक-संस्कृतवर्णसमाम्नायसमाम्नीतवर्णपरीक्षा तद्भावाभावपरीक्षा निर्णयश्च सर्वथा कुबुद्धिद्योतक एव । ऋग्वेदादिषु वेदेषु सन्ति द्वितीयचतुर्थाः वर्णा खछठथफघझढधभा इति कृत्वा निरस्तंतन्मतम् । वस्तुतस्तु आर्यावर्ताद्दूरत्वा द्देशकालवशात् द्वितीयचतुर्थाः श षौ च, ङ ञ णाश्च अनुस्वारो विसर्गश्च यकारश्च लुप्ता इति किमेषां वर्णानामपि विषये तथैव मन्तव्यं ? यत् लैटिनग्रीकेषु शकारादयो न सन्तीति संस्कृतवर्णसमाम्नाये शकारोऽरबीतः ङकारादयश्च पश्चादाविष्कृताः ? इति इत्थं ब्रुवद्भिस्तैः स्वबुद्धिमार्जनं कर्तव्यमित्यलम् । तस्माद् हकारयोगेन खछवादीनां द्वितीयचतुर्थकाणां वर्णानां निर्वृत्तिरीति केषाञ्चिन्मतं साधु निरस्तम् । लैटिनेऽपि (एफ़) फ़कार दर्शनात्तन्मतमप्यसंगतं यदार्थपारिवारिकलैटिनादिभाषासु द्वितीय-चतुर्थवर्णाः न सन्ति । देशकालभेदात्तत्र ते लुप्ता फ़ ख़ एवावशिष्टौ इति फ़ारसीभाषायां तु ख़फ़ौउभावपि वर्तेते ज्ञापयतश्च ।

॥ इति श्रीजगदीशाचार्यविरचिते-अरबीशिक्षाशास्त्रे अवशिष्ट-विज्ञानीयो द्वादशोऽध्यायः ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथारबी वर्णमालाशिक्षांश प्रत्याख्यान विज्ञानीयस्त्रयोदशोऽध्यायः

१ तत्र पूर्वन्त्वरबीवर्णसमाम्नायक्रमः प्रत्याख्यातः सः क्रमस्तु मख़रजाद्यनुसर्यैव स्यादिति येन मख़रजादि जिज्ञासूनां सरलतया बोधो भवेदिति ।

२ ज़्वाद न पठितव्यः । हाफ़ये ज़बान इज़रासे उलियामूलमिति स्थानमपि न वक्तव्यं बहु कृत्रिमत्वात् । अस्थाने पादन्यास एव तत् ।

३ रे इत्यस्य तरफ़े ज़बान + दन्तमूलमित्यपि न साधुमूर्धास्थानत्वात् ।

४ ज़ो ज़े ज़ाल एषां नोके ज़बान + सनायाउलियातटमित्यपि न साधु यच्च मख़रज जीमित्यस्य तदेव ज़ो ज़े ज़ालस्यापि । तत्र तु केवलोष्मत्वमेवाधिकं भवत्येतेषु । न तज्जीमे इत्येव भेदः । ज़ो ज़ाल–एतावपि न वक्तव्यौ ज़े इत्येव पर्याप्तम् ।

५ ज़े इत्यस्य नोके ज़बान सनाया चतुष्टयतटमित्यपि न साधु जीमस्य यन्मख़रज तदेवास्यापि । ऊष्मात्वाधिकमस्मिन्निति । अर्थात् जीमे स्पृष्टता ज़ेकारेऽस्पृष्टता ईषद्विवृतत्वमिति ।

६ केचित्तु लाम अलिफ़ ला । इति च पठन्ति स तु सर्वथा प्रत्याख्यातः । अस्वतंत्रत्वात् लाम अलिफ़योः पूर्व पाठत्वात् ।

७ हम्ज़ा-इत्यपि प्रत्याख्यातः । न हि हम्ज़ा कोऽपि वर्णः । सतु फ़तहाकसरह ज़म्मह आदि एराबानामाधारीभूता रेखामात्रमेव । न तत्र वर्णत्वं बर्तते वर्णास्तु अ इ उ इतिस्वरा फ़तहह-कसरह-ज़म्मह एव किन्तु तेषाँ लिप्यभावात् रेखामाधारीकृत्य तेऽभिव्यज्यन्ते । अतएव तस्य नाम हम्ज़ा अर्थात् अभिभूतध्वनिरिति कथ्यते । हम्ज़तो इति अरबीधातुजः ।

।। इति श्रीजगदीशाचार्य विरचिते-अरबीशिक्षाशास्त्रे वर्णमाला-
शिक्षांशमख़रज-प्रत्याख्यान विज्ञानीयस्त्रयोदशोऽध्यायः ।।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथ सिफ़ात प्रत्याख्यान विज्ञानीयश्चतुर्दशोऽध्यायः

१ स्वाद तो ज़ो ज़्वाद एतेषां चतुर्णां वर्णानां सिफ़त इत्तबाक़ (स्पृष्ट) प्रयत्न उक्तः। तत्र स्वाद इत्यस्य मख़रज नोके ज़बान+सनाया सिफ़लीतट सनाया उलिया सम्पर्कसहितं (मय इत्तसाल सनाया) उलिया इति चोक्तम्। तत्र तालु न मख़रजोऽस्य स्वाद वर्णस्य तत्र तालुना जिह्वायाः स्पृष्टतायाः का वार्ता। तस्मान्न स्वादित्यस्य इत्तबाक़ सिफ़त वक्तुं शक्यते। यतो हि तालुना सह जिह्वाया योगः (स्पर्शः) एव इत्तबाक़ उक्तः वस्तुतस्तु ज़बान-तालु-संयोग इति न वक्तव्यम् ज़बानं करणमुक्त्वा स्थानकरणयोः (मख़रज ज़बानयोः) अन्ययोश्च स्पृष्टत्वं वक्तव्यम्। तेनोष्ठोभयेऽपि सेत्स्यति इत्तबाक़ सिफ़त। तथा च सीन स्वाद एतौ हरूफ़ सफ़ीरा अपि उच्येते यदि चेज़्ज़बान तालुना स्पृष्टा भवेत्तदा वंशीवध्वनिर्नस्यात् किन्तु सफ़ीरत्वं भवत्येवेति तत्रापि न युक्तः। अस्य सिफ़त इत्तबाक़ इति प्रत्याख्यातो ज्ञेयः। ज़ो ज़्वाद एतयोरपि श्वासनिःसरणादूष्मत्वं तेन (ईषत्स्पृष्टं) इन्फ़ताह एव वक्तव्यम् न तु इत्तबाक़, इति प्रत्याख्यातः। अतः स्वाद ज़्वाद ज़ो एतेषां इन्फ़ताह एव सिफ़त वक्तुमुचिता। तथा च शेषाणां इन्फ़ताह इत्युक्तं तत्रापि बहुषु न साधूक्तम्। तद्यथा बे मीम वाव एषाँ मख़रज तु अक़्सा व अदना लब (उभयौष्ठम्) तत्र इन्फ़ताह इति न सिद्ध्यति, ज़बान तालुनाः परस्परं दूरत्वमपि सिद्ध्यति उभयोष्ठ मख़रज्त्वात्। ज़बान तालु मख़रजवत्स्वपि तथैव ज्ञेयम् विचार्यम्।

२ तथैव जहर हम्सयोः, शिद्दत रख़्वोः, इस्तआला इस्तफ़ालयोः, अज़्लाक़ अस्मातयोरपि दोषाः सन्ति।

३ क़ुर्रादीनां मते अज़्लाक़ास्मातौ न भवतः तन्नोचितम्।
अज़्लाक़ास्मातौ तु भवत एव। एतावप्यावश्यकौ।

४ रे वर्णे तकरीर सिफ़त वर्णिता किन्तु हेया इत्युक्ता। तत्र तु हेया इति तु साधु किन्तु हेयाया गणना सिफ़ातेषु न कार्या, दोषेषु कार्या। इति सिफ़त तकरार सर्वथा प्रत्याख्याता। दोषत्वात्।

५ स्वाद सीनयोः नाम सफ़ीरो दत्तम्। वंशीवद्ध्वनिकारक त्वात्। तदपि न साधु वंशीवद्ध्वनिस्तु तालव्यशकारोच्चारणेऽर्थात् शीन वर्णे एव भवति। अतः शीन एव सफ़ीरो वक्तव्यः। प्रत्यक्षे किं प्रमाणम्। उच्चार्यानुभूयते अनुभूयतां तावत्। तस्मात्स्वाद सीनयोः सफ़ीरत्वमपि प्रत्याख्यायते। तफ़सी+सफ़ीरौ द्वे सिफ़ात शीनस्यैवेत्यर्थः। तस्मात्स्वाद सीनयोः सफ़ीर न वक्तव्यम्।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

६ इस्तताला सिफ़त ज़्वादस्य कथिता तत्र वर्णसिफ़तोभयमपि प्रत्याख्यातम् । वृथा हि कल्पना ज़्वादस्यास्ति तस्मात् इस्तताला सिफ़तस्यापि वृथैव कल्पना । तत्र ज़्वाद, ग़्वाद वा द्वाद वेति किं वक्तव्यमिति विवादोऽपि वृथैव ।

।। इति श्रीजगदीशाचार्य विरचिते-अरबीशिक्षाशास्त्रे सिफ़ात प्रत्याख्यान विज्ञानीयश्चतुर्दशोऽध्यायः ।।

अथारबीवर्णलिप्युच्चारणप्रत्याख्यान क्रान्ति विज्ञानीयो पञ्चदशोऽध्यायः

अथेदानीं कात्स्न्येंन विशदीक्रियते स्वमतम् ।

१ तत्र खलु पूर्व तो प्रत्याख्यायते, सति ते इत्यस्मिन् तो वृथैव कल्पितः ध्वनिविज्ञानानुसारेण तु ते तो इत्येतयोर्मध्ये भेद एव नास्ति । समानध्वनित्वात्समान मख़रज (स्थान) त्वात् । एतयोः सिफ़तादि भेदस्तु सर्वथाऽसाम्प्रतम् । तदग्रे निदर्शयिष्यते ।

२ ज़ो ज़ाल ज़्वाद इति त्रयोऽपि प्रत्याख्याताः । सति ज़े इत्यस्मिन् ज़ो ज़ाल ज़्वाद वृथैव कल्पिताः सर्वेषु समानध्वनित्वान्न भेदः । यत्तु मख़रजसिफ़ातादिभिर्भेदः क्रियते तदसंगत एव ।

३ से स्वादावपि प्रत्याख्यायेते । सति सीने, से स्वादौ वृथा कल्पितौ एतेष्वपि समानध्वनित्वान्न भेदः ।

४ ये (वृहत्) मजहूला, प्रत्याख्यायते । सति ये (लघु) मारूफ़ा नान्यो ग्राह्यो यतो हि न व्यञ्जनेषु मारूफ़ मजहूलेति भेदो भवति । स्वीकृतेऽपि भेदे यथा वाव सकृदेव पठितोऽक्षरसमाम्नाये तथैव येऽपि सकृदेव पठनीयः । येवत् वावपि मारूफ़ा मजहूला मन्यते किन्तु न पठ्यते पृथक् पृथक् तथैव येऽपि न पठनीयः ।

५ हम्ज़ा इति तु न कोऽपि वर्णः । सतुवर्णसमाम्नाये ग्राह्य एव नास्ति । अतएव हल्क़ी (कण्ठ्यः) इति मतमेव वृथा प्रतिपादितम् ।

६ लाम अलिफ़ ला च प्रत्याख्यातः पृथक् पृथक् निर्दिष्टत्वात् । लाम, अलिफ़ इति ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

७ अरबीवर्णसमाम्नाये टवर्गस्तु सर्वथोच्छिन्नः तथैव फ़ारसी वर्णसमाम्नाये च। अरबदेशीयाः टवर्गोच्चारणेऽसमर्थाः अतएवारबी वर्णसमाम्नाये कुतः समायान्तु ? अतो मूर्धास्थानमपि न मन्यते।

८ तथैव चकारोऽपि नास्ति यद्यपि जीम इति जकारो वर्तते तृतीयो वर्ग्याक्षरम्।

९ तथाच कवर्गेषु तृतीयो गकारोऽपि चारबीवर्णेषु न वर्तते। फ़ारसी तदनुसारणि उर्दू वर्णसमाम्नाये च चकारो गकारश्चौभौ वर्तेते।

१० मूर्धन्यानामभावे एव मूर्धन्यषकारोऽपि न वर्तते।

११ रेफस्तु मूर्धन्यः। तथापि अरबी-वर्णसमाम्नाये वर्तते मूर्धन्यानामन्येषामभावेऽपि, मूर्धास्थानेऽस्वीकृतेऽपि तदुच्चार्यते तैः। तत्कथमिति चेच्छृणु। अरबीशिक्षायां रेफो दन्तमूलीय उक्तः दन्तमूलेनोच्चार्यते। पाणिनिरपि पठति सूत्रम् (दन्तमूलमपि केचित्) इति। तथा चापिशलिरपि वदति (रो दन्तमूलमित्येकेषाम्) अर्थात् पाणिन्यापिशल्योरन्येषां केषाञ्चिदाचार्याणां मते रेफो न मूर्धन्योऽपितु दन्तमूलीय इति अतएवात्रारबीशिक्षाचार्याणां मतमपि स्वीकर्तव्यमेव। तत्र निर्विवादमेतन्मतं यदरबी शिक्षायां मूर्धास्थानं न मन्यते मूर्धन्यानां वर्णानामुच्चारणाभावात्। अत्र तु मया दोषो न दीयते यतोहि देशभेदादुच्चारणासामर्थ्ये न दोषः न कश्चित्प्रकृतिमतिक्रान्तुं समर्थो भवति।

१२ श्रूयतेऽद्यत्वे यत् हज्जार्थं गतैर्भारतीयैः सह प्रतिवर्षमालापैः शनैः शनैररबदेशीया अपि ग, च ट डादि वर्णान्यथाकयञ्चिदुच्चारयितुं समर्था भवितुं समारब्धाः इति।

१३ अत्यन्तमहत्वपूर्णाश्चैतेऽध्यायाः साम्प्रतं सार्द्धमासिकदाम्पत्यप्रेमकलहपूर्णविवादैरत्यन्तव्याकुलमनसा व्यग्रबुद्धिना मया येन केनापि प्रकारेण परिसमाप्तुं समारब्धाः यतो हि मयि प्राणसंकट इव परिदृश्यते। इदानीमपि प्रणयन्निमं ग्रन्थं प्रत्यक्षरं लेखन्यां संसरत्यामपि मे मस्तिष्कमत्यन्तमव्यवस्थितमिति रहस्यं विजानता पाठकेन स्वाध्यायिना क्षन्तव्योऽहम्। तथा चानुचितं हेयम्।

१४ अलिफ़ इति अकारो व्यञ्जनवन्मन्यते। अत एव सर्वदा साकिन् (हलन्तः) अज्रहितः सम्प्रयुज्यतेऽन्ते एव, तथा च तस्मिन्न कोऽपि हरकत (अ इ उ) फ़तहः (ज़बर) कसरह (ज़ेर) ज़म्मह (पेश) इति दीयते साकिन अर्थात् हलन्तस्वभाववत्त्वात्। तदेतदपि प्रत्याख्यायते यन्नायं अलिफ़ व्यञ्जनम्। स्वरव्यञ्जनविषये अरबी शिक्षाविदाचार्या महति तमसि निमज्जिताः। तदग्रे पृथगध्याये विस्तरेण निरूपयिष्यामि।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

१५ उच्चारणविषयेऽपि ज़्वादित्यस्योच्चारणं वहुकृत्रिमत्वात्प्रत्याख्यायते। वर्णे प्रत्याख्याते सति तदुच्चारणं तु स्वत एव प्रत्याख्यातो भवति। तथैव सर्वेषां प्रत्याख्यातानां वर्णानां विषयेऽपि तत्तदुच्चारणं प्रत्याख्यातं वेदितव्यम्।

१६ ज़्वादित्यस्य ज़्वाद द्वाद ग़्वादिति त्रिविधिमुच्चारणं मतभेदेन दृश्यते तदेतत्सर्वमेवासाम्प्रतम्।

१७ लिपौ च ये ये वर्णाः प्रत्याख्यातास्तेषां तेषां लिपिरपि प्रत्याख्याता वेदितव्या। तद्यथा, तो, से स्वाद, ज़ाल ज़ो ज़्वाद, ये (मजहूला) हम्ज़ा, लाम अलिफ़ ला इत्ये तेषां लिपयः प्रत्याख्याताः।

१८ अन्वेषणाज्ज्ञायते यत्प्रारम्भेऽरबीवर्णसमाम्नाये अबजद् हव्वज़ इत्यतः क़ुर्शत पर्यन्तमेव वर्णा आसन्निति तेषु ثخذ ضظغ सख़ज़ ज़ज़ग़ अर्थात् से ख़े ज़ाल, ज़्वाद ज़ो ग़ैन इति षडवर्णाः आसन्नेव न। अस्य कारणं त्वेतदेव यत् यतोऽयमरबीवर्णसमाम्नायो गृहीतः तत्रापि इबरानी आदि वर्णसमाम्नायेऽपि षड्वर्णा इमे नासन्। अत एव इबरानीतोऽयं वर्णसमाम्नायो गृहीतः। किन्तु पश्चादरबीवर्णसमाम्नाये इमे वर्णाः कस्मिन्काले कुतो वा आयाताः इति सर्वथैवाद्यावध्यपि अज्ञातमेव। अत एव ध्रुवमेवैतन्मम-मतं यदिमे वर्णाः स्थानप्रयत्नदृष्टचा मिथ्यैव स्वीकृताः। तत्र यथा ग़ैन इति मिथ्या तथैव क़ाफ़ चापि किन्तु सन्देहाभावान्नैतयोः स्वीकृतयोर्मे विवादः किन्तु सति ज़ेकारे ज़ाल ज़्वाद ज़ो इत्येतेषां सति सीने स्वादसेकारस्य कल्पना मिथ्यैवेति अथवा ज़ेकारस्य लिपिभेदाः एते स्वीकर्तव्या अर्थभेदार्थमेव एतेषां वर्णत्वं तु अरबाणां मोह एव कृत्रिमोच्चारणमपि तेषां मोह एवेति। अस्मिन् विषये अल्मुजीब मासिक पत्रिका मई १९६७ ई० फुलवारी शरीफ़ पटना द्रष्टव्यास्ति। अबजद हव्वज़ इति पाठे। क़ुर्शत-पर्यन्तमपि सति सीने स्वादस्य सति तेकारे तोकारस्य च इबरानीवर्णमालायां ग्रहणमपि मोह एव वक्ष्यमाणरीत्या सीन स्वादयोः ते तोकारयोः भेदाभावात्। अत एव अरबाणां नेयं नवीना त्रुटिः यत् क़ुर्शतानन्तरं पुनः कालान्तरे ثخذ ضظغ (से ख़े ज़ाल ज़्वाद ज़ो और ग़ैन) एषां गणना कृता। अतएव वर्णमानमपि यत्तु क़ुरशत पर्यन्त ४०० आसीत् तत्तु १००० पर्यन्तमभूत्। तद्यथा—

अबजद (अ१, ब२, ज३, द४,) हव्वज़ (ह५, व६, ज़७,) हुत्ती (ह़८, तो ९, ये१०,) कलमन (क२०, ल३०, म४०, न५०,) सअफ़स (स६०, अ़७०, फ़८०, स९०,) क़ुरशत (क़१००, र२००, श३००, त४००,)पश्चात्तु, सख़ज़ (स़५००, ख़६००, ज़७००,) ज़ज़्ज़ग़ (ज़८००, ज़९००, ग़१०००) इति भूता।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यदि च इब्रानीवर्णमालायां स्वाद तो स्थाने ग़ैन ख़े वर्णौ गृहीतौ स्यातां तत्तु किञ्चिदुचितमेव स्यात् यतोहि कक़योखि गग़योः खख़योश्च भेदोऽनुचितो न ।

॥ इति श्रीजगदीशाचार्यविरचिते-अरबीशिक्षाशास्त्रे वर्णलिप्युच्चारण-प्रत्याख्यानक्रान्तिविज्ञानीयोनामापञ्चदशोऽध्यायः ॥

अथारबी शिक्षाविदज्ञानविज्ञानीयषोडशोऽध्यायः

१ तत्र शिक्षाविषयेऽरबीशिक्षाविद आचार्या महति तमसि निमज्जिता, कः स्वरः किं व्यञ्जनमर्थात्कतिविधा वर्णा भवन्ति इति नावगच्छन्ति । सन्ति च वर्णा येऽन्यसाहाय्येन विना स्वेनैवोच्चार्यन्ते । अत एव ते स्वर-नामाधेया उक्तास्तद्यथा अ इ उ ए ऐ ओ औ इति । सन्ति च वर्णा ये त्वन्यवर्णसाहाय्येन विना कथमपि उच्चारयितुं न शक्यास्त एव व्यञ्जनानि निगद्यन्ते तद्यथा क ख ग त प द ध य व श सादयः । किन्तु अरबी-शिक्षायां नैतद्विचारितं क्वचिदपि । अत एवारबी वर्णसमाम्नायः सर्वथाऽपूर्ण एवाद्यावध्यपि वर्तते । न चारबीभाषायां स्वरध्वनयो न सन्ति, सन्ति, अ इ उ ऐ ओ औ इत्यादयः किन्तु तेषां वर्णत्वं न स्वीक्रियते । तेषां मते तु तदीयाक्षरसमाम्नायपठितवर्णेषु त्रिधा गतयो भवन्ति, एरावनामधेया (हरकताख्या) फ़तह कसरह ज़म्मह इति (ज़बर ज़ेर पेश) तद्यथा ब बि बु, द दि दु इति । यस्तु अलिफ़ इत्यकारोऽत्र पठित आदौ, सोऽपि व्यञ्जन एव मन्यतेऽथवा बे ते आदिवर्णवन्मन्यते सोऽपि साकिन् भवति सर्वदाऽन्ते एव प्रयुज्यते तद्यथा का मा जा इति न चायं कदापि शब्दानां, पदानामादौ भवितुं शक्यते साकिनत्वात् । अफ़ज़ल अफ़अ़लु इस्लाम अुफ़अ़लु इत्यादिषु पदेषु आदौ योऽकारो दृश्यते लिपौ नायम् अलिफ़ स्वीक्रियते तैः, अपि तु अयमेव हम्ज़ा उच्यते । पदमध्येऽपि साकिन्भवति जमालादौ ।

२ हम्ज़ा इत्यस्य तिरोहितोऽप्रधानो गौणोवेति चार्थः । अर्थादलिफ़वदयं लिख्यते किन्तु एरावनामधेयहरकतानां ध्वनिप्राधान्येन अलिफ़ोऽयं गौणः । तिरोहितो वेति कृत्वा हम्ज़ानाम दत्तम् । तदेतत्सर्वमसाम्प्रतमेव । स्युश्चेदक्षरसमाम्नाये इ उ ए ऐ ओ औ इत्यादीनामपि लिपयः (खतनामधेयाः) तर्हि अलिफ़ इत्यस्य साहाय्येन इ उ आदीनां अभिव्यञ्जन-स्यावश्यकतैव न-स्यात् । न वा हम्ज़ा इत्यस्य कल्पना स्यात् । वस्तुतस्तु विवशास्ते, सत्स्वपि स्वराणामिकारोकारादीनां ध्वनिषु तदरबीवर्णसमाम्नाये

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

तदीयलिपय एव न सन्ति । अत एवारबी लिपिः स्ववर्णानपि लिखितुम-समर्था । लिप्यभावे कथं इकार उकारादीनां लेखनं सम्भवेदिति संकटे समापन्ने अलिफ़स्य लिपिमेव-गृहीत्वा तस्योद्ध्वं ज़म्मह् अधश्च कसरह् दत्त्वा उ इ निर्दिष्टे तद्यथा اُ अलिफ़ पेश उ, اِ अलिफ़ ज़ेर इ इति । वस्तुतो नायमलिफ़ अपितु रेखा, अनलिफ़त्वात् हम्ज़ा नाम दत्तम् इति रहस्यम् । अत एव शेषत्वात् फ़तहोऽपि तस्यैवोद्ध्वं दत्त्वा अ इति निर्दिश्यते । तथा च दीर्घेकारोकारनिर्देशाय अलिफ़ ज़ेर ये (मारूफ़ा) اِی ई, अलिफ़ उलटा पेश वाव (मारूफ़ा) اُو ऊ, इति त्रयाणां वर्णानां लिपिसाहाय्येन कार्यं प्रचाल्यते तथा च अलिफ़ ज़ेर ये (मजहूला) اِے ए, अलिफ़ ज़बर ये (मजहूला) اَے ऐ, तथैव अलिफ़ पेश वाव (मजहूला) اُو ओ, अलिफ़ ज़बर वाव (मजहूला) اَو औ इतीत्थं दीर्घसंयुक्तस्वराणां निर्देशः तदेतत्सर्वमेवासाम्प्रतं यतोहि ये वाव व्यञ्जने, तयोः साहाय्येन स्वराणां लिपिरयुक्तैव । स्वराणां कृते लिप्यभावादेव प्रकारान्तरोऽयं निर्देशाय गृहीतः । न च क्वचिद्वर्णेषु मारूफ़ा मजहूलेति भेदो भवति किन्तु तथा स्वीकर्तुं ते विवशा एव । तथैव ये (मादूला) वाव (मादूला) अपि भवतीति मन्यन्ते । अर्थात् यत्र यत्र तौ लिख्येते किन्तूच्चार्यन्ते न तावेव मादूला उच्यन्ते तद्यथा मूसा ईसा इत्यत्र सकारानन्तरं ये लिख्यते मूसी ईसी तथा च ये इत्यस्योपरि अलिफ़ँ साकिन कृत्वा मूसा ईसा इति पठ्यते तौ यथा موسیٰ عیسیٰ अर्थात् तत्र यकारोच्चारणं न क्रियते तथैव वाव मादूला च ज्ञेयः । तदेतत्सर्वमेवा-साम्प्रतम् । यदि लिख्यते तदुच्चारणमपि कर्तव्यं, यदि च तदुच्चारणं नाभीष्टं तस्य लोपः कर्तव्यः, लिपौ न ग्राह्य इति येन उच्चारणे श्रवणे लेखने पठने पुनश्च श्रवणे भेदो न स्यादिति, न च भ्रमस्थानं स्यादिति । कल्पितेऽपि ये मारूफ़ा ये मजहूला क्वचित् क्वचित् किमपि तयोर्भेदो न कर्तुं शक्यते तेन ईकारो वा एकारो किमुच्चारणीयमिति महान् भ्रमो जायते तद्यथा–मीरा वा मेरा इति न वक्तुंशक्यते–मीम ज़ेर ये मी, रे अलिफ़ ज़बर रा = मीरा میرا तथा च मीम ज़ेर ये मे रे अलिफ़ ज़बर रा = मेरा میرا इति । अत्र द्वयोरपि पदयोः हिज्जेऽर्थात् वर्णक्रम समान एव एक एव । यद्यपि मीरा इत्यत्र ये मारूफ़ा तथा च मेरा इत्यत्र ये मजहूला इति तदीय कथनानुसारं वर्तेते किन्तु लिपौ, अत्र भेदो दर्शयितुं न शक्यते । इमे सर्वे दोषास्त्रुटयश्च स्वरलिप्यभावादेव वर्तन्ते । अतएव विशेषज्ञैः स्वराणां लिपि निश्चयः कर्त्तव्यः । यद्यपि पृथक् पृथक् स्वरलिप्यभावे नीचै रुद्ध्वञ्च कसरह फ़तह ज़म्मह आदि प्रदानेनाल्पस्थाने एव बहु लिख्यते ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

यतो हि न किञ्चिद्व्यंजनं स्वरेण विना उच्चारयितुं शक्यम् तथा पृथक् पृथक् स्वराणां लिपित्वाद् व्यञ्जन वर्णवत्स्वरवर्णा अपि लिख्यन्ते तद्यथा (तदित्थं क्रियते) अस्मिन् वाक्ये इकारयोर्द्वे मात्रे वर्धिते तदर्थं स्थानमपि व्ययीभूतम् । अरबी फ़ारसी उर्दू लिपौ पृथक् २ स्वरलिप्यभावात् बहुस्थानं न व्ययं भवति । अत एव अरबीविदांमुद्घोषो यदुर्दूफ़ारसी तथा चारबी लेखने अल्पस्थानेऽपि बहुविषयो लेख्यतेऽतएवेयं लिपिः श्रेष्ठेति । अयं विचारो नोचितः यतोहि भयहीनो वक्रोऽप्यध्वा श्रेष्ठः, भयावहो निश्चितभयो वा ऋजुमार्गोऽपि नोचितः । तत्र अल्पस्थाने बहुविषये लिखितेऽपि उच्चारयितृ श्रोतृ लेखक पाठक श्रोतृषु भेदभ्रमयोः वर्तमानत्वात् निश्चितत्वान्मीरा-मेरा इव नायं लिपिर्युक्ता । अखिलविश्वस्मिन्नस्मिन्विषये केवलसंस्कृत लिपिरेव श्रेष्ठः । अतएवारबीविद्वद्भिः स्वकीयवर्णसमाम्नाये लिपौ च संशोधनं परिवर्तनञ्च परिवर्धनञ्च कर्तव्यमेव । न चात्र दोषो वर्तते सुधारे । यतोहि प्रारम्भेऽरबी वर्णसमाम्नायेऽनेके वर्णा नासन् बे ते से जीम हे ख़े, सीन शीन स्वाद ज़्वाद तो ज़ो आदिषु बिन्दुचिह्नाभावाद्भेद-प्रतीत्यभावात् लेखने भ्रमो जायतेस्म ते च बिन्दवः पश्चादेव आविष्कृताः तथैवात्रापि स्वरलिपिः निश्चेयः ।

अरबीलिपौ अल्पतरस्थानेऽधिकाधिकगद्यं लिख्यते । तस्य कारणत्रयं वर्त्तते । प्रथमन्तु स्वरवर्णानां लिपेरभावः । आराबाख्यस्वरचिह्नानि पंक्तेरुद्ध्वर्मधो वादीयन्ते तान्यपि प्रारम्भिककक्षायामेव, शिशूनामेव बोधाय । अग्रिम कक्षासु नैत्यिक व्यवहारे च तु दीयन्ते एव न । अतस्तेषां स्थानं व्ययीभवत्येव न । द्वितीयं कारणन्तु लिपलाधवं ह्रस्वत्वमित्यस्ति । सर्वेषां वर्णानां ह्रस्वलिपयोऽपि सन्ति ता एव प्रत्येकपदानामादौ मध्ये च प्रयुज्यन्ते तद्यथा—

इत्यादीनां	ش	س	ض	ص	خ	ح	ج	ث	ت	ب
आदयः	شـ	سـ	ضـ	صـ	خـ	حـ	جـ	ثـ	تـ	بـ

अतएव स्वल्पस्थाने बहुगद्यं समाविशति । केवलं पदान्ते एव मुख्यदीर्घलिपिः प्रयुज्यते तद्यथा خواهش غفلت इत्यत्र पदान्तयोः तकारश-कारयोलिपी दीर्घे । तृतीयं कारणन्तु ا د ذ و ر ز ط ظ (अ द ज़ व र ज़ तो ज़ो) ऐतेषां वर्णानां लिपेः केवलह्रस्वत्वमेव । एषां वर्णानां केवलं ह्रस्वलिपय एव एता सन्ति, दीर्घलिपयः सन्त्येव न । आदौ मध्येऽन्ते च सर्वत्र ह्रस्वलिपय एव भवन्ति तद्यथा ذيل دير بهادر خود इत्यादिषु । चतुर्थं कारणन्तु पदोपरि पदलेखनं पदोदरे वा पदलेखनं वर्तते

كيا توج عالم

तद्यथा تغلث محجوب इति। पंचमं कारणमपि मुख्यपंक्तेरुद्र्ध्वं-मधश्च वर्णे वर्णयोजनपद्धतिः। तद्यथा تعليم (तालीम) इत्यत्र मुख्यपंक्तौ तु केवलं ऐन ये इत्येव द्वौ वर्णौस्तः त लौ तु ऊद्र्ध्वंस्तः। मीम (म) इति तु अधोवर्तते युक्तः। तेनाधिकस्थानं न व्ययी भवति। किन्त्वेतत्तु केवलमेकपंक्तिमात्रे एव वक्तुं शक्यते। स्थानदृष्टया तु नेयमुक्तिः साध्वी। यतो हि सामान्यतयानेकवर्णानामूद्र्ध्वाधः संयोजनप्रथया पंक्ते-रुद्र्ध्वमधश्च मिलित्वा त्रिगुणं द्विगुणं वा स्थानं व्ययीभवति। संस्कृते न तथा प्रथा। केवलं र एवोद्र्ध्वं योज्यते चेत्संयोगादिर्भवति। न तु सामान्येन। अतो यावतिस्थाने अरवीलिपौ एकपंक्तिर्लिख्यते तावति स्थाने संस्कृतनागरीलिपौ द्वे पंक्ती सरलतया सामान्यरूपेण लिख्येते तद्यथा (तालीम अक्बर تعليم اكبر) अत्र स्थाने न किमप्यन्तरम्। अतएव स्वल्पस्थानेऽरवीलिपौ बहुगद्यं लिख्यते इति तु मिथ्योक्तिरेव। तथा च संस्कृते न लिख्यते इति तु मिथ्यारोप एव तेषाम्। समानस्थाने समान एव विषयो गद्यं वा लिख्यते। अतएव अरवी फ़ारसी उर्दू विदुषां प्रचारो मिथ्यैव। अन्यच्च दोषग्रस्ता हि लिपिररवीभाषायाः। स्वरवर्णलिप्य-भावात्संदेहयुक्तत्वात्। सर्वदैव सर्वत्र सन्देह एव भवति। लेखक-पाठकयोरैक्यं न सम्भवति तद्यथा (चचा जान अजमेर गये, हम रुई लिये हैं आप भी रूई लीजिए) इति वाक्यं (चचा जान आज मर गये, हम रोइ लिए हैं आप भी रोई लीजिए) इति पठित्वा महाननर्थो जातः। अतएव अरवीलिपेरेव नहि अपितु भूलोके सर्वभाषालिपिभ्योऽपि संस्कृतनागरी लिपिः श्रेष्ठेति ध्रुवमेव। चेदरवीलिपौ स्वरवर्णलिपयो निश्चीयन्तां तदा तु संस्कृत वदरवीलिपिरपि श्रेष्ठा भवितुं शक्यते। अत एवारवी विद्वद्भिः वर्णभेददर्शनाय यथा विन्दूनां प्रथा कृता यथा वर्णसन्देहो निरस्तः। तथैव स्वरवर्णलिपयोऽपि निश्चेयाः याभिः स्वरसन्देहोऽपि निरस्तो भवेत्। अतः साम्प्रतं तु अरवीलिपिः संस्कृतलिपेः वहुहीना वर्तते। अत उर्दू-विद्वद्भिःअरवीलिपिपक्षपतिभिश्च श्रृगालैरिव न मिथ्याप्रलापो विधेयो भारते संस्कृतलिपिशोभिते। यथा चोक्तंपूर्वं मया यद्दीर्घेकारोकारलेखने तथा च ए ऐ ओ औ इति लेखने अलिफ़ (हम्ज़ा)+ज़बर ज़ेर पेश+य, व इति त्रयाणां त्रयाणां वर्णानां योगेनैव कार्यं सिद्धयति। तत्रापि यदा स्वराणां साहाय्येनैव व्यञ्जनानि अभिव्यज्यन्ते न तु कदापि व्यञ्जनानां साहाय्येन स्वरा अभिव्यज्यन्ते इति तु सर्वदेशीयविद्वदभिमतं मतम्। अतएवारबीलिपौ स्वराणामभिव्यञ्जनं य व इति

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

व्यञ्जनवर्णसाहाय्येन विज्ञानविपरीतविधिरेषा। अस्य कारणं तु अरबीविदुषामालस्यमेव यत्तत्तदर्थं लिपयो नाविष्कृताः। ता आविष्कर्तव्या इत्यलम्। किञ्चित्कालात्पूर्वं मुद्रणसुगमतार्थं संस्कृतलिपौ च इकार उकारादीनां कृतेऽरबीलिपेरनुकरणं कृतम् तथा च, इ स्थाने अि, उ स्थाने अु इति लिपिः प्रारब्धा पुस्तकान्यपिमुद्रितानि। तदयं प्रयासः केषाञ्चिद्विदुषामतीव निन्दनीय एवासीत्। अतएव संस्कृतसमाजेन न स्वीकृतः। अनया पद्धत्या इकारोकारयोः स्वरत्वहानिरेव कदाचित्स्यात्। वैज्ञानिकता चापहृता स्यात्। तथा चान्योऽकारो हम्ज़ावत् कल्पितो भवेत्। तैस्तु भाविषु दोषेषु ध्यानं न दत्तमित्ति न, अपितु तेषां बुद्धौ नेयं सूक्ष्मतासीत्, अन्यथा एतादृशी त्रुटिर्न कृतास्यात्। ओ औ इत्येतयो-स्तु अकार लिपिरुचिता यतो हिसंयुक्तौ स्वरावेतौ तत्र अकार एव पूर्वं संश्लिष्टः। तथैव ए ऐ स्थाने अे अै इति लिपौ न दोषः किन्तु इ उ स्थाने तु नोचिता अकारस्यलिपिः। यतो हि नैतौ संयुक्तौ न वात्र अकारः संश्लिष्टः। अतएव अि अु इति लिपयो न ग्राह्या अन्यथा वयमपि अंगुलिनिर्देश्याःस्याम। एका तु विशेष वार्तावशिष्टा यदरबीविदां कथनमस्ति अरबीभाषायाम् एकारः अस्त्येव न। किन्तु तेषां मिथ्यैव धारणेयम्। यतो हि क़ुराने अल्हम्दु पारायाः प्रथमसूरते (मालिके यौमुद्दीन) (वैयाके न अ़बदू) (वैयाके नश्तईन) (मग़्ज़ूबे अ़लैहिम) इत्यादिषु तथैवान्यात्रापि बहुत्र एकारः परिदृश्यिते लिप्यभावादेव कसरह-चिह्नेन द्वारा अभिव्यज्यते तथा च सात्यमुग्रराणायनीयानामिव ह्रस्वैकार स्येव तदुच्चारणं कुर्वन्ति। रसूले ख़ुदा इति तु फ़ारसी भाषायां सुस्पष्ट मेवोच्चार्यते दीर्घैकार एव। अथवा कसरह चिह्नितत्वात्तु (मालिकि यौमुद्दीन) (मग़्ज़ूबि अ़लैहिम्) इत्येव उच्चारणं कर्तव्यं ह्रस्वेकारस्यैव। किन्तु नैतत्स्वीक्रियते तस्मादेकार एव सः। अरबीविदुषान्तु उच्चारणे दोषा भवन्ति एव यफ़अ़लु इत्यस्य यफ़अ़लू यफ़अ़लो इति द्विविधमुच्चारणं कुर्वन्ति। ह्रस्वस्य उकारस्य स्थाने सदैव क्रियारूपेषु दीर्घस्य उकारस्य ओकारस्य चोच्चारणं कुर्वन्ति। तदेतत्सर्वमेव लिप्यभावादेव तथा च प्रमादादेव क्रियते। अत्रारबीविद्भिः सावधानैर्भवितव्यमेव।

अतएव अल्लाह और इन्सानानामकेषण्णवतिपृष्ठीये स्वपुस्तके विशेषरूपेणप्रतिपादितमरबीलिपेरीश्वरीयत्वमसाम्प्रतम्। यतोहि यथा-पूर्ववर्णितं चारबीलिपिन्यूनत्वं बहु। अनिवार्याणां स्वराणां लिप्यभावान्नेयं लिपिरीश्वरीया इत्युद्घोषयामि। यत्तु मानवशरीरास्थिसन्धयो लाइलाह इल्लिल्लाह لا إله إلا الله इति पदस्य (न किञ्चिदीश्वरातिरिक्तं वर्तते) इति अर्थवतोऽष्टवारं पुष्टिं कुर्वन्ति तथा च शिरः ताल्वादि ओष्ठादि

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

रचनानुसारेण सप्तबारं लिल्लाह لله अर्थात् अल्लाह الله इति भगवन्नाम्नः पुष्टिं करोति । तदेतदन्वेषणं प्रशंसनीयम् । तथापि अरबीलिप्याविष्कारस्तु शरीररचनां दृष्ट्वा न भूता । लिपिविकासैतिहासान्न प्रमाणीभवति । इत्थं तु बहुभिः स्व स्व लिप्यनुसारं वक्तुं शक्यते तद्यथा ऊं ओ३म अ उ म इत्यादीनामपि तथा कथा मुखाकृतौ ओंकाररचनया तथा सिद्धि । इति समाप्तम् ।

।। इति श्रीजगदीशाचार्यकृते अरबीशिक्षाशास्त्रे अरबीशिक्षाविद्ज्ञानविज्ञानीयनामा षोडशोऽध्यायः समाप्तः ।।

अथारबीनामकरणरहस्यविज्ञानीयो नाम सप्तदशोऽध्यायः

१ अथारबीनामकरणकारणं वक्ष्यामि । सम्भवतः तत्कारणमरबीविदाचार्य्यैरपि नावगम्यते । यतोहि न कदापि विषयमिमं प्रगृह्य विचारावश्यकतानुभूयते तैः ।

२ तदवगम्यताम्, सत्स्वप्यरबीभाषायां स्वरेषु, तदीयवर्णसमाम्नाये तद्गणनाभावात्, लिपौ च तत्तत्सांकेतिकस्वरलिपिनिश्चयाभावात् केवलव्यञ्जनवर्णैः लिपौ स्वमनोभावाः तथा चोच्चरितपदानि स्पष्टीकर्तुं न शक्यंते । तद्यथा इन्फ़ताह उलूम इत्यादि पदेषु इ उ आदिस्वरवर्णलिप्यभावात् तथाच फ़ुइल क़ुतिल इत्यादिषु अरबीभाषायां फ़अ्ल क़तल इत्येव लिख्यते तत्र न स्पष्टं भवति यदेतत् फ़अ्ल वा फ़ुइल, क़तल वा क़ुतिल इति भ्रमः फ़अल क़तल भूतकालिक क्रिया प्रथमपुरुषे एक वचने पुल्लिङ्गे रूपे भवतः कर्तृवाच्ये । अनयोः रूपयोः कर्मवाच्ये फ़ुइल वा फ़ुअिल, क़ुतिल इति रूपे स्तः किन्तु उकार इकारौ समुच्चारितावपि लिपौ निर्देष्टुं न शक्येते । अतः एव तत्र महद्दौर्बल्यं लिपेः पंगुतां मनोभावान्सम्यक्स्पष्टीकरणत्वेऽसामर्थ्यञ्च दृष्ट्वाऽपि स्वरवर्णलिपिनिश्चये पादन्यासो न कृतः । तेषां मतौ तु कदापि नायातं यदिमेस्वरा अपि वर्णा अतोऽर्थाय वर्णसमाम्नाये तेऽपि ग्राह्याः तथा च तेषां लिपयोऽपि निश्चेयाः । तथापि कार्यमप्रचलद् दृष्ट्वा तैर्विचारितं यत्केनापि यत्नेनायं दोषोऽपाकर्तव्यः इति । उदाहरणरूपेण पुरा अरबीलिपेस्तदेवरूपमासीत् यद्रूपमद्य भारतीय

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

वैश्यवृत्तौ महाजनी (मुण्डी) लिपेः। अस्तु। अतएव तद्दोषापकरणाय फ़तह कसरह ज़म्मह (ज़बर ज़ेर पेश) इति चिह्नत्रयं अ इ उ इति मूल-स्वरत्रयं लिपौ निर्देशाय आविष्कृताः। तान्येव त्रीणि चिह्नानि एराब आराब वा नाम दत्तम्। यतोहि अरबी भाषायां तद्धातुपाठे अरब, अरबतू च द्वौ धातू पठितौ सम्यक्स्पष्टीकरणं, सुस्पष्टं कृत्वा पठनं वार्थे। तत्रैतैश्चिह्नैं फ़अल वा फ़ुअ़िल क़तल क़ुतिल तथा चान्यत्रापि सर्वत्र भ्रमो न जायते लिपौ, कर्तृवाच्यं वा कर्मवाच्यमिति। ज़ैदुन इति कर्ता ज़ैदिन इति सम्बन्धकारकः ज़ैदन इति कर्म इति ज़म्महचिह्नेन कर्तृत्वं, फ़तहेन कर्मत्वं, कसरहेन षष्ठीति, सुस्पष्टं भवति। अतएव एषां त्रयाणां नाम एराब आराब वा दत्तम्। एषा प्रथा अरबी लिपौ प्रारब्धा। अतएव आराब युक्तत्वादेव अरबी संज्ञा अस्या भाषायाः भूता इति रहस्यम्। यथा च स्थान प्रयत्नव्याकरणादिभिः सम्यक्कृता समुच्चारिता वाक् संस्कृतमिति गद्यते तथैव आराबयुक्तत्वादियं भाषापि अरबी संज्ञां सम्प्राप्तवती। तथा चारबीभाषाविदोऽरबाः उक्ताः तथा च अरबजननिवासत्वात्तद्देशोऽपि अरब इति नाम लब्धवानिति। देशस्यनाम अरब तद्वासिनोऽपि अरबाः तद्भाषा अरबी इति विपरीत विचारः साम्प्रतमविवेकिनां दृश्यते वास्तविकता,त्वियं यदाराबानामपरिहार्यत्वात् आराबयुक्तत्वादरबी भाषा लिपिश्चाऽरबी तथा च तद्भाषिनोऽरबाः अरबाणां देशः अरब इति ध्रुवो विचारः सत्यञ्चेति।

३ यथा चारबीलिपौ पूर्वमाराबाणामभाव आसीत् तथैव वर्णेषु लिपौ विन्दूनामप्यभाव आसीत् बे ते इत्येतयोः स्वाद ज़्वादयोः सीनशीनयोः जीम हे ख़ेषु तो ज़ो इत्यादिष्वपि लिपौ भेदो नासीत्। अतएव फ़ारसीलिपेरनुकरणं कृत्वा अधो विन्दुना एकेन बे उद्ध्र्वविन्दुद्वयेन ते भेदः कृतः विन्दुत्रयेण से इति तथैव सर्वत्र उपरिनिर्दिष्टेषु भ्रमस्थाने तो ज़ो स्वाद ज़्वादित्यादिषु भेदः कृतः। अरबीभाषायां फ़ीरसदेशस्यनिर्देशः अ़जमपदेन क्रियते। अतएव तद्वासिनोऽपि अ़जमा उच्यंते तदीय भाषा च अ़जमीति उच्यते, तत्र फ़ारसी भाषायां वर्णेषु विन्दुप्रथया, अ़जमी इत्यस्य विन्दुवती लिपिरिति प्रसिद्धम्। कोषेऽपि अर्थोऽयं निर्दिष्टः। किन्त्वयं विचारो नोचितः। तत्रैवारबीकोषे यत्र अरब इति धातोः सुस्पष्टीकरणं सुस्पष्टं कृत्वापठनमर्थः तत्रैव अ़जम इति धातोः भ्रमपूर्ण भ्रमयुक्तो वार्थः। वस्तुतः फ़ारसी भाषायां अ इ उ इति स्वर-निर्देष्टृ चिह्नानांप्रयोगो न क्रियते अत एवाद्यावध्यपि भ्रमयुक्तत्वात अ़जमी उच्येत तथा च सुस्पष्टत्वादाराबैः सा अरबीति निगद्यते। फ़ारसी-लिपिगतप्रथया विन्दुप्रथाग्रहणेन अरबीभाषाया स्वदोषोऽपाकृतः बेऽयं वा ते वा से। किन्तु फ़ारसीभाषयाद्यावध्यपि स्वरभ्रमनिवारणाय

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

आराव न गृहीताः। अतएवारबी फ़ारसीतः सुस्पष्टतरेति सत्यम्। धात्वादिप्रकृतिप्रत्ययैः मौलिकी चेत्यग्रे लिखिष्यामीत्यलम्।

॥ इति श्रीजगदीशाचार्यकृते अरबी शिक्षाशास्त्रे अरबीनामकरणरहस्य विज्ञानीयो नाम सप्तदशोऽध्यायः समाप्तः ॥

अथारबमिथ्याधारणानिराकरणविज्ञानीयो नामा अष्टदशोऽध्यायः

यथाचोक्तंपूर्वाध्याये अरब इति धातुनिष्पन्नत्वादारावयुक्तत्वादेवेयं भाषा अरबी संज्ञां प्राप्ता सुस्पष्टा इत्यर्थः। तथैव अजम इति धातु निष्पन्नत्वादेव अस्पष्टतार्थकत्वात् फ़ारसीभाषा अजमी उच्यते। स्वमनो भावान्सम्यक्स्पष्टीकर्तुमसमर्थत्वादेव मूका च लक्ष्यते। तथा च जिह्वा-विहीना वाणीशक्तिहीना इति चार्थे गृह्यते। बहुवचने उजमी रूपं भवति तेन अरबीं परित्यज्य संसारस्य सर्वा भाषा मूकाः स्वभावात्स्पष्टीकर्तुं वक्तुं वा असमर्था इति अरबीविदाचार्याः समुद्घोषयन्ति। अरबीमेव पूर्णां शब्दार्थशक्तिमतीञ्चेति समुन्नतशिरांसि विधाय सगर्वमुद्गिरन्ते। तदेषा धारणा मिथ्यैव। केवलारावयुक्तत्वादेवारबी (सुस्पष्टा) इति तादर्थ्येऽपि केवलोच्चारणे एव सुस्पष्टता तथा च लेखेऽपि सुस्पष्टता भवति तस्मादर्थेऽपि तद्विषये सुस्पष्टता भवति किन्तु सन्ति च बहवोऽर्थाः यान्सम्यक्स्पष्टीकर्तुमरबी न समर्था क्वचित्क्वचित्तु किञ्चिन्मात्रमपि तदर्थमभिव्यंक्तुं न समर्था। तथा च स्वसमीपवर्तिनीं फ़ारसीमेव विज्ञाय तथा च विश्वस्य अन्याः भाषा अविज्ञायात्मानमेव पण्डितंमन्यत्वन्नोचितम्। यदि चारबदेशीया कथयन्ति तत्तु क्षम्यं किन्तु भारतीयारबीविद्वान्सश्चेत्-कथयन्ति ते तु सर्वथा अक्षम्या एव। भारते आर्यावर्ते च निवसन्तो विलसन्तोऽपि ते संस्कृतभाषया न केवलमपरिचिता एवापितु घृणां कुर्वन्ति। किमुत संस्कृतस्य वार्ता सर्वसामान्यां साम्प्रतिकीं हिन्दीमपि नावगच्छन्ति न वावगन्तुमुत्सहन्ते विज्ञानदृष्ट्या। भारतीयारबीविदस्तु संस्कृत-मधीत्यारबाणां धारणायाः निराकरणं स्वयमेव कर्तुं शक्नुवन्ति किन्तु ते त्वेतादृशेऽन्धगर्ते धर्मान्धतापरिपूर्णे निपतिता वर्तन्ते यत्कदापि परधर्मभाषा-

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सभ्यतासंस्कृतिसदुपदेशादिसद्गुणज्ञानस्यावश्यकतामेव नानुभवन्ति। अचिकित्स्यस्वभावास्ते, इति।

इदानीमरबीभाषायास्तानि स्थलानि निर्दिश्यन्ते यैररबीभाषा सर्वथा मूका, न केवला वाक्शक्तिहीना अपितु जिह्वाविहीनैव सिद्धा तद्यथा–

१ सत्यपि द्विवचनेऽरबीभाषायां उत्तम पुरुषे द्विवचनं नास्ति तस्मिन् रूपाण्यपि धातूनां न भवन्ति। अतएव आवां गच्छावः पठावः इति भावं व्यक्तीकर्तुं तु सर्वथैवासमर्था। तथैव भूतकालेऽपि।

२ अरबीधातुरूपेषु लिङ्गमपि द्योत्यते किन्तु उत्तमपुरुषे लिङ्गाभावात् आवां स्त्रियौ गच्छाव इत्यादिकमपि तथैव नाभिव्यज्यते। तथा च सर्वभाषासु कालस्त्रिधो भवति। भूतः वर्तमानः भविष्यदिति। रूपाण्यपि पृथक् पृथक् भवन्ति किन्तु अरबीभाषायां वर्तमानकाले भविष्यकाले एक एव रूपं भवति। तत्र माज़ी (भूतं) मुज़ारा (मिश्रितं) इति द्वावेव कालौ। तत्र मुज़ाराकालो वर्तमाने भविष्ये च प्रयुज्यते। तत्र पूर्वोद्धरणाभावे प्रकरणाभावे वा केवल मुज़ारारूपेण न ज्ञातुं शक्यते यत्कश्चित गच्छति वा गमिष्यति कोऽभिप्रायो वक्तुः। तत्रापि उत्तमपुरुषे द्विवचनत्वलिङ्गत्वे न द्योत्येते।

३ संस्कृतधातुषु उपसर्गप्रयोगैः संहार विहार प्रहार परिहार निर्हार प्रतिहारादिनानार्थभेदो भवति किन्तु अरबीभाषाधातुषु नेयं प्रथा।

४ तथा च संस्कृतभाषेव सन्नन्त यङन्तादिप्रथा न वर्तते पुनरपि चेत्ते स्वयं मूका सन्तोऽपि अविशेषेण सर्वभाषां मूकां ब्रुवन्ति। अरबीमुपर्युक्तत्रुटियुक्तामपि तत्र तत्रासमर्थामपि सुस्पष्टामुद्घोषयन्ति तदेत द्विचित्रमेव तेषां मस्तिष्कम्। वस्तुतस्तु ते कूपमण्डूका एव अतएवारबीविद्भिः स्वधारणाया परिवर्तनं कर्तव्यम् तथा च भारतीयारबीविदुषां कर्तव्यमेवास्तियत् तेऽरबविदुषोऽवगमयन्तु यदरबी चापि मूका तथा च तदपेक्षया संस्कृतभाषा सुस्पष्टेति स्वमिथ्याधारणामपाकृत्यारबधारणाऽपि निराकर्तव्या।

॥ इति श्री जगदीशाचार्यकृते अरबीशिक्षाशास्त्रे मिथ्याधारणानिराकरणविज्ञानीयोनामा अष्टादशोऽध्यायः समाप्तः॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथारबीविशेषता विज्ञानीयो नाम एकोनविंशोऽध्याय:

१ सतीस्वप्यरबीभाषायां त्रुटिषु न्यूनतासु च कतिपयविशेषता अपि सन्ति या: संस्कृते न विद्यन्ते। न चात्र सत्यं ब्रुवन्नहं लज्जे।

२ वैज्ञानिकविचारे निष्पक्षैरस्माभिर्भवितव्यम् सद्गुणान्प्रति नेत्र निमीलनं नोचितम्।

३ यथा संस्कृते निरुक्ते सर्वाणि पदानि आख्यातजान्येवेति सिद्धान्त: अधातुजान्यपीति केचित् तथैवारबीभाषायामपि बाहुल्येन पदानि (मसदर) आख्यातजानि। क्रियापदेषु उत्तमपुरुषे यथापूर्वचर्चितो द्विवचनाभावे लिङ्गभेदाभावे वर्तमानभविष्यकालयो: भेदाभावेऽपि विशेषतेयं यत्क्रियापदेनैव कर्तृकर्मणोर्लिङ्गमपि विज्ञातं भवति। यत् क्रियाया: कर्ता कर्म वा (कर्मवाच्ये) किंलिङ्गक:। कर्तृवाच्ये कर्तु: (कर्मवाच्ये)। कर्मणो लिङ्गं द्योतयत्येव क्रियापदम्। तद्यथाद्यत्वे हिन्दी-उर्दू-भाषायां जाता है, जाती है, गया, गई इति क्रियापदै: लिङ्गंद्योत्यते किन्तु संस्कृते नकिमपि लिङ्गं प्रतीयते इति न्यूनता त्ववश्यमेवास्ति। यथा च कर्तु: कर्मणश्च वचनं पुरुष: प्रतीयेते यदिचेदावशिष्टं लिङ्गमपि प्रतीयेत्तर्हि स्वर्णे सुगन्धिरेवस्यात् अरबी भाषाया: प्रथमा विशेषता निर्दिष्टा।

द्वितीया विशेषता तु संज्ञापदनिर्वृत्तौ वर्तते। संस्कृते इवारबीभाषायामपि धातुभ्यो नामानि पदानि व्याक्रियन्ते तद्यथा हन् धातो: घातक: इति कर्ता, हत इति कर्म तथा प्र उपसर्गयोगेन प्रकृष्टताऽपि द्योत्यते तदेवारबी भाषायां इस्मतफ़ज़ील इत्युच्यते किन्तु प्रत्येकधातुना स्थानवाचक समयवाचक करणवाचकनामानि च व्याक्रियन्ते यै क्रियास्थानं क्रियासमय: क्रिया-साधनञ्च विज्ञायते। तद्यथा क़तल इति धातो क़तल इति भूतकालिक-क्रिया यक़्तलु इति वर्तमानभविष्यकालयो: रूपम्। तथैव कर्तरि क़ातिल इति घातकार्थे, मक़्तूल इति हतार्थे। तथैव मिक़्तल इत्यस्य खङ्गाद्यस्त्रशस्त्रार्थो भवति तथा च मक़्तल इत्यस्य यस्मिंस्थाने हतो हन्येत वा कालोऽपि मक़्तल यस्मिन् काले हतो वा हन्यते नित्यम्। तत्र संस्कृते नैतानि रूपाणि व्याक्रियन्ते। अरबी भाषायां ते इस्मज़र्फ़मकां (स्थान) इस्मज़र्फ़ ज़मां (समय) तथा च इस्म आला (करण) इत्युच्यन्ते। तेनारबी भाषायां विशेषता एता एतेषु विषयेषु बहुवक्तृत्वमेव प्रमाणी कुर्वन्ति। इति मुक्तकण्ठेन स्वीकरोमि किन्तु काललिङ्गयोर्न तथा।

५ दारुलअफ़्ताह मज़ाहरुल उलूम (विद्याकेन्द्र) सहारनपुरपत्रा-नुसारेण तु अरबी भाषायामेकार्थवाचकपदानां शतानि सहस्राणि च पर्याया:

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अतएवारबी सर्वतो विस्तृतेति नोचितम्। तद्यथा मधुवाचका अशीति ८० शब्दाः पर्यायाः सर्पवाचका शतद्वयं २०० खड्गवाचकाः सहस्राः १००० आपत्तिवाचका चतुःसहस्राः ४००० इति। तदेतत्तु भाषाशक्तिनाशनमेव। यतो हि यदि च सर्वेऽपि धातवो सर्वे च शब्दा एकमेवार्थं समुद्घोषयन्तु तर्हि सत्स्वसंख्येष्वर्थेषु कथं तेषां वाच्यत्वं भवतु कथञ्च जगतः कार्याण्यपि भविष्यन्ति अत एवैकस्यार्थस्य सहस्रशब्दाः पर्याया इत्यत्रतु भाषाशक्तेः नाशनमेव धातूनां शब्दानां दुरुपयोग एव तथैव अज़वज़ शब्दस्य दुग्धपाययनार्थके उष्ट्रध्वनिवाचकत्वादि द्विषष्टिरर्था भवन्ति। एतदपि नोचितं यतोहि एक एव शब्दश्चेत्शतेष्वर्थेषु प्रयुक्तो भवति तस्यायमभिप्रायो यदरबी धातवः शब्दाश्च स्वल्पसंख्यका एव यदेक एव शब्दो शतेष्वर्थेषु प्रयुक्तो भवति। तत्रैकस्यार्थे सहस्राणां धातूनां शब्दानां च प्रयोगोऽपि भाषाशक्तिनाशनं तथा च एकरूपपदस्य च शतेष्वर्थेषु प्रयोगोऽपि शब्दलाघवं द्योतयति सैषा गर्वोक्तिर्न युक्ता अपितु दोषदर्शिकी एव।

६ क्वचितु शब्दानां दुरुपयोगः क्वचितु शब्दानां लाघवमिति सर्वं भाषाया अव्यवस्थैव एकरूपार्थस्य दशविंशतिर्वा पर्यायाः पर्याप्ताः एकस्यपदस्य दश विंशतिर्वार्थाः पर्याप्ताः काव्यादि सौन्दर्यविवृद्धये किन्तु शतानि सहस्राणि पदानि एकरूपार्थस्य सहस्राः शतानि वार्था एकस्य पदस्येति न श्लाघाविषयः। एका तु विशेषतारबीभाषायांमन्या। यन्न किमपि पदं संयुक्तवर्णादि दृश्यते। यथा च संस्कृते भ्रूः–भ्राष्ट्रः–क्रिया–न्यासः आदिषु आदौ व्यञ्जनानां संयोगे दृश्यते समुच्चार्यते च न तथारबीपदानि। संयोगादौ सति पदे हम्ज़ा (अलिफ़) अकारं इकारं उकारं वा प्राक्प्रयोज्योच्चार्यते लिख्यते च तद्यथा अफ़अल, अक़्तल अक्बर इत्यादौ फ़् क़् क् न सम्यगुच्चरिता भवन्ति अतोऽकारं संयोज्य लिख्यते उच्चार्यते च। अनेन विधिना सारल्यं वाचि भवति। अत एवारबी फ़ारसी विद्वांसः संस्कृतपदानि संयुक्तादीनि नोच्चारयितुं शक्ता भवन्ति। संस्कृतेऽपि स्थानं श्लीलं स्फटिकमित्यादिपदोच्चारणे काठिन्यमनुभूयत एव। तन्नोच्चारणेऽसत्यप्यकारेऽकारादि कृत्वोच्चारणे सुगमता जायते तथा च श्रवणे तु अस्थानं अश्लीलं अस्फटिकादि श्रूयते अतएव स्वभावतोऽप्युच्चारितस्य अकारादेर्विधाने न क्षतिः। किन्तु नञ्समासे एव अकार आदौ प्रयुज्यते संस्कृते इति भाषायाः नियमान्न संस्कृतेऽरबीवत्स्वरादित्वं विधीयते। तथा च पूर्वपदेन सह वाक्ये प्रयुज्यमाने न दोष उच्चारणे जायते तद्यथा इदं श्लीलं पदम्। इयं स्फाटिकेत्यादौ नोच्चारणकाठिन्यम्।

॥ इति श्रीजगदीशाचार्यकृते अरबीशिक्षाशास्त्रे अरबीविशेषता विज्ञानीयो नामा एकोनविंशोऽध्यायः समाप्तः ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथाखिलभूमण्डले कलामपाक क़ुरानशरीफ़स्याशुद्ध पाठो भवतीति समुद्घोष विज्ञानीयो विंशोऽध्यायः

अरबी इल्मतजवीद (शिक्षा) शास्त्रं परिसमीक्ष्य समुद्घोष्यते मया यदखिलभूमण्डले यावन्तोऽपि क़ुर्राः (क़ुरानपाठकाः) सन्ति ते सर्वेऽपि अशुद्धपाठं कुर्वन्ति, वर्णानामशुद्धोच्चारणत्वात्। यतोहि इल्मतजवीदानुसारमेव क़ुरानपाठो वेदपाठस्येव प्रशस्यते तथा च क्रियते। किन्तु यथापूर्वं निर्दिष्टं मया, अरबीशिक्षायां स्थानप्रयत्नेषु (मख़ारिज सिफ़ातेषु) शक्तिनिर्णये च बहुत्रुटयः सन्ति अतएव तदनुसारेण वर्णोच्चारणे बहवोऽशुद्धयो भवन्ति। अतएव तदनुसारेण क़ुरानपाठोऽशुद्ध एवेति सार्वभौमिकोऽयं दोषः। यद्यपि क़ुर्रानां दृढमतमस्ति यत्ते अत्यन्तशुद्धोच्चारणं कुर्वन्ति वर्णानाम्, किन्तु तेषां भ्रम एवायं विद्यते। तदहमिदानीं सम्यक् प्रमाणीकरोमि यदरबीइल्म तजवीदे गभीरोच्चारणत्रुटयः सन्ति, याभिः विदुषां विज्ञातं भविष्यति यन्मे समुद्घोष उचित एव। तदग्रिमेऽध्याये विविच्यते।

॥ इति श्रीजगदीशाचार्यकृते अरबीशिक्षाशास्त्रे अखिलभूमण्डले कलामपाक क़ुरानशरीफ़स्याशुद्ध पाठो भवतीति समुद्घोषयिज्ञानीयो विंशोऽध्यायः समाप्तः॥

अथारबी इल्मतजवीद (शिक्षा) गभीरत्रुटि-विज्ञानीय एकविंशोऽध्यायः

१ तत्र मख़ारिज (स्थान) सिफ़ात (प्रयत्न) क़ूवत (शक्ति) तथा च तरक़ीक़ (मार्दव) तफ़ख़ीम (काठिन्य) आदि क्रमेण त्रुटयो निर्दिश्यन्ते।

२ तत्रपूर्वं मख़ारिज त्रुटयो यथा—

(क) क़-कयोर्भेदस्त्वस्ति किन्तु जिह्वामूलस्य तालुना स्पर्शोऽयुक्त एव तत्रापि क़स्य तु किञ्चिदपि मख़रज तालु-नास्ति। अक़्सा ज़बान अर्थात्

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

जिह्वामूलं तु कण्ठे एव न तु तस्योपरि तालु वर्तते। अतस्तालुना तत्संयोगोऽयुक्त एवोक्तः।

(ख) ज़्वादित्यस्य हाफ़ये जबान+इज़रासे उलियाजड़ (जिह्वामध्य तट वृहद्दन्तमूल) इति तु सर्वथा कृत्रिमम्।

(ग) रे इत्यस्यापि दन्तमूलमयुक्तमेव।

(घ) ज़ो ज़ाल इत्येतयोः नोकेज़बान+सनाया उलियातटम् (जिह्वाग्र+सन्मुखस्थोद्ध्र्वदन्त द्वयमूलम्) इति च सर्वथाऽयुक्तम्। जीमस्यैव-स्थानमस्यापि वक्तव्यम्।

(ङ) तथैव ज़े इत्यस्यापि वक्तव्यम्। सनायासिफ़लीतट+नोके ज़बान (सन्मुखस्थाधोदन्तद्वयतट+जिह्वाग्रम्) इति तु न वक्तव्यम्।

(च) स्वादसीनयोः स्थाने सनायासिफ़ली तटम् सन्मुखस्थाधोदन्त-द्वयतटमिति योगोऽयुक्तः।

(छ) फ़े इत्यत्र अदनालब+सनाया उलियातटम् (अधरोष्ठ+ऊर्ध्वदन्तद्वय तटम्) इत्यत्र दन्ततटस्य स्थाने ऊर्ध्वोष्ठ एव वक्तव्यः। न ह्यं दन्त्योवर्णः। वावइत्यस्यापि ऊर्ध्वदन्तद्वय तटयोगो भवति किन्तु तदपि नोचितम। तथैव फ़े इत्यस्यापि उच्चारणे दन्ततटयोगो नोचितः। यथा च वावस्य सिफ़तैन (उभयोष्ठम्) इति स्थानं तथैव फ़स्य च।

३ इदानीं सिफ़ातत्रुटयो यथा—

(क) हम्ज़ा, ये, वाव एषां जहर सिफ़त उक्ता, सा न वक्तव्या अपितु हम्स (नम्रता) वक्तव्या—

(ख) ज़्वाद स्वाद ज़ो तो इत्येषां इत्तबाक़ (स्पृष्टम्) इति कथितम्। तत्र ज़्वाद स्वाद ज़ो इति त्रयाणां तु इत्तबाक़ अस्त्येव न सततध्वनि निःसरणात्। (रखूत्वाच्च, इन्फ़ताह (अस्पृष्टम्) इत्येवास्ति। उच्चार्य निष्पक्षैरनुभूयताम्। तथा च ते दाल क़ाफ़ काफ़ जीम बे मीम इत्येष्वपि इत्तबाक़ सिफ़त वर्तते न तु इन्फ़ताह। अतएवारबी इलमतजवीदानुसारेण पठने अर्थात् ज़्वाद स्वाद ज़ो इति त्रयेषु इत्तबाक़ कृत्वा पठने अशुद्धिर्जायते वृथा प्रयासश्च यतोहि कथमपि इत्तबाक़ं कृत्वा तेषामुच्चारणं सम्भवमेव न। तथा च ते दाल क़ाफ़ काफ़ जीम बे मीमादिषु इन्फ़ताह (अस्पृष्टता) चेत्क्रियते तदा तु ते उच्चरिता एव न भवितु शक्यन्ते। तथा च तेषु च इन्फ़ताहकरणमशुद्धं वृथा च असम्भवञ्च। तथापि शास्त्रादेशात्क्रियते अतोऽहं ब्रवीमि सर्वत्र भूमण्डलेऽद्य क़ुरानपाठोऽशुद्ध एव भवति। ते तु मिथ्याभिमाना एव शुद्धंमन्याः। अत्र तु सम्यग्विज्ञायते यदतीव दुर्बला एवारबी शिक्षाशास्त्रविदाचार्या शिक्षाविषयेऽपि। तथैवान्यत्रापि ज्ञेयाः।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(ग) काफ़ जीम ते दाल तो इत्येषामपि तथा च ये वावयोश्चाल्प-प्राणात्मकोऽयं अज़लाक़ सिफ़त वक्तव्यः। एषां इस्मात (महाप्राणः) इति मतं तु सर्वथासाम्प्रतम्।

(घ) तो बे जीम दालेषु क़लक़ला न युक्ताः केवल क़ाफ़े एव क़लक़ला वर्तते। अथवा नात्र विशेषमतभेदः।

क़लक़ला सिफ़त तु केवल क़कारे एव क़ाफ़े इत्यर्थः। यदि च नादघोषौ क़लक़लात्वं तर्हि तो, क़ाफ़योर्न स्यात् क़लक़ला, अपितु गकारे एव वर्तते। किन्तु अरबीतहज्यां गाफ़ इति त्वस्त्येव न। अथवा असति गकारे ज, द, ब एषां वर्णानां वक्तुं शक्यते सा किन्तु अलिफ़ तोकारयोस्तु कथमपि क़लक़ला नेति।

(ङ) इस्तताला तु सर्वथा कृत्रिमा।

(च) सीन स्वादयों सफ़ीरत्वं नोचितं शीने एव सफ़ीरत्वम्। न च तथा मन्यते।

४ इदानीं क़ूवतत्रुटयो यथा—

तत्क़ूवत निश्चयेऽपि न कोऽपि सिद्धान्त उक्तः अतएव त्रुटयः सन्ति। तद्यथा—

(क) तो इति अक़्वा (महाशक्तिसम्पाद्याः) इति तु नोचितम् तथैव ज़ो ज़्वादावपि। केवल ख़े क़ाफ़ फ़े इति त्रय एव अक़्वाः।

(ख) स्वाद ग़ैन रे इति क़वी न सन्ति, एषां स्थाने ते काफ़ इति द्वौ वक्तव्यौ।

(ग) क़ाफ़ ख़े इति न मुतवस्सितौ अपितु अक़्वा तथा च रे लाम ये वाव मुतवस्सिताः (मध्याः)।

(घ) ये वाव न हीनौः (ज़ईफ़ौ) मुतवस्सितावेव।

(ङ) अज़ाफ़ (अतिहीन ध्वनिः) केवल हम्ज़ा एव तत्र दृश्यते यच्छक्तिनिर्धारणेऽपि न सफलाः अतएव हीनान् शक्तान्-शक्तान्-हीनानुच्चार्य त्रुटिं कुर्वन्ति।

५ इदानीं नम्रता कठिन्यादित्रुटयो यथा—

(क) स्वाद ग़ैन ज़ो इति न केवल तफ़्ख़ीमवन्तः अपितु तरक़ीक़ (नम्रता) युक्ताश्च। श्वासस्य सततं निस्सरणात्। अत्रतु सिद्धान्तोऽस्ति यत्।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

(ख) ये स्पृष्टवन्तो महाप्राणवन्तश्च ते अक़वा, स्पृष्टाल्पप्राणाः क़वी अन्तःस्थाः जईफ़ईषद्विवृतवन्तः शादयो अज़ाफ़ ख़ग़ादयः मुतवस्सुतं, स्वरा अज़ाफ़ुल्हरूफ़ इति ।

तदत्र परिदृष्टो भवति यत्सम्पूर्णारबी इल्मतजवीदे गभीरत्रुटयः सन्ति । अतएव वर्तमान इल्मतजवीदानुसारेण क़ुरानपाठ (क़िराअत) अशुद्धमेव क्रियते इति मया सप्रमाणं समुद्घोष्यते

ये खलु अरबी इल्मतजवीदं विहाय स्वाभाविकेन स्वतः समुच्चरितेन-ध्वनिना क़ुरान शरीफ़ं पठन्ति ते तु शुद्धं पठन्ति तदपेक्षयाऽल्पीयस्यो त्रुटयस्तत्र भवन्ति इदमपि समुद्घोष्यते मया ।

।। इति श्रीजगदीशाचार्यकृते अरबीशिक्षाशास्त्रे अरबीइलातजवीद (शिक्षा) गभीरत्रुटि-विज्ञानीय एकविंशोऽध्यायः समाप्तः ।।

अथारबी इल्मतजवीदादिसमीक्षा विज्ञानीय द्विविंशोऽध्यायः

अथेदानीमरबी विषयकगुणदोषाश्च स्थूल रूपेण संक्षेपेणैकत्रीकृत्य निर्दिश्यन्ते ।

(१) तत्रगुणेषु त्वरबीव्याकरणं संस्कृतव्याकरणवदेव चारुतरम् । शब्दानां पदानां व्याकृति-पद्धतिरतीव मनोहरा संस्कृतपदव्याकृतिपद्धत्य-पेक्षया सरला सुष्ठुतरा च । तद्यथा धातुरूपेषु फ़् अ् ल् इति धातोः भूतकालनिर्देशः केवल स्वर विधानेनैव क्रियते फ़अल इति सर्ववर्णेषु फ़तहः (अकारः) ज़बर इति क्रियते । अस्यैव कर्मवाच्ये फ़ुअिल इति रूपम् । वर्तमानभविष्येतु केवलं आदौ यकारतकारयोरेकस्यागमं कृत्वा यफ़अलू कर्मवाच्ये युफ़अलू इति तथा च कर्त्रर्थे फ़ाअ़ेल इति कर्मार्थे मफ़अ़ूल क्रियास्थानकालनिर्देशाय मफ़अल, करणनिर्देशायं मिफ़अल प्रकृष्टरूपेण क्रियाकारकत्वद्योतनाय तु अफ़अल तथैव क़्त्ल् इति धातोः क्रमशः क़तल क़ुतिल, यक़्तलू युक़्तलू, क़ातिल, मक़्तूल, मक़्तल मिक़्तल अक़्तल इति रूपाणि भवन्ति ।

२ द्वितीयोगुणस्तु क्रियास्थानकालवाचकपदव्याकृतिः तथाक्रिया-

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

करणवाचक क्रियाप्रकृष्टता वाचकपदव्याकृतिरिति संस्कृताद्विशिष्यते । यथा मक़्तल-मिक़्तल-अक़्तलादयः संस्कृतधातुषु गणपरम्परया, भ्वादि अदादि चुरादिभिः सममरबीधातुष्वपि परम्परा वर्तते तथा नामाख्यातोपसर्गनिपाता इवारबी भाषायामपि विभागाः कृताः । न चात्रशास्त्रेऽयं विषयोऽधिकृत इति न विशदीक्रियते ।

३ तृतीया विशेषतेयं यदरबी क्रियापदैरेव कर्तुः लिङ्गं, कर्मवाच्ये कर्मणोऽपि लिङ्गमुक्तं भवति । वर्तमानहिन्दीउर्दूभाषा क्रियापदेषु कर्तृकर्मलिङ्गद्योतनं सम्भवोऽस्ति यन्मुस्लिमसाम्राज्यपादार्पणेनारबीप्रभावेणैव सञ्जातम् । किन्तु विचारोऽयं सर्वथाभ्रमपूर्ण एव । यतोहि ग्रामीणाञ्चलेषु लोकभाषासु त्वद्यावध्यपि न विदेशप्रभावः । तासु ग्राम्यभाषासु तु क्रियापदेषु लिङ्गप्रद्योतनं दृश्यते तद्यथा वाराणसेयभाषायां गयल इति पुल्लिङ्गं गइल इति स्त्रीलिङ्गम् । ममग्राम्यभाषायामपि गवा (गतः) इति पुलिङ्गं गै (गता) इति स्त्रीलिङ्गमिति न चारबीप्रभावः । तस्मात्संस्कृतादेव निःसृतासु भारतीयभाषासु क्रियापदैरेव लिङ्गद्योतनप्रथा कालवशादेवावश्यकतावशादेव प्रचलितेति ध्रुवम् अनेनेदमपि सम्प्रमाणीभवति यदरबी भाषा न बहुप्राचीना । यतो हि अरबीभाषायां संस्कृत प्रभावो दृश्यते द्विवचनत्वादिदृष्टचा अतएव क्रियापदेषु लिङ्गद्योतनं नवीनत्वं द्योतयति । द्वितीयमपि प्रमाणं यदद्यापि अरबी मातृभाषा वर्तते । स्याच्चेत्प्राचीनतरा परिवर्तनानि गता अन्यविधास्यात्तद्यथा संस्कृतं पुरा मातृभाषासीदद्यतु तदपभ्रंशरूपं जातम् । इति प्रमाणद्वयेनारबी नवीना । एव ध्रुवम् ।

४ अरबीतः पूर्वं इबरानी भाषा तत्रासीदिति अन्या वा काचित । अरबी वाक्येषु सर्वप्रथमं क्रियापदप्रयुज्यते क्रियानन्तरं कर्ता तदनन्तरं कर्मेति । तद्यथा—(क़तल जैदुन् हमीदन्) अर्थात जधान जैदः हमीदमिति । इति क्रमो न कथमपि परिवर्तितुं शक्यते परिवर्तितेऽशुद्धं वाक्यं भविष्यति । संस्कृते तु स्वातंत्र्यं वर्तते । क्रियापदं कर्तृपदं कर्मपदं वा किमपि आदौ मध्येऽन्ते वा सर्वमपि भवितुं शक्यते, न चाशुद्धं भविष्यतीति । तद्यथा कृष्णः कंसं जघान, कंसं कृष्णो जघान, जघान कंसं कृष्णः, जघान कृष्णः कंसम् । सर्वं वक्तुं शक्यते ।

५ इदानीमरबीदोषास्त्रुटयश्च निर्दिश्यन्ते ।

(१) अरबी वर्णसमाम्नयोऽक्रमोऽवैज्ञानिकः ।

(२) मिथ्यावर्णकल्पना च यथा तो ज़ो ज़्वादादयः ।

भारतेऽपि क़ ह़ अ़ आदीनां सुस्पष्टोच्चारणदर्शनान्नायं तर्कः साधुः, यदरबप्रदेशे मरुस्थलत्वाच्छुष्ककण्ठत्वादेव अकारस्य अै न इति हकारस्य

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

ह् तथा च ककारस्य क़ाफ़ इति स्वभावत उच्चार्यते। यदि चेदियं सत्यता स्यात्तर्हि अ्न ह् क़ाफ इत्येव स्युः न तु अ, ह, क इति, उभयोरपि सत्वादिदमेव सिद्धयति यदशुद्धाः प्रदुष्टाश्चैतेऽपि वर्णाः अ्, ह्, क़ पृथगेवानुमताः। पुनरपि भ्रमाभावान्नाहं विरुद्धे। केवलं सति ज़ेकारे, ज़ो ज़ाल ज़्वादाः वृथा। तथा च सति सीने से स्वादौ वृथा। सति ते, तोऽपि वृथैवेति अभेदत्वात्। यदि च भेदः स्यात् एकेनैवानुबन्धेन सिद्धं स्यात् तद्यथा काफ़ क़ाफ़, सीन शीन, हे हे, इत्येतेषु। वर्णभेदाभावादेवानुबन्धभेदः कृतः से सीन स्वाद, ते तो, ज़े ज़ाल ज़ो ज़्वाद इति। अर्थभेददर्शनायैव नतु वर्णभेददर्शनाय। किन्तु मूर्खतायाः सीमैव नास्ति अर्थभेदज्ञानाय आकृतिभेदः तदर्थं चानुबन्धभेदः तान्दृष्ट्वा वर्णभेदंमत्वा भूर्खतापूर्णकृत्रिमोच्चारणं कृत्वा स्वविशेषतां साधयन्ति तथाच मख़ारिज सिफ़ातादिषु सर्वत्र भेदः कृतः तदेतत् सर्वमेव महामूर्खतेति नात्र संशयः।

(३) वर्णसमाम्नाये स्वरवर्णाः सन्त्येव न।

(४) लिपावपि आरावाणां लिपिर्नास्ति।

(५) दीर्घेकारोकारनिर्देशाय ये वावयोः प्रयोगोऽयुक्तः।

(६) मख़ारिजेषु बहुत्रुटयः सन्ति ताः निर्दिष्टा एव।

(७) सिफ़ातवर्णनेऽपि त्रुटयस्ताः अपि पूर्वं वर्णिताः काश्चन्।

(८) क़ुवतनिश्चयोऽपि न साधुः।

(९) तरक़ीक़ादिप्रकृतिनिर्देशोऽपि न साधुः।

(१०) उत्तमपुरुषे द्विवचनत्वाभावोऽपि हीनता।

(११) तथा चोत्तमपुरुषे लिङ्गभेदोऽपि नास्ति।

(१२) वर्तमानकाले भविष्यकाले रूपभेदो नास्ति।

(१३) उपपदयोजने उपसर्गयोजनेऽपि धात्वर्थोनान्यो भवति।

(१४) नपुंसकलिङ्गस्य सर्वथोच्छेदोऽरवीभाषायाम्।

(१५) रेफस्य सिफ़ततकरार उक्ता, सा न वक्तव्या दोषत्वाद्दोषेषु तस्य गणना कार्या।

(१६) वर्णानामुच्चारणदोषा न वर्णिताः सम्यक्। क्वचित् क्वचिद्दोषनिर्देशो न पर्याप्तः।

(१७) सिफ़ात (प्रयत्नाः) एषु आभ्यन्तरवाह्येति भेदोऽपि न कृताः। अस्मिन्विषयेऽरवीशिक्षा (इल्मतजवीद) विदाचार्या अन्धकारे एव सन्ति अत एवोभयेषां मिश्रितवर्णनं वर्तते। तदपि न पूर्णं, गभीरत्रुटियुक्तञ्च।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अतः कारणादेव सिफ़ातानुसारेण वर्णसमाम्नाये वर्णक्रमो न शक्यः कर्तुम् संस्कृतशिक्षाशास्त्रमतस्वीकारे एव कर्तुं शक्यः ।

(१८) स्थानकरणयोरपि भेदो न कृतः । तात्वादिस्थानं जिह्वादि (लसान) द्वयोः समुदाय एव स्थानं मख़रज इति कथितम् । अथवा जिह्वैव स्थानमुच्यते तद्यथा पञ्जगञ्जे षडेव स्थानानि कथितानि तद्यथा हलक़, जिह्वामूल (बुन ज़बान) जिह्वामध्य (मियाने ज़बान) जिह्वातटं (किरानये ज़बान) जिह्वाग्रं (सरे ज़बान) ओष्ठौ (सिफ़्तैन) इति तत्र ताल्वादि सहायतयां वर्णाः उच्चारिता भवन्ति तेन ताल्वादीनां करणत्वमेव द्योत्यते तदेतदसाम्प्रतम् । करणं (आला) अपि भवतीति विषयेऽप्यरबी-विदाचार्या अन्धकारे एव । उच्चारणे करणत्वस्यावश्यकतामेव नानुभवन्ति । यथा च दुन्दुभिमृदङ्गादीनां वाद्यानां ध्वनीनां मख़रज़ (स्थानं) वाद्यानि मृदङ्गादीनि एव मन्यन्ते न तु ताड़नसाधनकाष्ठहस्तादीनां ध्वनयो मन्यन्ते तथैव ताल्वादयोऽपि स्थानानि मख़ारिज मन्तव्यानि । चलाय-मानावयवाः जिह्वामूलं जिह्वामध्यादि अधरोष्ठश्चैव करणानि एव नतुस्थानानि यतोहि स्वस्थानान्न चलायमानो भवति तदेव स्थानं मख़रज इति तस्यैव ध्वनिरितिवक्तुमुचितः उच्यते च तद्यथा वीणायाः स्वरः दुन्दुभेश्चस्वरः मृदङ्गस्यायं स्वर इति । चलायमानप्रताडक काष्ठदण्ड-हस्तादीनां केवलं करणत्वमेव मन्यते न तु तेषां ध्वनय इति तथैव जिह्वायाः अधरोष्ठस्य च करणत्वमेव । किन्त्वरबीविदाचार्यैरत्र न विचारितं कदापि यत्करणमपि भवति । किञ्च तत्करणं कानि कानि वेति क्वविचारावसरः तेषाम् । इत्येषाऽपि महतीत्रुटिरस्ति । चलायमान-त्वाज्जिह्वाया कर्म एव वचनं न तु वर्णानां स्थानमिति । स्थानेषु गत्वा-वर्णानुपलभ्योच्चारयतीति करणत्वमेव ।

१९ तदेतत्परिमीक्ष्यारबीविद्वद्भिः स्वकीय इल्मतजवीदे संशोधनं कार्यमेव । व्याकरणं तु प्रकृतिप्रत्ययादिकल्पनया कल्पितम् । किन्तु ध्वनयस्तु प्राकृताः न तत्र क्वचिदपि कल्पनावसरः । अतएव ध्वनिविषये नाखिलभूतले भेदो भवितुमर्हति । समस्तमानवानां सर्वभूतलविलसितानां शारीरिक रचनासमानतया ध्वनिसमानतया तदुच्चारणविधौ च समानत्वमेव ध्रुवम् । न चात्र कश्चित्संदेहावसरः ।

२० तथाऽपि समुद्घोष्यते यदरबी वैज्ञानिकी भाषा मौलिकी च संस्कृतभाषेव समृद्धाचेति गुणिभिर्ग्राह्या च । मुसलमानानामिदं भाषेति भ्रमः इस्लामधर्मप्रवर्तनात्प्रागेवारबाणामियं भाषासीत् इस्लामधर्मेणसह अखिलभूतले व्याप्ता । नास्याऽर्थोयन्मुस्लिमभाषैषा । अतीव रुचिरा मनोहरा च व्याकृतिपद्धतिरिति प्रशंसामि ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

२१ अन्ते लिपेरेको महान् दोषोऽपि निर्दिश्यते यदेतादृशे वैज्ञानिके युगेऽपि मुद्रणालये मुद्रणयोग्या नेयं लिपिः। मुद्रणार्थमद्यापि हस्तेनैव पूर्वं लिखित्वा ततः मुद्रणयन्त्रे प्रकाश्यते ग्रन्थः। लिपिरेवैषा एतादृशी यस्यांवर्णा धात्वादीनां निर्मातुमशक्याः। धातु निर्मितवर्णानामभावे न मुद्रणं शक्यम् यद्यपि यथा कथञ्चित्कृत्वा निर्मिता अपि धातुवर्णा न साधव। तैर्मुद्रितं विषयमपि सम्यक न पठितुं शक्यते सुस्पष्टता नायातीति। अस्या लिपे दक्षिणतोवामं प्रति गतिरपि विपरीतता, मुद्रणायोग्यताचेति। तथापि प्रकृतिरेवैषा। विचित्रे खलु संसारे नात्र विशेषापत्तिर्मेऽस्ति तथापि उच्चारण विषये पूर्वनिर्दिष्टगुणदोषेषु विद्वद्भिर्ध्यानं देयम् अरबीविद्वत्सु-महती अन्धपरम्परा दरीदृश्यते सा तैर्हेयेत्यलयम्।

२२ मीरा-मेरा इत्यादिषु लघु ये तथा वृहद् ये मध्ये भेदस्तु विन्दु-संख्याभेदेन कर्तुं शक्यते। अत्रत्वेकविन्दुरूर्ध्वं, द्वौ विन्दू अध इति (ये) पकारस्य भ्रमोऽपिन भवति। किन्तु मौर ,,ر, और, मोर ,,ر, एतयोस्तु कथमपि ओकार-औकारयोर्भेदः कर्तुं न शक्यते। अथवा अत्रापि फ़तह द्वयेन भेदः कर्तुं शक्यते। किन्तु वर्णत्रययोगात् विशेषतः यकार वकार वकार इति व्यञ्जनवर्णयोगात्स्वराणां निर्वृत्तिः निर्वाहश्च कथमपि नोचितः। सर्वत्र तु आराबदानमपि न सम्भवम्। यथा कथाञ्चित्सर्वत्र आराबदानेपि कुत्र-क आराव इति शंका भवत्येव। हि-स्वराणां सर्वलिपयो न सन्ति याश्च सन्ति तास्तु व्यञ्जनवर्णैर्न युज्यन्तेऽपि तु ऊर्ध्वमधश्चेति पृथगेव योज्यन्ते। अतः भ्रमस्तु तथैव वर्तते। अतः भारतवसुन्धरायां संस्कृतलिपौ सत्यां दोषग्रस्तायाः अस्याः लिपेः राष्ट्रलिपित्वस्य तु प्रश्न एव नास्ति न चोर्दूभाषाया अपि प्रश्नः अतएव उर्दूभाषा अरबीलिपिश्च राष्ट्रभाषा राष्ट्रलिपिश्च भवेदिति वृथैवालपद्भिः वृथा कोलाहलो न कर्तव्यो न च भारतीयसर्वकारेण च तस्मिन् ध्यानमपि देयम्। नात्र कोऽपि हेतुरत्र दृश्यते येन संस्कृतलिपिसत्वेऽरबी लिपिविषये विचार्यतां तथा च नागरीभाषा सत्वे उर्दूभाषाविषये च विचार्यताम्। न चाद्य परतन्त्रो देशोयस्मिन्बलादेव पूर्ववत् तथा कर्तुं शक्यते। नाहमित्थं कथने बिभेमि। न चाहं फ़ारसी अरबी उर्दूभाषाध्ययनाध्यापनविरुद्धोऽस्मि यथा च अंग्रेजी फ्रेंचादि भाषा भारतेऽध्याप्यन्ते तथैव इमा अपि भाषा अध्याप्यन्ताम्। किन्तु भारतराष्ट्रभाषापदेन तथा च भारतराष्ट्रलिपिरूपेण अरबी फ़ारसी उर्दूभाषा लिपिश्च न कर्तुं शक्यते योग्यताभावात्। वर्तमान-फ़ारसी भाषायाः लिपिस्तु अरबीलिपिरेव वर्तते नैषा लिपि फ़ारसी भाषायाः

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

पूर्वमासीत् । सा लिपिस्तु वैदिक लिपिवदेवासीदिति तर्कये । उर्दू-भाषाया: तल्लिपेश्च संरक्षणन्तु भारतीयविश्वविद्यालयै: कर्तव्यमेव । आदर्शलिपेस्तु एक एव प्रमुखोगुण: भ्रमराहित्यमेव । सति तस्मिन्गुणे, सौन्दर्य सारल्य ह्रस्वत्वमेकाघातपदलेखनादिगुणा: स्वर्णे सुगन्धिरूपा भवन्ति । किन्तु लिपे: प्रयोजनसिद्ध्यभावे अर्थात् भ्रमोत्पादकत्वे सौन्दर्यादिगुणा: वृथा, यथा सति वन्ध्यात्वे सौन्दर्यस्य न महत्वं तथैवात्रापि ज्ञेयम् । तस्मादादर्शलिपिस्तु संस्कृतवैदिकलिपिरेव नात्रसंशयावसर: । अरबी लिपिरपि न सर्वत्रैकाघाते पदानि लिखति तद्यथा دروش بغاوت اردو इत्यादिषु पुन: पुन: लेखनीमुत्थायोत्थाय लिख्यते । अरबी लिपेस्तु रोमनलिपि: श्रेष्ठतरा । श्रेष्ठतमा आदर्शरूपा च वैदिक लिपिरेव । केचित्तु वैदिकलिपेरपि रोमन लिपिं श्रेष्ठां वदन्ति, ते त्वविवेकिन: एव । एकाघाते सम्पूर्णपदलेखन सामर्थ्येऽपि त, च, श, णादि व्यञ्जनानामभावात् अशेषरूपेण स्वरनिर्वाह सामर्थ्याभावाच्च एकस्यैवानेकधोच्चारणाच्च भ्रमोत्पादकत्वात् कथमपि आदर्शलिपि: वक्तुं न शक्यते । किन्तु अरबी, फ़ारसी, उर्दू लिपे: श्रेष्ठतमा तु संस्कृत नागरी लिपिरेव । लेखन्या एकाघाते पद लेखन-गुणेन लेखने शीघ्रता संक्षिप्तता च द्वौ गुणौ लिपौ भवत: किन्तु भ्रमोत्पाद-कत्वान्नैकाघाते सम्पूर्णपदलेखनात्मकोगुण: साधु: । अत एव संस्कृतलिपे: सस्वरप्रतिव्यञ्जन प्रतिवर्ण-पार्थक्यमेवार्षपद्धति: साध्वीत्यलम् ।

१ तथा नहि किमपि व्यञ्जनं स्वरं विना उच्चारयितुं शक्यमिति स्वभावत: उच्चारितानि सस्वराणि व्यञ्जान्येव संस्कृतवर्णसमाम्नाये समाम्नीतानि प्राकृतिकत्वात् क ख ग घादय: । हलन्तत्वन्तु विशेष-चिह्नेनैवनिर्दिश्यते । प्रकृतितस्तु सर्वाणि व्यञ्नानि सस्वराणि । अत एव संस्कृताक्षर-समाम्नाये इयं स्वाभाविकी विशेषतेति । तथा च ह्स्वाकारस्य न किमपि चिह्नं संस्कृते प्रयुज्यते पदमध्येऽन्ते वा तथा च यद्यद् व्यंन्ज-नमिकारोकारादि स्वरचिह्नरहितं तत्तदकारान्तमेव मन्यते स्वभावत: । तेन स्वरचिह्नप्रदाने महल्लाघवं सम्पन्नमस्ति । तद्यथा कमलिनीनां प्रभूणामित्यायौ क, म, प्र, आदिषु स्वरचिह्न दानावश्यकता नास्ति । स्वत एवावगम्यते स्वभावत: । अरबी विद्वद्भिरपि क़ुरानेऽन्यत्र वा फ़तह: चिह्नं (आराब) वृथैव दीयते महामूर्खताप्रदर्शनमेवैतत् । यतो हि क़सरह जम्मह मद साकिनादि चिह्नरहितं शेषं सर्वमेव फतहोच्चारणं स्वत एव सिद्धमिति फ़तह: (आराबस्तु) सर्वत्र वृथैव । केवलमादावेव ह्रस्वाकारो लेख्य: । तदर्थञ्च स्वरलिपि: संस्कृत वदेव स्यान्न त्वलिफ़ (हम्ज़ा) प्रयोगेण द्योतयेदिति तु पूर्वमेव प्रपञ्चितं विस्तरेणेति । अरबीवर्णानां

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मूर्खतापूर्णोच्चारैणत्वादेव (बे ते सीन दाल) इत्याद्युच्चारणादेव फ़तहस्याप्यावश्यकता भूता। अत एव तदुच्चारणं त्यक्त्वा अ ब त स इतिवत् कर्तव्या।

२ महतश्चाश्चर्यस्य विषयोऽयं यदरबी विद्वान्सोऽरबीं भाषां यस्यां वर्णविकासः स्वरविकासोलिपि विकासश्च ह्य एव भूतः तथापि त्वंद्यापि विकाशमापद्यमानापि पुनः प्रभूतविकाशमपेक्षते तां समस्त भाषाभ्यः संस्कृताच्चश्रेष्ठतमां ब्रुवन्ति तथा चारबीमेव भाषां सुभाषां मन्यन्ते शेषाः अशेषरूपेण मूका मन्यन्ते इति द्वितीया महामूर्खता तेषां षण्डितंमन्यानामिति समुद्घोषयामि (समुद्धोपयामि)।

३ वर्तमान भारतीयसर्वकारस्तु मिर्ज़ा ग़ालिबस्मारकं निर्मातुं शक्नोति किन्तु यस्य महाकवेरयं ग़ालिबः चरणधूलिरपि वक्तुं न शक्यते तस्य भारतप्राणभूतस्य महाकवेः श्री कालिदासस्य स्मृतेरावश्यकतामेव नानुभवति। वस्तुतस्तु कालोऽयं कोलाहलस्यैवाऽस्ति। अतः संस्कृतनागरी विद्वद्भिः सावधानैः सचेष्टैश्च भवितव्यम्। अखिल विश्वस्मिन् अरबी फ़ारसी लिपिस्तु संस्कृतात् बहुहीना भ्रमोपादिका च। यथा पूर्वं वर्णितं तथापि अनेकेऽपि भारतीयाः नागरिक-मुसलमान भारते पुण्यभूमौ तीर्थरूपे ऋषिभूमौ सानन्दं निवसन्तोऽपि भारतीयां पूज्यां भाषां सर्वगुणयुक्तामादर्शरूपामपि संस्कृतं नागरीं वा नग्रहणन्ति अपि तु अरबीं फ़ारसीं उर्दूमेव श्रद्धया परम्परया न केवलं गृहणन्ति अपि तु प्रसारयन्ति च, अत एव ते हृदयेन कर्मणा विचारैश्च भारतीया नागरिकाः इति तु कथमपि वक्तुं न शक्यते। यथा च बंगलादेशीयाः अरबी फ़ारसी उर्दू भाषाः तल्लिपिञ्च विहाय बंगला भाषां सम्मानितवन्तः एव स्वदेश नागरिकाः वक्तुं शक्यन्ते नान्यथा। उर्दू भाषा तु भूतले काऽपि भाषा नास्ति यस्यै शृगालैरिव वृथालपन्ति। मिर्जागालिबादि उर्दू भाषां हिन्दीत्येव कथयतिस्म। तद्यथैकदा स्वमित्राय लिखितम्—"इस वक़्त फ़ारसी की नई ग़ज़लें नहीं लिखी हैं हाँ हिन्दी की कुछ नई ग़ज़लें हैं जो पेशेख़िदमत हैं।" इत्युद्धरणेन ज्ञायते यदेषा भाषा हिन्द्येव। उर्दूविद्वांसोऽपि हृदयेनेत्थमेवावगच्छन्ति किन्तु द्वेषादुर्दू-उर्दू इति प्रसारयन्ति।

वस्तुतस्तु अरबी फ़ारसी शब्द बाहुल्येन हिन्दीति भाषा अन्या भाषा वक्तुं न शक्यते अत एव संस्कृतलिपौ लिखिता एवापि उर्दू नामधेया हिन्दीति भारते अरबी लिपिः सर्वथैव हेयेत्यलम्। अत एव अरबी लिपि प्रसारकाः अभारतीया एवेति ध्रुवम्। अत एव तेषां वार्ता अनुरोधो वा भारत सर्वकारेण कथमपि न श्रोतव्यः। भारतेऽरबी लिपि प्रसारकाः राष्ट्रलिपि रूपेण प्रतिपादकाश्च भारतस्यानागरिकाश्चेति समुद्घोष्य

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भारतसर्वकारेण बन्दीगृहे आजीवनं पातयितव्याः । इत्थं कथने लेशमात्रमपि मे संकोचो भयो वा नास्ति ।

विशुद्ध संस्कृतभाषां साम्प्रतं पुस्तकस्थामेव दृष्ट्वा नैतदनुमेयं यत्प्राचीनापि संस्कृत वाक् साम्प्रतिकीमिवैव सङ्कुचितासीत् । यतो हि महाभाष्ये पतञ्जलिनोक्तं--"बृहस्पतिश्चप्रवक्ता इन्द्रश्चाध्येता दिव्यवर्ष-सहस्रमध्ययनकालो न चान्तं जगाम ।" इति शब्दमहार्णवप्रशंसां दृष्टवानु-मीयतेऽतीव विशदासीत्पुरा संस्कृत वाक् । मध्यकालिके, संग्रहनामके व्याकरणग्रन्थेऽपि लक्षश्लोका आसन्निति च प्रमाणीकरोति संस्कृतभाषा-विशदतामगाधताञ्च । पाणिनीयशब्दानुशासनं न प्रतिनिधिः सम्पूर्ण-संस्कृतगिरः । असंख्या हि शब्दाः पूर्वपाणिनीया उपलभ्यन्ते पुराणादिषु । उक्तञ्च--

"यान्युज्जहार माहेन्द्राद् व्यासो व्याकरणार्णवात् ।
तानि किं शब्द - रत्नानि सन्ति पाणिनिगोष्पदे ?"

वस्तुतस्तु पाणिनीयादिमध्यकालिकव्याकरणानि गोष्पदसंदृशान्येव यतो हि संस्कृतभाषाह्रास समये संरक्षणायैव व्याकरणान्येतानि-कृतान्या-चार्यैः । प्रामाणिकमहाभाष्यानुसार मनुमीयते यत्प्रतिपदशब्दानुशासने वृसस्पतेरध्ययने इन्देऽशक्ते जाते माहेन्द्रव्याकरणरचना वृहस्पतिना कृता । तस्यैव संग्रहरूपेणकृतं लक्षश्लोकिव्याकरणं संग्रहनामकं काव्यव्याकरणं यस्योद्धरणं पातञ्जलमहाभाष्येऽपि दत्तं यत्तत्र । तद्यथोक्तम्—"संग्रहे एतत्परीक्षितम्" कतिपय श्लोका अपि दृष्टिगोचरा भवन्ति तेन ज्ञायतेऽतीव विशदमगाधञ्चासीन्माहेन्द्रव्याकरणम् । पाणिनीयादिव्याकरणानां धातुसंग्रहोऽपि स्वलप एव । यतो हि मूलस्वतन्त्रधातूनां सर्वथाऽभावोऽपि क्वचित् क्वचिल्लक्ष्यते । तद्यथा—अवगच्छति इत्यस्य मूलस्वतन्त्र धातुः बुध् इति । अवगच्छति इति तु साहित्यिक धातुः उपसर्गयोगेन कल्पितः । वस्तुतस्तु बुध्यति इत्येव मौलिकं रूपम् । तथैव जल पिवति इत्यस्य जलमादत्ते इत्याङ् उपसर्गयोगेन दा धातोःप्रयोगः साहित्यिकः एव । तथैव प्रत्येक क्रियावाचकाः स्वतन्त्रधातवः आसन्निति मे विश्वासः । किन्तु कालवशात् तेऽप्रयुज्यमानाः सन्तो लुप्ता एव जाताः । तद्यथा-याति गच्छतीति विप्रकृष्टसंयोगे मूलस्वतन्त्रधातू वर्तेते किन्तु सन्निकृष्टसंयोगे मूलस्वततंत्रधातोः सर्वथा लोपो जातः । केवलम् आङ् उपसर्गयोगेन आयाति, आगच्छतीति साहित्यिक प्रयोगा एवावशिष्ठाः । आगमने मूल धातुः नोपलभ्यते । तथैव संहार विहार प्रहरादि विषयेऽपि ज्ञेयम्, हन्ति इति मूल धातुः संहरतीति साहित्यिकप्रयोगः । तथैव अटति ताडयति मूल धातू, प्रेषयति आमन्त्रयति इत्युभावपि धातू साहित्यिकौ, उभयोरर्थयोः

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

मूलधातुः सर्वथा लुप्तः । न चैतस्याभिप्रायो यदेषां पूर्वमप्यभाव आसीत् । मूलधातुलोपप्रमाणे ज्वलन्तोदाहरणं पाणिनीयकालेऽपि दृश्यते । पाणिनिसमयेऽपि अस् धातोः लट्-लोट् लङ्-लिङ्क्षु लकारेष्वेव रूपाणि लोकेऽवशिष्टानि । लिट्, लुट, लृट, आशीर्लिङ्-लुङ् लृङ्क्षु लकारेषु रूपाणि सर्वथा लुप्तान्येवेति कृत्वा एतेषु समानार्थकत्वात्-भूधातोः रूपाणि समाविष्टानि । अतएव अस्ति, बभूव, भविता भविष्यति, अस्तु, आसीत्, स्यात्, भूयात्, अभूत्, अभविष्यत् इति रूपाणि पाणिनीय-व्याकरणे प्रदर्शितानि । भू धातुस्तु सर्वलकारे प्रसिद्ध-आसीत् अस्ति च । तथैव हन् धातोराशिलिङि लुङि रूपाणि लुप्तानि, समानार्थकत्वात् वध धातुरूपाणिसमाविष्टानि । तथा च वध धातुः वधार्थे सर्वथाऽप्रयुक्तो जातः । तथैव अद्धातो-रपि लुङि रूपाणि सर्वथा लुप्तानि जातानि । घस् धातुः भक्षणेऽवश्यमेवासीत् पुरा अन्यथा घासः इति पदव्याकृतिः सम्भवा न स्यात् । किन्तु घस् धातोरपि रूपाणि लुप्तानि, केवल लिट लकारे उभयोरपि रूपाणि दृश्यन्ते । अतएव वैकल्पिक विधानेन—आद, आदतुः आदुः तथा च जघास जक्षतुः जक्षुरिति द्विधानि रूपाणि स्वीकृतानि पाणिनिना । तत्र अद् धातोः घस्लादेशे समन्वयः कृतः पाणिनिना । एतेन प्रमाणीभूतं यत्पूर्वं नैषां रूपाणां, धातूनाञ्चाभावः आसीत् अपितु लुप्ताः सञ्जातास्ते क्वचित् क्वचिदुपलब्धाः संस्कृत-वाक्क्षयस्य कथामुद्गिरन्तः संस्कृत-वाचोऽतिप्राचीनत्व विशदत्वञ्चप्रमाणयन्ति । अरबी भाषाधातुपाठ-विवृतिस्तु नवीनतामेव प्रमाणयति न प्राचीनतमतां न वा सर्वोत्कृष्टतामिति । साम्प्रतिक ग्रामीणलोक-भाषायामपि संस्कृतस्यैवापभ्रंशत्वात् संस्कृतप्रभावो दरीदृश्यते । मूलसंस्कृते तल्लोपात् तत्रापभ्रंशलोपोऽपि स्वाभाविकः एव । अत एव साम्प्रतिक ग्रामीणभाषायामापि आगच्छ, आयाहि एतयोः आओ, आजाओ इति सोपसर्गाः साहित्यिका एवापभ्रंशा दृश्यन्ते । यतो हि उत्तरकालिक हीन क्षीण संकुचितसंस्कृतस्यैवापभ्रंशाः इयं साम्प्रतिकी लोकभाषाऽस्ति । बंगभाषायामद्यापि संस्कृतस्य सप्तमी विभक्तिः स्वरूपेणैव विद्यते । तद्यथा—मन्दिरे, भोजनालये, कूपे, हाटे, लाहोरे, जैसोरे, बालारे, इत्यादि रूपाणि प्रयुज्यन्ते । तथैव दक्षिणभारतीय-भाषायामपि अद्यापि मकारान्तमेव पदं सामान्येन प्रयुज्यते । तद्यथा, रामेश्वरम्, विजयानगरम्, चिदम्बरम् विशाखापत्तनम् इत्यादिः । तदेतेन प्रमाणीभवति यत् संस्कृतमेव पुरा लोकभाषाऽसीत् । तदपभ्रंश एव प्राकृतं तथा च पाल्यपि साम्प्रतिकी-ग्रामीण-लोकभाषापि, तदलोक्यतां च तावत् किञ्चिदग्रे ।

२४ इदानीं ग्रन्थस्यान्ते सम्प्रति विद्यमानाः ग्रामीणभाषा (लोकभाषा)

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

शब्दाः संस्कृतशब्दैः सह निर्दिश्यन्ते यैर्ज्ञायते तथा च प्रमाणीभवति यत्पुरा संस्कृतमेव नैत्यिकी लोकभाषा आसीत्। न तु पुस्तकस्थैवासीत्। संस्कृतनाम्ना केषाञ्चिन्मतं यल्लोकभाषायाः संस्कृतं रूपं संस्कृतमुच्यते न चेदं कदापि लोकभाषासीत्। नैतत्साधु मतम्। भारतीयमानवजीवनस्य प्रत्येकक्षेत्रेऽद्यत्वेऽपि संस्कृतचरणाः दृढ़ा वर्तन्ते। ते द्रष्टव्या अग्रे संग्रहीत-संस्कृतग्रामीणकतिपयशब्दतालिकायाम्। तथा च प्राकृतात्संस्कृतमिति विचारोऽपि न युक्तः। यतो हि संस्कृतभाषाया अपभ्रंशरूपे जाते एव प्राकृतंरूपं जातम्। उदाहरणार्थं किं तावद्देवि। इत्यस्य किं दावद्देवि (किं दाव देइ) इति प्राकृता तथा च रमादेवी महादेवी इत्यस्य च रमदेइ महदेई इति चाद्यत्वेपि लोके संस्कृतस्यैवापभ्रंशरूपं देइ इति तथा च धर्म कर्म इत्यस्य धम्म कम्म चापभ्रंशौ प्राकृते, क्वचित्तु धरम करम च। तदद्यत्वेऽपि। अतएवापभ्रंशसंस्कृतमेव प्राकृतं न तु प्राकृतस्य, व्याकरणैः संस्कृतं रूपं पुस्तकमात्रवर्ति संस्कृतमित्यलम्।

शुद्धिपत्रम्

पृष्ठं	सूत्रं	शुद्धशब्दाः
१०	१६	इज़रास
१४	१३	अयनाब
२१	२	ज़ो
२३	२	शिफ़्तैन
२४	२४, २६	शिफ़्तैन
४८		स्वभावान्स्पष्टीकर्तुं

॥ इति ॥

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

अथसंस्कृत, अपभ्रंशग्रामीणशब्दाः

सम्बन्ध वाचकाः शब्दाः

संस्कृत शब्दाः	ग्रामीण शब्दाः	संस्कृत शब्दाः	ग्रामीण शब्दाः
पिता, माता	पिता, माता	पितृव्यानी	पितियानी
मातापितरौ	मात, पिता	पौत्रः, पौत्री	पोता, पोती
पुत्रः, भर्ता	पूत, भतार	नप्ता, नप्त्री	नाती, नातिन
पुत्रभर्तारौ	पूत-भतार	मातुलः	मामा
भ्राता, भ्रातृजा	भाई, भतीजा	मातुलानी	मामी, (माई)
भ्रातृजाया, ननान्दा	भौजाई, ननद	मित्रम्, हिती	मित्र, हेती
श्वसुरः, श्वश्रूः,	ससुर, सासु	बापः	बाप (बापू)
श्यालकः, पितृव्यः	साला, पित्ते	सम्बन्धी,सम्बन्धिनी	समधी, समधिन

इज्या (माता) हिमालये इजा (पूज्या) यजदेवपूजापिण्ड

आयुवाचकाः शब्दाः

बालकः, युवानः	बालक, जवान	अर्धवयस्क	अधबैसू
वृद्धः, वृद्धा	विर्धं, विर्धा	वृद्धावस्था	विर्धावस्था

अंगवाचकाः शब्दाः

अङ्गम्,शरीरं,तनुः	अंग, सरीर, तन	अक्षि,कर्णः,नासिका	आँख, कान, नाक
मुण्डं, मस्तकं	मूंड़, माथ	हस्तः, पादः	हाथ, पैर
लोमं, नखः	लोम, नख	पृष्ठं, अङ्गुलिः	पीठ, अंगुरी
दन्तः, जिह्वा	दाँत, जीभ	लिङ्गः, योनिः	लिंग, जोनि
तालु, कण्ठः, गलं	तारु, कण्ठ, गर	जघनम् अञ्चलम्	जांघ, आँचर

पशुवाचकाः शब्दाः

गौः, वत्सः, वर्दः	गऊ, बछड़ा, वर्ध	व्याघ्रः, व्याघ्री	बाघ, बाघिन
महिष, महिषी	भैंसा, भैंसी	उष्ट्रः, उष्ट्रिणी	ऊँठ, ऊंटनी
हरिणः, हरिणी	हिरन, हिरनी	ऋक्षः,रिच्छः,भल्लूकः	रीछ भालू
	हन्ना, हन्नी	केसरी, शृगालः	केहरि, सियार
मेषः, मेषी	भेड़ा, भेड़ी	विडालः, विडाली	बिलार, बिलारी
गर्दभः, गर्दभी	गदहा, गदही	उद्विडालः	उद्बिलाव
सिंहः, सिंहिनी	सिंघ, सिंघनी	कुक्कुरः, शूकरः	कूकुर, सूअर
हस्ती, हस्तिनी	हाथी, हथिनी	घोटकः, मन्दराजिः	घोड़ा, मन्दराजी

पक्षिवाचकाः शब्दाः

पक्षी, शुकः, मैनका	पंछी, सुग्गा, मैना	चक्रवाकः,चक्रवाकी	चकवा, चकई
काकः, कपोतः	कौवा, कबूतर	मयूरः, मयूरी	मोर, मोरनी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

सारसः, बकः	सारस, बगुला	तित्तरिः, चटकी	तीतर, फुदकी
कोकिलः, कोकिला	कोयल, कोइली	हरिलः, हरिद्रः	हरिल, हरदुआ

कीटवाचकाः शब्दाः

कीटः	कीरा, किरवा	यूका, लिक्षा	जुवां, लीख
सर्पः, वृश्चिकः	साँप, विच्छू	मूषकः, मण्डूकः	मूस, मेढुका
नागः नागिनी	नाग, नागिन	नकुलः, खट्वामलः	नवला, खटमल
गोधः, भृंगः	गोह, भौरा		

वृक्षवाचकाः शब्दाः

वृक्षः	बिर्छ	शिरीषः	सिरसा
अशोकः, कपित्थ	असोक, कैथा	जम्बुः	जामुन
आम्रः, निम्बः	आम, नीम	अमलिका	इमली
प्लक्षः, पिप्पलः	पाकड़, पीपर	मौलश्री	मौलसिरी
वटः, गूल्लरः	बरगद, गूलर	देवदारुः	देवदार
बर्बुरः, सिसिपः	बब्बुर,, सिसई	शालः	साखू

पुष्पवाचकाः शब्दाः

कमलम्, मालती	कमल, मालती	कंटकारी	कटैया
यूथिका, चम्पा	जूही,चम्पा (चमेली)	रात्रिराज्ञी	रातरानी

पाकसामग्री-सम्बन्धि-शब्दाः

हरिद्रा, मरिचः	हरदी, मिरचा	पिप्पलीः	पीपर
एला, जीरकम्	इलायची, जीरा	शुण्ठः	सोंठ
धान्यकम्, हिंगु	धनिया, हींग	आमलकम्	आँवला
कृष्णमरिचः	काली मिरच	हरीतकी	हर्रा
सुम्फः, लवङ्गः	सौंफ, लौंग	विभीतकः	बहेरा
लसुनम्, प्लांडुः	लहसुन, प्याज	मदनफलम्	मैनफल
आर्दकम्	अदरक, (आदी)	धत्तूरः, भंगः	धतूरा, भाँग

भोजन-सम्बन्धि-शब्दाः

भोजनम्ः आहारः	भोजन, अहार	दुग्धं, दधि	दूध, दही
भक्षणम्	भच्छन	घृतं, नवनीतं	घी, नैनू (नौनी)
भिक्षा, भिक्षुकः	भीख, भिखारी	भक्तं, द्विदलं	भात, दाल
	(भिच्छा,भिच्छुक)	पिष्टीः, शाक	पिसान, साग
खादनम्, पानम्	खान, पान	अपूपः, शक्तूः	पुआ, सत्तू
पानीयं, जलम्	पानी, जल	मण्डम्, काञ्जीकं	माँड़, कांजी

वेशसम्बन्धि-शब्दाः

उपनह	पनही	कम्बल	कम्मर
अङ्गरक्षकः	अंगरखा	अञ्चलः	अँचला

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धौती	धोती	शाटी	साड़ी
अङ्प्रोञ्छकः	अँगोछा	अङ्गिका	अँगिया

कृषिसम्बन्धि-शब्दाः

कृषिः	किरसी	नाहनम्	नहनी
कृषाणि	किसानी	रज्जुः	रस्सी (लेजुर)
क्षेत्रम्, क्षेपः	खेत, खेप	उलूखलम्	बखरी
हलं, कुदारकः	हर, कुदार	दण्डं, लगुडं	डण्डा, लाठी
स्फालकः	फरुहा (फार)	धारिणी, धानी	डहरी
पञ्चाङ्गुलम्	पँचागुर	पिधानम्	पिहान

अन्नवाचक-शब्दाः

षष्टिः	साठी	आढकी	अर्हरी
गोधूमः	गोहूँ	कोद्रवः, धान्यम्	कोदव, धान
चणकः	चना	मुद्गः, माषः	मूँग, मास, माख
मसूरम्	मसूर	तिलम्, यवः	तिल, जौं

रंगसम्बन्धि-शब्दाः

रङ्गः, वर्णः	रंग, वरन	पीतः, कालः	पीला, काला
ललितः, रक्तः	लाल, रकत	उज्ज्वलः	उज्वल
नीलः, हरितः	नीला, हरा	चित्रकः, कपित्थः	चितकबरा, कत्थई

संस्कारसम्बन्धी-शब्दः

प्रसवः, प्रसूतः	प्रसव, परसूत	गमनम्	गवन, गौन
मुण्डनं, विवाह	मूँडन, व्याह	मरणम, मृत्युः	मरन, मित्यु
अन्नप्रासनम्	अन्नपरासन	क्रिया, कर्म	किरिया, करम

आत्मादि शब्दाः

आत्मा, जीवः	आतिमा, जिव	नदी, पर्वतः	नदी, परबत
परमात्मा	परमातिमा	कृपा, दया	किरपा, दाया
परमेश्वर	परमेसुर	पुण्यं, पापः	पुन्य, पाप
भगवान्	भगवान	दानम्, तपः	दान, तप
देवी, देवता	देवी, देउता	तपस्या	तपस्या
भूतः, प्रेतः	भूत, परेत	मनः, बुद्धिः	मन, बुद्धि
राक्षसः	राच्छस	धर्मः, कर्म	धरम, करम
राजा, महाराजः	राजा, महाराजा	साधुः, सन्तः	साधु, सन्त
चाण्डालः	चण्डाल	नीचः, उच्चः	नीच, ऊँच
मन्त्री, स्वामी	मन्त्री, सामी	भक्तिः, भक्तः	भक्ती, भगत
योद्धा	जोधा		

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

भूगोलसम्बन्धी-शब्दाः

भूगोलम्,भूः, भूमिः	भूगोल, भुइँ, भूमि	वृहस्पतिः, शुक्रः	बीफै, सूक
ग्रहः, नक्षत्रम्	गिरह, नखत	शनैश्चर	सनीचर
सूर्यः, चन्द्रः	सूर्य, चाँद	आकाशः	आकास
तारः, दिशः	तारा, दिसा	पृथिवी पृथ्वी	पृथिमी
मङ्गलः, बुधः	मंगल, बुध	ध्रुवम्, सप्तर्षिः	ध्रुव, सप्तरिषि

दिनसम्बन्धी-शब्दाः

सोमवारः	समबार	इतिवारः	इतवार
मंगलवारः	मंगरवार	अन्धकारपक्षः	अँधेर पाख
बुधवारः	बुधवार	उज्ज्वलपक्षः	उजेर पाख
वृहस्पतिवारः	बीफैवार	वर्षः, युगः	बरस, जुग
शुक्रवारः,शनिवारः	सूकवार, सनीचर	मासः	मास

माससम्बन्धी-शब्दाः

चैत्रः, वैशाखः	चैत, वैसाख	माघः, फाल्गुन	माघ, फागुन
ज्येष्ठः, आषाढ़ः	जेठ, असाढ़	चन्द्रग्रहणम्	चन्द्रगिरहन
श्रावणम्, भाद्रम्	सावन, भादौं	सूर्यग्रहणम्	सूर्यगिरहन
कुमार, कार्तिकः	क्वार, कातिक	सप्तद्वीप	सात दीप
अग्रहणं, पौषः	अगहन, पूष	सप्तसिन्धु	सात सिन्ध

देश सम्बन्धी शब्दाः

जम्मू, कश्मीरः	जम्बू, कश्मीर	राजपुत्रः,	राजपूताना,
श्रीनगरं, देहली	श्रीनगर, देहली	महाराष्ट्र,मालवः	महाराष्ट्र, मालव
अंग, वंगः	आसाम, बंगाल	केरलः, लंका	केरल, लंका
ब्रह्मा, उत्कल	वर्मा, उड़ीसा	विदर्भः, हिमालयः	विदर्भ, हिमालय
विहार	बिहार	विन्ध्याचल,कैलासः	बिन्ध्याचल,कैलास
सिन्धुः, गुर्जरः	सिन्ध, गुजरात	मानसरोवरः	मानसरोवर

नदी-सम्बन्धी-शब्दाः

ब्रह्मपुत्रः	ब्रह्मपुत्र	नर्भदा, ताप्ती	नर्बदा, ताप्ती
गंगा, यमुना, सिंधु	गंगा, जमुना, सिंधु	कृष्णा, गोदावरी	कृष्णा, गोदावरी
सरयूः, वेत्रवती	सरजू, बेतवा	महानदी,पयस्विनी	महानदी, पैसुनी
दशार्णः, सुखनयी	धसान, सुखनेई		

पात्र-सम्बन्धी-शब्दाः

स्थाली	थाली, थारी	करक्षेपकः	करछुल
स्थालम्	थारा	चमसा	चमचा
संदंशम्	सड़सी	गङ्गासागरम्	गंगासागर
दशपणं	दसपना	दोहिनी	दोहनी

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

कतिपयनाना शब्दाः

सङ्गः सङ्गी	संग संगी	प्रौढ़ दुर्बलः	पोढ़ दुर्बल
सार्थिः संघी	साथी, संघी	गोधूलि गोदोहः	गोधूरा
उत्तमः मध्यमः	उत्तम मध्यम	द्वन्द्वः दण्डं	दुन्दि दण्डा
उच्चः नीचः	ऊंच, नीच	स्वाङ्गं रचते	स्वांग रचत है
अच्छः पक्वः,खट्वा	अच्छा पका, खटिया खाट	अलग्नः, फेनः	अलग, फेना

जातिशब्दाः

ब्राह्मणः	ब्रह्मण बाम्हन	लौहकारः	लुहार
क्षत्रियः	क्षत्री	स्वर्णकारः	सोनार
वैश्यः शूद्रः	वैश्य सूद	विश्वकर्मा	बढ़ई
कर्मकारः नापितः	कहार नाई	चर्मकारः	चमार
कुम्भकारः	कुम्हार	चाण्डालः	चण्डाल

गृहसम्बन्धी-शब्दाः

गृहम् गृहिणी	घर घरनी	अग्रभागः	अगवारा
द्वारं आँगणम्	द्वार आंगन	वाह्यं आभ्यन्तरं	बाहर भीतर
कोष्ठः पृष्ठभागं	कोठरी कोठा पिछवाड़ा	अग्रे पृष्ठे	आगे पीछे

दिशा एवं स्थान शब्दाः

पूर्वा पश्चिमा	पूरुब पच्छिम	कुरुक्षेत्र	कुरुक्षेत्र
उत्तरा दक्षिणा	उत्तर दक्खिन	अयोध्या,	अजोध्या,
कोणः	कोना	वाराणसी, काशी	वनारस, कासी
आकाशः	आकास	प्रयागराज	परागराज
पातालम्	पाताल	दण्डकारण्यः	दण्डकारण्य
इतर उतर	इधर उधर	मुन्दरवनम्	मुन्दरबन

पर्व (त्यौहार)-वाचक-शब्दाः

श्रावणी	सतीनव	वसन्तः	बसन्त
दशमी	दसहरा	ग्रीष्मः, वर्षा, शीतः	गरमी, वर्खा, सीत
दीपावली, होलिका	दीवाली, होली	हेमन्तः	हेंवत

तिथिवाचक एवं अन्यशब्दाः

प्रतिपदा, द्वितीया	परेवा, द्वीज	त्रयोदशी, चतुर्दशी	तेरस, चौदस
तृतीया, चतुर्थी	तीज, चौथ	अमावस्या	अमावस
पञ्चमी, षष्ठी	पंचमी, छठ	पूर्णिमासी	पूरनमासी
सप्तमी,नवमी,दशमी	सत्तमी नौमी दसमी	पातालः, नरकः	पत्ताल, नरक
एकादशी, द्वादशी	एकादसी, दुवादसी	स्वर्गः मोक्षः,मुक्तिः	सरग,मोच्छ,मुक्ती

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

धातुवाचक-शब्दाः

धातु रसः	धात रस	मांसः	मांस, मास
रक्तः	रक्त, रकत	वीर्यं, बीजं	बीज

अन्यविविधशब्दाः

राशिः	रासि	फलम्	फल
ग्रहः	ग्रह, गरह, गिरह	फुल्लं	फूल
ग्रहणः	गिरहन	नध	नाह
चन्द्रमा	चंदरमा	नद्ध, नाथः	नाधा, नाथ
चेतः	चेत	पारसीकः	फारसी
मनः	मन	पारसः	फारस
बुद्धिः	बुद्धी	घर्मः	घाम
चित्तं, पत्रम्	चित्त, पत्ता	देहली	देहरी

संख्यावाचक-शब्दाः

एकः द्वि	एक, दुइ	पंचदश विंशतिः	पन्दरह बीस
त्रिः चत्वरि	तीन, चार	त्रिशत् चत्वारिंशत्	तीस चालिस
पंच षट् सप्त अष्ट	पांच, छः सात, आठ	पंचाशत्	पचास
नव दश चतुर्दश	नौ, दस चौदह		
षष्टिः, सप्ततिः	साठ, सत्तर	कोटिः, अर्बः	कोटि, अरब
अशीतिः नवतिः	अस्सी नब्बे	खर्बः, पद्म	खरब, पदुम
शतम्, सहस्रम्	सौ, सहस्र	शंखः	संख
लक्षम्	लाख	महाशंखः	महासंख

अन्यप्रकीर्णशब्दाः

गुणागारः,गुणाकरः	गुनागर	गृहिणी, उपकारः	घरनी, उपकार
ग्राममुख्यः, रसिकः	मुखिया, रसिया	वनं जङ्गलः	बन जंगल
प्रलयः, एकार्णवः	परलय एकन्नौ	रात्रिः दिनं दिवसः	रात दिन दिवस
लवणः व्याजं धनम्	लोन बियाज धन	दोषः, दोषी, पापम्	दोख, दोखी, पाप
अन्नकर्तृका, लवनं	अन्नकतरनी, लौनी	पुण्यात्मा, पुण्यम्	पुन्यात्मा, पुन्य
ऋणं ऋणी	रिन रिनी	शृंगारः, महन्तः	सिंगार, महन्त
वंश, वंशः, गृहम्	बंस, बांस, घर		

अव्यय शब्दाः

वाव, हन्तहा हे	बाव, हाय हे	अरे रे अहो अये	अरे रे हो ए

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

क्रियावाचक-शब्दाः

दामयति	दाँवत है	धरति, करति	धरत है, करत है
सज्जते	सजत है	मूत्रयति, हदति	मूतत है, हगत है
क्षिपति	छीपता है, छेपता है	पर्दते	पादत है
उपजायते,उपजाता	उपजत है, उपजी	दमयति	दांवत है
खादति, पिवति	खात है, पियत है	धावति वर्षति	धावत है, बरसत है
खेलति, कूर्दते	खेलत है, कूदत है	चरति याति	चरत है, जात है
चलति, गतः भूतः	चलत है, गवा भवा	बध्नाति	बांधत है
अलग्नः	अलग	ग्रन्थयति	गठियावत है
पचति, अवलोक्यते	पकत है, लौंकत है	रमते	रमत है
ददाति, हंसति	देत है, हंसत है	सङ्गतौ	संगात है (मैथुन करते हैं)
मारयति, स्फारयति	मारत है, फारत है		
दर्शयति, भ्रमति	दर्सावत है, भरमत है	हन्ति	हनत है
युद्धयति, जयति	जूझत है, जीतत है	आयातः आगतः गतः	आया आगया गया
सरति, भरति	सरकत है, भरत है	लषति	लसत है (लस्)

संस्कृत	देहाती	संस्कृत	देहाती
सः सो, यः यो	सो, जो	परदेशः परदेशी	परदेस परदेसी
कः को,इयं इदं अयम्	को, ई	शुद्धः बुद्धिः	सुद्ध बुद्धि
असौ त्वम्	ऊ तुम	ज्ञानं योगः तपः	ग्यान जोग तप
अहम् अद्य	हम आज	जलम् अग्निः	जल, आगि
तदा यदा कदा	तब जब कब	वातः वाताशः	वात, वतास
सायम् प्रातः	सांझ प्रात	ग्रामः	गांव

केचनन्येऽपि शब्दाः

पालयति, पालितः	पालत है, पालतू	कृष्णः, वृथा	किशन, विरथा
मार्गः, पन्था	मारग, पन्थ	प्रियतम, चार्वाक्	पीतम, चर्वाक
सन्तः, साधुः	सन्त, साधू	चार्वाकी, दन्तुरः	चरवाकी, दयन्तुरः
वप्ता, वापः, वाप	वप्पा, बाप, बापू	राक्षसः पिशाचः	राच्छस पिसाच
काष्ठः, लौहः	काठ, लोहा	पण्डा, पुजारी	पंडा, पुजारी
ताम्रः, यशदः	ताम्बा, जस्ता	यत्नं यतनं	जत्न, जतन
सुवर्णः, हीरकः	सुबरन, हीरा	स्थान	थान, थाना
रज्जुः, रत्नम्	रसरी, रतन रत्न	प्रस्थानं, परस्थानं	परस्थान, परथान
कांचनम्, कांचः	कञ्चन, काँच	निर्वाहः अवश्यम्	निबाह अवस्य
पञ्च् गणः	पाँच गन	अक्षमः, महिमा	अखम, महिमा
मनः चित्तम्	मन चित्त	दूरम्	दूर
दशा, कोटरः	दसा, खोढ़रा	माहात्म्यम्	महातम, महात्म
पलालः	पुवाल हिमालयेतु पलल		

इति श्रीजगदीशाचार्यकृतमरबीशिक्षाशास्त्रं समाप्तम् ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

विज्ञापनम्

		सजिल्द	अजिल्द
१	शिक्षाशास्त्रम्—परमान्वेषणपूर्णम्	५)	४)
२	परमाणुदर्शनम्— ,, ,,	६)	५)
३	षट्कर्मशास्त्रम्—आयुर्वेदाचार्य परीक्षोपयोगि-चिकित्साशास्त्रम्	९)	८)
४	क. अरबीशिक्षाशास्त्रम्—परमन्वेषणपूर्णम्	६)	५)
	ख. अरबीशिक्षाशास्त्रम्—(हिन्दी-उर्दू) भावार्थोपेतम्	९)	७)
	ग. अरबीशिक्षाशास्त्र (समीक्षा) तथा भारतराष्ट्रभाषा राष्ट्रलिपि	३)	२)
५	परमाणुदर्शन (हिन्दी टीका मूलसूत्र-युता)	६)	५)
६	पाथेयम्—गीतिकाव्यम्	६)	५)
७	चर्मच्छेदसंस्कारः (ख़तना)	३)	२)
८	परमयोगदर्शन हिन्दी काव्य (सत्प्रेमयोग)	१)	५० पै.
९	सन्मार्गदर्शनम्—सूत्र, भाष्य, हिन्दीटीकायुतम्	४)	३)
१०	(विश्वदर्शनम्) ज्योतिर्मन्थनम्	४)	३)
११	सिद्धान्तरत्नदर्शनमं	३)	२)

प्राप्तिस्थान—

१ बालार्क वेदमन्दिर, महसी, बहराइच, बालार्क वेद मन्दिर शाखा बहराइच ।

२ रामलाल कपूर ट्रस्ट, सोनीपत, अमृतसर, दिल्ली, वाराणसी ।

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

CC-0. In Public Domain. Digitization by eGangotri

परिभाषा

१—संस्कृतम्—ऋषीणां हृदयेषु परमेश्वर प्रकाशित वैदिकभाषा [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] संस्कृतमित्याहुः न तु [illegible] [illegible] [illegible] । सुरगिरापि प्राचीनं नाम ।

२—प्राकृतम्—पूर्वं विद्यमान [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] प्राकृतमिति, न तु [illegible] [illegible] [illegible] प्रकृत्वात्

३—अरबी— [illegible]

"जगदीश:"

मुद्रक:— वाणी प्रेस, ४०५/१२८ चौपटियाँ रोड, लखनऊ-३